ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

वैशाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५४५
वर्ष ६ अंक ९ मई 2013

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए., एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

गुरमुखि विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ॥
नामि रते सदा सुखु पावै साचि रहै लिव लाई ॥१॥
हरि हरि नामु जपहु जन भाई ॥
गुर प्रसादि मनु असथिरु होवै अनदिनु हरि रसि रहिआ अघाई ॥१॥रहाउ॥
अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग का लाहा भाई ॥
सदा जन निरमल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई ॥२॥
सुखु सीगारु सतिगुरू दिखाइआ नामि वडी वडिआई ॥
अखुट भंडार भरे कदे तोटि न आवै सदा हरि सेवहु भाई ॥३॥
आपे करता जिस नो देवै तिसु वसै मनि आई ॥
नानक नामु धिआइ सदा तू सतिगुरि दीआ दिखाई ॥४॥ *(पन्ना १३३२)*

राग प्रभाती में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि कोई विरला मनुष्य ही गुरु को सम्मुख रखकर गुरु-शबद द्वारा यह समझ लेता है कि परमात्मा सब जगह व्यापक है। वो प्रभु-नाम-सिमरन में मगन रहकर अपनी सुरति को प्रभु-चरणों में जोड़कर आत्मिक आनंद प्राप्त करता है। कहने से तात्पर्य कि सच्चे गुरु द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त कर प्रभु की निकटता पाने में जो सक्षम हो सकता है, वही गुरमुख है। गुरु जी कहते हैं कि हे भाई! हरि-नाम का जाप किया करो। हरि-नाम के जाप से ही गुरु की कृपा होती है। गुरु की कृपा से मन स्थिर हो जाया करता है और हर समय हरि-नाम के स्वाद से भरा रहता है। हे भाई! प्रभु की भक्ति रात-दिन किया करो। यही इस मानव-जन्म का लाभ है। प्रभु-भक्ति से, प्रभु-नाम-सिमरन से मनुष्य का जीवन पवित्र हो जाता है। प्रभु के सच्चे नाम में जुड़ने से, प्रभु-नाम की कमाई से मन निर्मल रहता है, उसे विकारों की मैल छू नहीं सकती।

श्री गुरु अमरदास जी का आगे फरमान है कि मानव जीवन के लिए प्रभु-नाम की कमाई, आत्मिक आनंद एक आभूषण है; हरि-नाम-सिमरन में वास्तविक सम्मान विद्यमान है। प्रभु-भक्ति करते रहने से आत्मिक आनंद के खजाने सदा भरे रहते हैं, कभी कोई कमी नहीं आती, इसलिए सदा प्रभु-नाम-सिमरन करते रहो। शबद की अंतिम पंक्तियों में गुरु जी का फरमान है कि प्रभु-भक्ति का अमूल्य तोहफा, प्रभु जिस पर कृपा करें, उसे ही मिलता है; उसी के मन में प्रभु खुद आ निवास करते हैं। सच्चे गुरु की कृपा से आध्यात्मिक मार्ग की प्राप्ति होती है, इसलिए सदा प्रभु का नाम-सिमरन करते रहना चाहिए।

सर्व-हिंद सुंदर दसतार मुकाबला

सिक्ख कौम दुनिया की बहादुर कौमों में से एक है। सिक्ख कौम का अपना विलक्षण सभ्याचार एवं पहरावा है। सिक्ख पहरावे का महत्त्वपूर्ण अंग है सिक्खों की विलक्षण दसतार और दसतार का सत्कार। दशम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों के लिए पांच ककार नियत किए हैं जो प्रत्येक सिक्ख ने सारी उम्र अपने शरीर से अलग नहीं करने होते। सिक्खों के इन पांच ककारों में से केशों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सिक्खों को जो काम करने से वर्जित किया गया है उसको 'कुरहित' का नाम दिया गया है। सिक्खों द्वारा नियत की गयी चार कुरहितों में से एक केशों का अपमान करना है। केशों का अपमान करने वाले सिक्ख को सत्कारित पांच प्यारों के सामने पेश होकर अपनी भूल के लिए क्षमा-याचना करनी पड़ती है। फिर वो खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त करके पांच ककारों का धारणी होकर ही दोबारा सिक्ख कौम में शामिल हो सकता है। केशों की संभाल के लिए दसतार सिक्खों के लिए अति आवश्यक है जो कि इनकी आज़ाद हस्ती की भी प्रतीक है। लाखों की भीड़ में से एक दसतारधारी सिक्ख अलग ही पहचाना जा सकता है।

किसी भी व्यक्ति की शख़्सियत का अंदाज़ा लगाने के लिए समझदार लोगों ने रफ़तार, दसतार व गुफ़तार को मापदंड बनाया है। मानवीय पहरावे में सिर्फ दसतार ही एक ऐसा पहरावा है जिसको सजाने में व्यक्ति का व्यक्तिगत योगदान होता है। मनुष्य के अन्य सभी पहरावे तैयार करने के लिए दूसरे व्यक्तियों का योगदान होता है। सिक्खों की दसतार हमेशा ही विश्व भर में चर्चा का विषय रही है, क्योंकि सिक्खों ने कभी भी किसी ज़ालिम सरकार के आगे झुककर, अपनी दसतार उतारकर गुलामी को स्वीकार नहीं किया। दसतार की उच्चता को कायम रखने के लिए सिक्खों ने हमेशा ही सिर-धड़ की बाज़ी लगाई है। मिसालमयी बहादुरी के मालिक सिक्ख की पहचान शुरू से ही दसतार रही है जिसने सिक्खों को भीड़ में गुम नहीं होने दिया। दुनिया भर की जनसंख्या में आटे में नमक के बराबर अपनी शमूलियत रखने वाली सिक्ख कौम की बहादुरी, वफ़ादारी, ईमानदारी तथा मेहनत की चढ़त दुनिया में सबसे ऊपर है। सिक्खों की चढ़त से कई नाखुश देश या कौमें इनको दुनिया की भीड़ में जज़्ब करने के लिए तत्पर रही हैं किंतु सिक्खों की दसतार ने दुश्मन के इन इरादों को कभी भी सफल नहीं होने दिया। विरोधियों द्वारा सिक्खों को दसतार-रहित करने के लिए सबसे पहले सिक्खों को केश-रहित करने की योजनायें बनाई जाती हैं जिसके परिणाम सिक्ख कौम के लिए बड़े भयानक हैं।

पहले-पहल सिक्ख नौजवान जब विदेशों में अपने अच्छे भविष्य की खोज के लिए मेहनत-मज़दूरी करने के लिए निकले तो उन पर यही दबाव डाला गया कि वे पहले केश-रहित हों। केश-रहित मनुष्य खुद-ब-खुद दसतार-रहित हो जाता है। सिक्ख नौजवानों को दसतार-रहित करने के लिए हर तकनीक, जैसे दसतार के विरुद्ध प्रचार, मीडिया में दसतार का अपमान, दसतारधारियों

को नौकरी न देना, दसतारधारियों सम्बंधी तरह-तरह की मज़ाकिया बातों को प्रचलित करना आदि शामिल हैं। इसके अलावा आज की तेज रफ़्तार की ज़िंदगी में बच्चों को जो शिक्षा मां-बाप, दादा-दादी, नाना-नानी से प्राप्त होती थी, वह भी बिल्कुल बंद हो गयी। पैसा इकट्ठा करने की दौड़ में ये लोग अपने बच्चों को ही भुला बैठे। इन्होंने अपने बच्चों को अपने (सिक्ख) सभ्याचार से अवगत करवाना था, वह नहीं करवाया। परिणामत: सिक्ख बच्चों ने अपना सभ्याचार खुद ही टी.वी., मीडिया आदि को देखकर अपना लिया। अब इस प्रभावाधीन बच्चे केशों को कत्ल करवाकर दसतार को बिसारने लग गए। जब जवानी की दहलीज़ पर पांव रखता कोई बच्चा केश कत्ल करवाकर घर जाता है एक बार उस घर में सन्नाटा अवश्य छा जाता है या शायद उस घर उस दिन रोटी भी नहीं पकती। मां-बाप के मन से निकली पीड़ा आसमान की ऊंचाइयों में जाकर गुम हो जाती है, परंतु वे कुछ भी नहीं कर सकते, क्योंकि इसमें उनका भी बराबर का ही कसूर है।

गत दिनों माता-पिता की इस हालत को ध्यान में रखते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ जी ने इस समस्या का हल करने के लिए योजनायें बनाईं। उन्होंने धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. सतबीर सिंघ जी से विचार-विमर्श करके बड़े पैमाने पर बच्चों को दसतार की महानता बताने तथा सुंदर दसतार की ओर प्रेरित करने के लिए योजनाएं बनाईं। इस योजना के अधीन स. सतबीर सिंघ जी ने अध्यक्ष साहिब के दिशा-निर्देश तले तैयारियां शुरू कर दीं। उन्होंने धर्म प्रचार कमेटी के स्टाफ को साथ लेकर पंजाब तथा भारत के अन्य प्रमुख राज्यों में स्कूली बच्चों की सिक्खी धारण करने के लिए नींव पक्की करने के लिए सुंदर दसतार सजाने के मुकाबले आरंभ कर दिए। ये मुकाबले पहले ब्लॉक स्तर पर, फिर ज़िला स्तर पर करवाकर प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आने वाले बच्चों को आकर्षक ईनाम दिए गए। इसी तरह राज्य स्तर पर हुए मुकाबलों में जम्मू राज्य में से स. मनजीत सिंघ, स. सुरजीत सिंघ तथा स. रमनप्रीत सिंघ क्रमश: पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर आए। हिमाचल प्रदेश में स. हरप्रीत सिंघ, स. मनदीप सिंघ तथा स. चंनप्रीत सिंघ पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर आए। दिल्ली राज्य में से स. अमनदीप सिंघ, स. अक्षदीप सिंघ, स. मनजोत सिंघ ने पहला, दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया। उत्तराखण्ड राज्य में से स. अरशदीप सिंघ, स. सुखवीर सिंघ तथा स. गुरिंदर सिंघ ने पहला, दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया। पंजाब राज्य के ज़िलाक्रमानुसार हुए मुकाबलों में ज़िला शहीद भगत सिंघ नगर (हुशियारपुर) में से स. नरिंदर सिंघ, स. बलरूप सिंघ, स. चंनप्रीत सिंघ ने पहला, दूसरा, तीसरा स्थान प्राप्त किया। ज़िला जलंधर तथा ज़िला कपूरथला में से स. चंनण सिंघ, स. लवलीत सिंघ तथा स. जसकीरत सिंघ पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। ज़िला मुहाली तथा चंडीगढ़ के मुकाबलों में से स. प्रीतइंदर सिंघ, स. परमवीर सिंघ, स. दमनजीत सिंघ ने पहला, दूसरा, तीसरा स्थान प्राप्त किया। ज़िला रूपनगर में से स. मनिंदरजीत सिंघ, स. कुलविंदर सिंघ व स. करनबीर सिंघ ने पहला, दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया। ज़िला पटियाला व ज़िला फ़तहिगढ़ साहिब के मुकाबलों में से स. अमनदीप सिंघ, स. वरिंदर सिंघ तथा स. हरदित्त सिंघ पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहे। ज़िला लुधियाना में से स. दिलप्रीत सिंघ, स. गुरनूर सिंघ, स. अमरदीप सिंघ पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। ज़िला संगरूर तथा ज़िला बरनाला के मुकाबलों में से स. जसप्रीत सिंघ, स. परदीप सिंघ, स. परमजीत सिंघ पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

ज़िला फिरोज़पुर तथा फाज़िलका में से स. इंदरप्रीत सिंघ, स. लवप्रीत सिंघ तथा स. रणजीत सिंघ पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहे। ज़िला श्री मुकतसर साहिब, मोगा तथा फरीदकोट में से स. खुशमनप्रीत सिंघ, स. गुरसेवक सिंघ तथा स. हरसिमरन सिंघ ने पहला, दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया। ज़िला बठिंडा तथा मानसा में से स. अनमोल सिंघ, स. जगतजोत सिंघ तथा स. लवप्रीत सिंघ ने पहला, दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया। ज़िला श्री अमृतसर में से स. सिमरनजीत सिंघ, स. प्रभजोत सिंघ तथा स. हरमिंदर सिंघ पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। ज़िला तरनतारन में से स. अचेत सिंघ, स. कोमलप्रीत सिंघ, स. प्रिथमजोत सिंघ ने पहला, दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया। ज़िला गुरदासपुर में से स. अनमोलदीप सिंघ, स. गुरविंदर सिंघ तथा स. जगमोहन सिंघ पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहे। इनके साथ ही हर एक ज़िले व राज्य के मुकाबलों में से १०-१० अन्य सुंदर दसतार वाले बच्चों को विशेष ईनाम भी दिए गए।

उपरोक्त चुने गए बच्चों का फाइनल 'सर्व-हिंद सुंदर दसतार मुकाबला' ७ अप्रैल, २०१३ को श्री अनंदपुर साहिब की पावन धरती पर करवाया गया। फाइनल सुंदर दसतार मुकाबले में २४५ बच्चे चुनकर आए थे। इन बच्चों में से स. प्रभप्रीत सिंघ-- श्री गुरु नानक सीनियर सेकंड्री स्कूल, घणूपुर, ज़िला श्री अमृतसर ने पहला स्थान प्राप्त किया। स. गुरनूर सिंघ-- दशमेश मॉडर्न सीनियर सेकंड्री स्कूल, दोराहा, ज़िला लुधियाना ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। स. हरप्रीत सिंघ-- साहिबज़ादा फतहि सिंघ पब्लिक स्कूल, मलेरकोटला, ज़िला संगरूर ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इन पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर आने वाले बच्चों को क्रमशः ३१,००० २१,००० तथा ११,००० रुपये नकद, सम्मान-चिन्ह तथा सिरोपाउ देकर सम्मानित किया गया। इनके अलावा १० अन्य सुंदर दसतार सजाने वाले बच्चों को ५१०० रुपये प्रति बच्चा नकद राशि तथा सम्मान-चिन्ह देकर उत्साहित किया गया। इस मुकाबले में भाग लेने वाले हर बच्चे को ११०० रुपये प्रति बच्चे के हिसाब से नकद राशि ईनाम के रूप में तक्सीम की गयी।

इस समारोह में धर्म प्रचार कमेटी की गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी तरलोचन सिंघ ने कहा कि दसतार सिक्खी का अभिन्न अंग है। इसी कारण सिक्ख लाखों की संख्या में खड़ा दूर से ही पहचाना जाता है। उन्होंने आधुनिक नौजवान वर्ग की बात करते हुए कहा कि नौजवान सिक्ख कौम का भविष्य हैं। उनका सिक्खी स्वरूप और गुरमति जीवन-जाच में परिपक्व होना अति आवश्यक है।

भारी इकट्ठ में बच्चों तथा पंथ की सिरमौर शख़्सियतों के सामने तीन विशेष शख़्सियतों-- भाई हरी सिंघ जी, भाई जसवंत सिंघ जी तथा डॉ. किरपाल सिंघ जी चंडीगढ़ का पंथ की चढ़दी कला में अपना योगदान डालने के बदले विशेष सम्मान किया गया, ताकि बच्चे इनको अपना प्रेरणा-स्रोत मानकर इनकी तरह ही पंथ की चढ़दी कला में सक्रिय हो सकें। इन विशेष शख़्सियतों को १,००,००० रुपये (प्रति व्यक्ति) की राशि, सम्मान-चिन्ह तथा सिरोपाउ देकर सम्मानित किया गया।

भाई हरी सिंघ जी, भूतपूर्व हजूरी रागी, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के बारे में जानकारी देते हुए उप सचिव स. अंगरेज सिंघ ने बताया कि "गुरु-पंथ की सत्कारित शख़्सियत भाई हरी सिंघ जी, भूतपूर्व हजूरी रागी, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर गुरु-घर से

बख़्शिश प्राप्त शख़्सियत हैं। भाई साहिब जी का जन्म २ जनवरी, १९२४ ई को हुआ। गुरबाणी, गुरमति विचारधारा की घुट्टी लेकर पैदा हुए भाई साहिब भाई हरी सिंघ जी ने स्कूली शिक्षा रावलपिंडी से प्राप्त की। कीर्तन की लगन तथा मूल शिक्षा भाई साहिब जी ने अपने सत्कारित पिता भाई तारा सिंघ जी से प्राप्त की। गुरबाणी के प्रति श्रद्धा-सत्कार की भावना के कारण भाई साहिब ज्ञानी मान सिंघ जी, हजूरी रागी, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के साथ सहायक रागी के रूप में सेवा निभाते रहे। इनकी सेवा से प्रभावित होकर १९५० ई में इनको जत्थेदार रागी नियुक्त कर दिया गया। भाई हरी सिंघ ने ५५ वर्ष से ज्यादा समय पूरी तनदेही के साथ सेवा निभाई।"

भाई जसवंत सिंघ जी, भूतपूर्व हजूरी रागी, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के बारे में जानकारी देते हुए उप सचिव स. भुपिंदरपाल सिंघ ने बताया, "अखंड कीर्तन के स्रोत श्री हरिमंदर साहिब में निरंतर ४७ वर्ष कीर्तन करने वाली शख़्सियत हजूरी रागी भाई जसवंत सिंघ प्रसिद्ध कीर्तनिए हैं। इनका जन्म १९४२ ई में ज़िला लायलपुर में प्रसिद्ध कीर्तनिए भाई पिआरा सिंघ जी के घर हुआ। ये उनके साथ ही १० वर्ष तक सहायक रागी के रूप में सेवा करते रहे। भाई जसवंत सिंघ जी के कीर्तन में शबदों की प्रमाणिकता सहज-स्पष्ट है। कीर्तन-शैली के परंपरागत रागों की मधुरता व मौलिकता इनके जीवन का बड़ा गुण है।"

तीसरी विशेष सम्मानित शख़्सियत डॉ. किरपाल सिंघ जी चंडीगढ़ के बारे में उप सचिव स. गुरचरन सिंघ जी घरिंडा ने बताया, "डॉ. किरपाल सिंघ जी का जन्म १९२४ ई. में गुजरांवाला (पाकिस्तान) में हुआ। डॉ. किरपाल सिंघ भारत के आधुनिक तथा मध्यकालीन इतिहास में योगदान डालने वाले इतिहासकार हैं। इनका बाखूब दिलचस्पी क्षेत्र पंजाब का इतिहास व सिक्ख इतिहास है। डॉ. किरपाल सिंघ जी पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला के मौखिक इतिहास के प्रवर्त्तक हैं। पंजाब के इतिहास तथा सिक्ख इतिहास व कल्चर पर किए विलक्षण कार्य को मुख्य रखते हुए पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला ने आपको डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की डिग्री से सम्मानित किया है। अब ये धर्म प्रचार कमेटी द्वारा चंडीगढ़ में चालित 'सिक्ख स्रोत, ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट' में श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ की संपादना का कार्य कर रहे हैं। इन्होंने सातवीं पातशाही तक के इतिहास की चौदह ज़िल्दों तक कार्य संपूर्ण कर लिया है।"

इस अवसर पर पंथ-प्रसिद्ध विद्वानों से लेख लिखवाकर 'सिक्ख की पहचान व शान' विषय पर खोज भरपूर सुंदर 'सोविनर' धर्म प्रचार कमेटी द्वारा तैयार किया गया। इस सोविनर को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ जी ने लोकार्पित किया। इस समय पंथ की सिरमौर हस्तियां-- प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, भूतपूर्व अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, स. सुखदेव सिंघ भौर महासचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, स. करनैल सिंघ पंजोली, कार्यकारिणी सदस्य, स. अमरजीत सिंघ, प्रिं. सुरिंदर सिंघ, जत्थेदार रविंदर सिंघ खालसा, जत्थेदार कशमीर सिंघ बरिआर, जत्थेदार अमरीक सिंघ शाहपुर, बीबी जोगिंदर कौर, जत्थेदार गुरनाम सिंघ, बीबी गुरिंदर कौर भोलूवाला, जत्थेदार अमरीक सिंघ कोटशमीर, स. गुरिंदर सिंघ गोगी, जत्थेदार दलजीत सिंघ, मास्टर जगीर सिंघ-- सभी सदस्य शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, स. मनजीत सिंघ निजी सचिव, प्रिंसीपल स. बलविंदर सिंघ तथा डॉ. इंदरजीत सिंघ गोगोआणी हाजिर थे।

श्री गुरु अमरदास जी : गुरु-पद-प्राप्ति से पूर्व का जीवन

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

जिन जिज्ञासुओं के मन में भक्ति-मार्ग को समझने की, जानने की, सच्चा गुरु पाने की, सच्चा ज्ञान प्राप्त करने की, प्राणियों के ईश्वर व प्रकृति के साथ सार्थक संबंधों को पहचानने की जिज्ञासा बलवती होती है, वे जिज्ञासु कभी आराम से नहीं बैठते। जब तक उनकी जिज्ञासा शांत नहीं हो जाती, मनचाहा ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता, सच्चे गुरु के दर्शन नहीं हो जाते, तब तक उनका मन यहां-वहां भटकता ही रहता है। वे अपनी जिज्ञासा शांत करने हेतु जप, तप, साधना, पूजा-पाठ, दान, तीर्थ-स्नान आदि अनेक उपाय करते हैं। यही हाल श्री गुरु अमरदास जी का श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने तथा उनका सान्निध्य व आशीर्वाद प्राप्त करने से पूर्व था। उनका जीवन अनेक जिज्ञासुओं की भांति बहुत दिलचस्प था। वे भी सच्चे गुरु की तलाश में बहुत दूर-दूर तक चले जाते थे। उनके मन का भटकाव रुक नहीं रहा था।

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म ज़िला श्री अमृतसर के गांव बासरके में ८ ज्येष्ठ, संवत् १५३६, तद्नुसार, ५ मई, १४७९ को हुआ। श्री गुरु नानक देव जी का जन्म १४६९ ई में हुआ था, इसलिए कहा जा सकता है कि श्री गुरु अमरदास जी के जन्म के समय श्री गुरु नानक देव जी की उम्र दस वर्ष थी। 'महिमा प्रकाश' ग्रंथ में वर्णन किया गया है कि आप दरियाई रेशम (करै बिवहार रेशम दरियाई) का व्यापार किया करते थे। लोगों की भलाई करने में भी आप सदैव आगे रहते थे। बासरके में पीने वाले पानी की कमी थी। लोगों को पानी दूर-दूर से लाना पड़ता था। आपने पानी की कमी को देखते हुए पहले वहां एक कुआं खुदवाया, फिर बाद में ताल भी बनवाया।

जीवन के प्रथम चरण में बाबा अमरदास जी सांसारिक रस्मों-रिवाज़ों में यकीन रखते थे। मन के भटकाव के कारण तथा गंगा-स्नान को जीवन की सफलता मानकर वे प्राय: गंगा आदि तीर्थों के स्नान के लिए जाया करते थे। उन्होंने जीवन में लगभग बीस बार गंगा-स्नान किया। उन दिनों गंगा-स्नान हेतु जाना आसान काम नहीं होता था। यह अति दुरूह कार्य होता था। यात्रा की कठिनाई को झेलना तथा कदम-कदम पर खतरा मोल लेना, यह तो कोई लगन वाला व्यक्ति ही कर सकता था। बाबा अमरदास जी के मन में भटकाव था, उनकी जिज्ञासा शांत नहीं हो पा रही थी। हालत पपीहे जैसी थी। जैसे-जैसे वे तीर्थों पर जाकर स्नान करते, वैसे-वैसे भटकना, लालसा व जिज्ञासा बढ़ती गई।

एक बार जब वे गंगा-स्नान के लिए गए तो एक ऐसी घटना घटित हुई कि उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। तब गुरगद्दी पर श्री गुरु अंगद देव जी विराजमान थे।

कहा जाता है कि परगना मुलाणा के गांव मेहड़ा में एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम दुर्गा था। उस ब्राह्मण के पास तीर्थ-यात्री आकर रहा करते थे। उसने बाबा अमरदास जी की महान शख़्सियत को भांप लिया था। वहीं आपकी भेंट एक ब्रह्मचारी के साथ हुई। उस ब्रह्मचारी

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९१०*

के साथ आपका मेलजोल काफ़ी बढ़ गया। खाना-पीना भी साथ-साथ होने लगा। एक दिन उस ब्रह्मचारी ने पूछ लिया, "आपका 'गुरु' कौन है?"

बाबा अमरदास जी ने जवाब दिया, "सच्चे गुरु की खोज में तो उम्र गुज़री है। अभी तक मुझे कोई 'गुरु' नहीं मिला है।" ब्रह्मचारी को यह बात अच्छी नहीं लगी और वो यह कहते हुए उनका साथ छोड़ गया, "हे भगवान! निगुरे का संग, निगुरे का धान, निगुरे के हाथ का पकाया अन्न, मेरा तो जन्म गया!"

यूं तो सभ्यता के प्रारंभिक विकास काल से ही भारतीय समाज में गुरु-शिष्य की अवधारणा का महत्त्व रहा है, किंतु भक्ति-काल में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्त्व बहुत बढ़ गया था तथा इसी काल से आगे भी इस परंपरा का कड़ाई से पालन होने लगा था। यह तथ्य उपरोक्त घटना से उजागर होता है।

ब्रह्मचारी की बातें, जो कड़वी थीं, सुनकर बाबा अमरदास जी के हृदय को चोट लगी और उनकी आत्मा सच्चे गुरु की खोज में और ज्यादा व्याकुल हो उठी। इस एक घटना ने उनके मन में हलचल पैदा कर दी।

एक दिन प्रभात के समय बाबा अमरदास जी के कानों में कुछ इस भाव के शबद (अलफाज़) पड़े, "दिन व रातें जाल हैं। हे उड़ने वाले पक्षी (मानव)! जितनी घड़ियां बीत रही हैं, इन्हें तू व्यर्थ गंवा रहा है। कभी सोचा है कि इन सख़्त जालों में से तू बाहर कैसे निकलेगा? हमारे कर्मों (अमलों) के कागज़ पर दो तरह के लेख हैं-- भले व बुरे। जो लेख ज्यादा होते हैं, मनुष्य उसी ओर चला जाता है। ओ मन! तू संसार में इसलिए आया है कि उस मालिक को याद करे, परंतु तू दीन-दुनी के उस मालिक को भुला बैठा है। जीवन फिर ही सफल होगा, यदि तू उसे याद करेगा।"

"शरीर एक भट्ठी है और मन उसमें लोहा है। पापों के कोयले का ढेर लगा हुआ है। काम, क्रोध और लालच की ज्वालाएं निकल रही हैं। मन अब जल चुका है। जीव चिंता की संड़सी (जंबूरी) के साथ मन को उठा-उठाकर परेशान हो रहा है। बेशक मनुष्य मंडूर (मनूर) भी हो गया हो किंतु यदि गुरु रूप पारस मिल जाए तो जीव फिर सोना बन सकता है। नाम की बूटी में बड़ी ताकत है।"

गुरबाणी का फ़रमान है :

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥१॥
चित चेतसि की नही बावरिआ ॥
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ॥
जाली रैनी जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ॥
रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥२॥
काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥
कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई ॥३॥
भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जो गुरु मिलै तिनेहा ॥
एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥ *(पन्ना ९९०)*

बाबा अमरदास जी के मन को चोट लगी और उनकी आत्मा गुरु की तलाश में चल पड़ी। उन्होंने बीबी अमरो जी (श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री) से पूछा, "जो शबद आप गा रही थीं, यह किसका है?

बीबी अमरो जी ने उत्तर दिया, "यह शबद श्री गुरु नानक देव जी का है तथा उनकी

गद्दी पर अब श्री गुरु अंगद देव जी विराजमान हैं।" बाबा अमरदास जी बीबी अमरो जी को साथ लिए खडूर साहिब पहुंचे।

जिस आश्रय की बाबा अमरदास जी को तलाश थी, वह मिल गया और फिर सेवा संपूर्ण समर्पण के साथ शुरू कर दी।

वे सन् १५४१ से लेकर १५५२ तक खडूर साहिब में ही रहे तथा ११ वर्ष समर्पण-भाव से सेवा की। प्रतिदिन आधी रात के समय जाग जाते तथा दरिया ब्यास से जल लाने हेतु चले जाते। लाए गए जल से श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाते। इसी तरह निरंतर सेवा करते रहे :

रहे पहर रात तब जल भर लिआवै।
सतिगुर को स्नान करावै ।६७।
स्नान कराए इकंत बह रहें।
काहू सो किछू सुने न कहें।
सतिगुर मूरत हिरदे(हृदय) धरे।
खान पान कछु सुध नहीं करे।६७।

गोंदा नामक सिक्ख ने श्री गुरु अंगद देव जी के पास विनती की कि उसकी जमीन पर एक नगर बसाया जाए। वह जगह पत्तण (नदी तट) पर थी। चहुं ओर से देखा, सुंदर थी। बाबा अमरदास जी ने उस जगह को बसाया।

अन्य व्यस्तताएं बेशक बढ़ती गईं, परंतु सेवा में कमी न आने दी। हुक्म में यूं बिंधे हुए थे कि वे गुरु के अलावा किसी को महत्त्व नहीं देते थे और न ही ध्यान में लाते थे। उनके जीवन से संबंधित एक घटना बहुत प्रसिद्ध है, लगभग प्रत्येक सिक्ख ने यह पढ़ी-सुनी हुई है :-

१५५२ ई का जनवरी महीना था। वर्षा वाला दिन था और ठंड भी बहुत ज्यादा थी। बाबा अमरदास जी सदैव की भांति उस दिन भी दरिया ब्यास से पानी लाने गए। वे जब वापिस लौट रहे थे तो रास्ते में ठोकर लगी। यह उनके धैर्य व सेवा की परीक्षा की घड़ी थी। ठोकर लगने के बावजूद भी उन्होंने गागर का पानी बहने नहीं दिया, संभाले रखा, मानो धैर्य, निश्चय को संभाले रखा। वाहिगुरु का उन पर प्यार उमड़ रहा था। वहां एक जुलाहे की खड्डी थी। बाबा अमरदास जी ठोकर खाकर उस खड्डी में जा गिरे। जुलाहा हड़बड़ाकर उठा तो उसकी पत्नी (जुलाही) ने ताना दिया, "होगा अमरू निथांवा (निराश्रित), जो आ गिरा है अपने समधियों के पांव में!" इसके अलावा अन्य भी अपशब्द उसने कहे। सदैव मीठा बोलने का सबक देने वाले बाबा अमरदास जी ने इतना ही कहा, "मैं नहीं निथांवा, तू कमली (बेअक्ल) है, जो ऐसा सोचती है।"

यह बात श्री गुरु अंगद देव जी तक जा पहुंची। उन्होंने बाबा अमरदास जी को पूरी संगत के सामने सम्मान देते हुए कहा :

तुसीं (आप) निमानों का मान हो,
निथांविओं की थांव हो !
निओटिओं की ओट हो !
निधरिओं की धर हो !
निआसरिओं का आसरा हो !
गई बहोड़ हो ! बंदी छोड़ हो !
भंनण घड़न समरत्थ हो!
रिजक की कुंजी तुम्हारे हत्थे है!
पुरखा जी तुम धन्य हो!

(महिमा प्रकाश)

श्री गुरु अंगद देव जी ने निर्णय ले लिया कि उनके पश्चात गुरगद्दी के लायक बाबा अमरदास जी ही हैं। उन्होंने अपने निर्णय से माता खीवी जी को अवगत करवाया।

सन् १५५२, मार्च महीने में श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरगद्दी श्री गुरु अमरदास जी को सौंप दी। स्वयं परिक्रमा की, माथा टेका तथा तीसरे गुरु के रूप में सुशोभित किया।

गुरबाणी के सबसे पहले संगीतकार : भाई मरदाना जी

*-सिमरजीत सिंघ**

प्रथम पातशाह साहिब श्री गुरु नानक देव जी की मित्रता का सौभाग्य सबसे ज्यादा भाई मरदाना जी को प्राप्त हुआ। इन्होंने गुरु जी की बाणी को अपनी रबाब के संगीत की मिठास से भरपूर किया। ज़िला श्री अमृतसर के कसबा नौशहिरा पंनूआं से १० किलोमीटर पूर्व दिशा की ओर गांव पट्ठेविंड हुआ करता था। इस गांव में बाबा शिव नरायण बेदी (श्री गुरु नानक देव जी के दादा जी) का जन्म १४१८ ई में हुआ। बाबा शिव नरायण जी का विवाह माई बनारसी से हुआ, जिनके घर १४४० ई को भाई कलिआण दास (कालू जी) का तथा १४४१ ई को बाबा लालू जी का जन्म हुआ। भाई मरदाना जी के खानदान के पूर्वजों का सम्बंध पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु साहिब जी की वंश के साथ रहा। भाई साहिब जी के पिता भाई बदरा जी गुरु साहिब जी की वंश के डूम थे। जब राय भोय ने इसलाम धर्म धारण किया तो उस समय के हाकिम दौलत राय ने अपनी बेटी का निकाह राय भोय के साथ कर दिया। दौलत राय ने सरकपुर का परगना अपनी पुत्री को दे दिया। यहां राय भोय ने अपने नाम पर नगर 'राय भोय भट्टी की' की तलवंडी आबाद की। जब तलवंडी नगर आबाद हो गया तो राय ने अपने परम मित्र शिव नरायण को परिवार सहित अपने पास बुला लिया। यहां आकर आप राय बुलार के पटवारी के रूप में श्रम करने लगे। इनके अकाल चलाना कर जाने के बाद भाई कलिआण दास जी ने इस जिम्मेदारी को संभाला। शिव नरायण के साथ ही भाई बदरा जी के घर माता लक्खो जी की कोख से १४५९ ई को एक पुत्र ने जन्म लिया। यही श्री गुरु नानक देव जी के परम मित्र बने। ये अपने माता-पिता की सातवीं संतान थे। आपसे पहले छः बच्चे पैदा होकर मर गए थे। यही बच्चा बड़ा होकर प्रसिद्ध संगीत शास्त्री तानसेन के उस्ताद हरिवल्लभ का पूजनीक उस्ताद बना।

भाई मंगल सिंघ जी ने बाबा बुड्ढा जी के जीवन पर लिखी अपनी पुस्तक में बाबा बुड्ढा जी और भाई मरदाना जी की वार्तालाप (विचार-गोष्ठि) दर्ज की है कि "राय भोय की भट्टी राजपूत ने १४८६ बिक्रमी में जब अपने नाम पर राय भोय की तलवंडी आबाद किया उस समय श्री गुरु नानक देव जी के बड़े जठेरे गांव गोडे से आकर यहां बस गए। उसी समय मेरे जजमान गांव लखणके से संधू जिमींदार, जिनमें से भाई बाला जी हैं, यहां आ बसे। उनके साथ उनके बड़े रजानी जी चौबड़ जाति के मीरासी भी यहां इस जगह आ गए। उसकी वंश से भादड़ा तथा भादड़ा से मेरे पिता बादरा पैदा हुए। उसके घर लक्खो की कोख से मेरा जन्म १५१६ बिक्रमी में हुआ।"

बच्चे के जन्म के बाद माता-पिता सबसे पहले उसको एक नाम देते हैं, जिससे वो सारी उम्र दुनिया में अपनी पहचान बनाए रखता है। भाई साहिब के माता-पिता ने भी इनका नाम 'दाना' रखा। इसी नाम से ये अपने दोस्तों-मित्रों तथा रिश्तेदारों में जाने जाते रहे। भाई दाना जी मीरासियों की रबाबी भाईचारक श्रेणी से सम्बंध रखते थे। रबाब बजाना उन्होंने बचपन

**संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश।*

से ही शुरू कर दिया था। विरासत में मिले इन गुणों पर उनकी अच्छी पकड़ हो गयी थी। भाई दाना जी के विवाह के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं प्राप्त होती कि कब और कहां हुआ। इनके घर दो पुत्र-- भाई रजादा तथा भाई सजादा तथा एक पुत्री के जन्म लेने के बारे में कई ऐतिहासिक स्रोतों से जानकारी प्राप्त होती है।

एक बार श्री गुरु नानक देव जी अपनी बहन बीबी नानकी जी के पास आकर रहने लग गए। यहां उन्होंने मोदीखाने में मोदी की नौकरी कर ली। जब श्री गुरु नानक देव जी विवाह के बाद तलवंडी गए तो श्री गुरु नानक देव जी ने बहुत पुण्य-दान किया। उन्होंने अपने विवाह वाले कीमती वस्त्र भाई दाना जी को दे दिए। यह देखकर गुरु जी की मौसी लक्खो अपनी बहन को मज़ाक करने लगी, "बहन! तेरा पुत्र तो पागल हो गया, जो कुछ घर में मिलता है, लोगों को बांट देता है।" कुछ दिन गुरु जी तलवंडी में रहने के बाद फिर सुलतानपुर लोधी चले गए।

एक बार पिता कलिआण दास जी ने भाई बदरा जी को श्री गुरु नानक देव जी का पता मंगवाने के लिए कहा तो भाई बदरा जी ने भाई दाना जी को गुरु जी के पास सुलतानपुर लोधी भेज दिया। एक दिन गुरु जी वेईं नदी में स्नान करने गए तो भाई दाना जी वेईं पर पहुंच गए। गुरु जी अकाल पुरख की आराधना में लीन थे। पांव की आवाज़ सुनकर उन्होंने आने वाले का नाम पूछा। जवाब आया, "जी मैं हूं दाना, दाना डूम।" श्री गुरु नानक देव जी ने हंसकर कहा, "दाना डूम नहीं मरदाना। आज से तू 'मरदाना' है।" उस दिन से भाई साहिब का नाम 'मरदाना' मशहूर हो गया।

दबिस्तानि मज़ाहब का कर्ता मोहसिनफानी लिखता है कि "तलवंडी का एक मुसलमान मीरासी मरदाना था, जिसकी उम्र गुरु पातशाह से १० वर्ष बड़ी थी। उसकी सुरीली आवाज़, अच्छा रहन-सहन और प्रभु के प्रति अच्छी भक्ति देखकर बाबा नानक जी ने उसको भाई बना लिया। पिता कालू के कहने पर श्री गुरु नानक देव जी को प्रभु की तरफ से मोड़कर सफल दुनियावी जीवन बिताने की तरफ प्रेरणा देने के लिए मरदाना सुलतानपुर आया था, किंतु गुरु जी के नूरानी जलाल तले आ गया। जब भी गुरु जी प्रभु-स्तुति के गीत गाते थे तो वो रबाब पर उनके साथ संगत करने लग गया। लोग श्री गुरु नानक देव जी के ईश्वरीय शबद सुनने के लिए बहुसंख्या में एकत्र होना शुरू हो जाते।"

श्री गुरु नानक देव जी ने भूली-भटकी लोकाई को सत्य का ज्ञान देने की योजना बनाई। इस कार्य के लिए कठिन रास्तों का सफर तय करना था। वर्षों तक परिवार से दूर बेघर होकर विचरना पड़ना था। गुरु जी ने बहुत सोच-विचार के बाद इस कार्य के लिए अपना साथी भाई मरदाना जी को चुना।

प्रचार-यात्रा पर चलने से पहले श्री गुरु नानक देव जी ने भाई मरदाना जी को रबाब लेने के लिए भेजा। इसको रबाब लेने के लिए बीबी नानकी जी ने पैसे दिए। यह रबाब श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी मंशा के अनुसार विशेष किस्म का बनवाया था। इस रबाब का ढांचा साधारण रबाबों से अलग था। ईरान से भारत में आई रबाब में चार तारें होती थीं। श्री गुरु नानक देव जी ने जो रबाब भाई मरदाना जी के लिए तैयार करवाई, उसकी छः तारें थीं। ये तारें कच्चे रेशम से तैयार की गयी थीं। बाद में ऐसी रबाब रामपुर के दरबारी रबाबी भी प्रयोग करते बताए जाते हैं। भाई मरदाना जी की यह रबाब गुरुद्वारा गऊ घाट, पटना साहिब में रखी हुई थी। सन्

१९८४ ई की सिक्ख नसलकुशी के समय यह रबाब कोई चुराकर ले गया, जिसका आज तक कुछ पता नहीं चल सका। श्री गुरु नानक देव जी ने खुद भैरोआणा निवासी भाई फरिंदे से भाई मरदाना जी को रबाब लेकर दी तथा कहा, "मरदानिआ! तुझे तार का गुण दिया।" भाई फरिंदे का असल नाम इंदर सैन भी बताया जाता है। भाई मरदाना जी के संगीत के बारे में भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में ज़िक्र किया है :

भला रबाब वजाइंदा मजलस मरदाना मीरासी।
(वार ११:१३)

भाई मनी सिंघ जी की जनम-साखी के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी ने प्रचार-यात्रा पर चलने से पहले भाई मरदाना जी को तीन बातें दृढ़ करवाईं-- अमृत वेले सतिनामु का जाप करना, केश नहीं काटना तथा जरूरतमंदों की सहायता करना।

भाई मरदाना जी ने सारी उम्र श्री गुरु नानक देव जी के साथ रहकर सत्य के प्रचार में भरपूर हिस्सा डाला। भाई गुरदास जी ने अपनी पहली वार की ३५वीं पउड़ी में ज़िक्र किया है :

फिरि बाबा गइआ बगदादि नो बाहरि जाइ कीआ असथाना।
इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
दिती बांगि निवाजि करि सुंनि समानि होआ जहाना।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी तथा भाई मरदाना जी की रबाब ने लोकाई के मन में गहरा असर किया। इन्होंने मनुष्यों को अंधकार से निकालने के लिए उनके मन से भय दूर किया। भाई मरदाना जी एवं श्री गुरु नानक देव जी की दोस्ती शबद और सुरति के मिलाप का संकेत था।

हमारे इतिहास का मौलिक व बहुत ही अहम स्रोत है-- साखी साहित्य। यह ऐतिहासिक स्रोतों का अटूट अंग है। जब किसी साहित्य की रचना होती है तो धीरे-धीरे समय, स्थान तथा भाषा के बदलने से इसके अर्थ समझना मुश्किल हो जाता है। इनको समझने के लिए सबसे पहले यह समझना आवश्यक होता है कि इनकी रचना किस समय, किन परिस्थितियों में हुई है, तो ही इसके सही अर्थ समझ आ सकते हैं। ये साखियां पूर्ण इतिहास नहीं हुआ करतीं बल्कि इनमें इतिहास के अंश छुपे होते हैं। जन्म-साखियों में भाई मरदाना जी महत्त्वपूर्ण पात्र हैं, जो पाठकों की रूह तक प्रभाव डालते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी का समय बहुत भयानक दौर से गुज़र रहा था। ऐसे समय में भाई मरदाना जी तथा श्री गुरु नानक देव जी दो शख़्स दुनिया को जागृत करने, क्रांति लाने के लिए उठ खड़े हुए। इनके पास साधन थे-- सिर्फ बाणी व संगीत। पुरातन साखियों को ध्यानपूर्वक देखने से यह बात समझ में आती है कि भाई मरदाना जी गुरु जी से पहले जिस गांव या इकट्ठ में जाते हैं, वहां वे माहौल सृजित करते हैं और गुरु जी उस माहौल में जाकर लोगों को जागृत करते हैं। जरूरत है सिर्फ इन साखियों को ध्यान से समझने की।

भाई मरदाना जी पहली प्रचार-यात्रा के दौरान हिंदू धर्म-केंद्रों तथा दूसरी प्रचार-फेरी के दौरान बुद्ध धर्म के केंद्रों तथा तीसरी प्रचार-यात्रा के दौरान योगियों, नाथों के डेरों एवं चौथी प्रचार-यात्रा के दौरान इसलाम धर्म के स्थानों पर श्री गुरु नानक देव जी के साथ गए।

भाई मरदाना जी ५५ वर्ष श्री गुरु नानक देव जी के साथ रहे। उन्होंने गुरु जी के साथ रहकर जीवन के रास्ते से भटके, गलत रास्ते पड़े लोगों को सत्य का मार्ग दिखाया। अपनी जीवन-यात्रा का अंतिम समय भी इन्होंने गुरु

जी की पावन गोद में ही व्यतीत किया। जब गुरु जी के साथ ये प्रचार-यात्रा के बाद देश वापिस आए तो अफ़गानिस्तान में कुरम नदी के किनारे बसे कुरम नगर में इन्होंने प्राण त्याग दिए। वहां इनकी याद में एक स्मारक भी बनाया हुआ है। प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार मैकालिफ़ लिखता है कि गुरु जी ने भाई मरदाना जी को पूछा, "ब्राह्मण की देही जल प्रवाह की जाती है, क्षत्रिय की आग में जलाई जाती है, वैश्य की पवन में फेंक दी जाती है और शूद्र की दबाई जाती है, तेरी देह का अंतिम संस्कार कैसे हो? भाई मरदाना जी ने उत्तर दिया, "महाराज जी! आपके उपदेश से मेरा देह-अभिमान बिलकुल ही नाश हो चुका है। चारों वर्णों की देहों के अंतिम संस्कार के ढंग भी अहंकार से सम्बंध रखते हैं। मैं तो अपनी आत्मा को केवल अपने शरीर का साथी समझता हूं। महाराज जैसे आपकी इच्छा हो वैसे ही कर देना।" गुरु जी ने कहा, "तेरी समाधि बनाकर तुझे जगत में मशहूर कर दें?" भाई मरदाना जी ने कहा, "जब मेरी आत्मा शरीर रूपी समाधि से निकल जाए तो फिर उसको पत्थर या ईंटों की समाधि में कैद क्यों करते हो?" गुरु जी ने कहा, "भाई मरदानिआ! तूने ब्रह्म को पहचान लिया है। तू ब्रह्मज्ञानी है।" अमृत वेले उनकी आत्मा ब्रह्म में जा मिली।

भाई मरदाना जी के नाम तले श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बिहागड़े की वार महला ४ की १२वीं पउड़ी के साथ तीन सलोक दर्ज हैं।

भाई मरदाना जी के अकाल चलाना कर जाने के बाद भाई सजादा जी श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में रबाब बजाते रहे। कई विद्वानों का मत है कि भाई रजादा जी तथा भाई सजादा जी की आगे कोई औलाद नहीं थी। कई विद्वान मानते हैं कि भाई सजादा जी के दो पुत्र-- भाई बादू जी तथा भाई सादू जी थे। भाई बादू जी के एक पुत्र भाई गुलाबा जी थे। इनकी पीढ़ी के अन्य और भी बहुत सारे रागी-रबाबी अपने आपको भाई मरदाना जी की वंश में से मानते हैं। ये अपने आपको 'मरदाने के' कहलवाते हैं। इनमें से भाई मागू जी, भाई रहमत अली, भाई आशक अली (लाल जी), भाई मुहम्मद हुसैन, भाई करम हुसैन मशहूर नाम हैं।

भाई मरदाना जी की वंश में से भाई चांद जी प्रसिद्ध रागी हुए हैं। १९४७ ई से पहले श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में कीर्तन किया करते थे। भारत-पाकि विभाजन के समय बहुत सारे रबाबी परिवार पाकिस्तान में चले गए। श्री दरबार साहिब से चले जाने का भाई चांद जी पर इतना असर हुआ कि उन्होंने दोबारा किसी अन्य स्थान पर कीर्तन नहीं किया। उन्होंने अपने साज सदा के लिए बंद कर दिए। भाई चांद जी को रबाबी परंपरा का अंतिम रबाबी कहा जाता है।

भाई लाल जी (आशक अली भाई लाल) देश-विभाजन से पहले श्री गोइंदवाल साहिब में हजूरी रागी थे। ये आजकल लाहौर (पाकिस्तान) में रह रहे हैं।

स्रोत पुस्तकें :
- *महान कोश, भाई कान्ह सिंघ नाभा*
- *पंजाब कोश, स. रछपाल सिंघ*
- *सिक्ख पंथ विश्व कोश, डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)*
- *भाई मरदाना, डॉ. महिंदर कौर (गिल्ल)*
- *रागी रबाबी, स. बलबीर सिंघ कंवल*
- *दबिस्तानि मज़हब, मोहसिनफानी*
- *ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी, रजिंदरजीत कौर*

सरहिंद पर विजय

*-स. सतनाम सिंघ कोमल**

दशमेश पिता जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ जो पांच सिंघ नांदेड़ से पंजाब के लिए भेजे थे वो पांचों ही सिक्ख कौम के जरनैल थे। बाबा जी के पास गुरु जी का आशीर्वाद था, पांच तीर थे, नगाड़ा था, शस्त्र थे और गुरु जी द्वारा सिक्ख कौम के नाम जारी हुकमनामे थे, जो उनकी असल ताकत थे। दिल्ली पहुंचकर बाबा जी सिक्ख कौम के हितैशी और गुरु को प्यार करने वाले सिक्खों से संपर्क साधने में कामयाब हो गये। रोहतक आकर बाबा बंदा सिंघ बहादर ने दशम पातशाह के हुकमनामे मालवा क्षेत्र के सिक्खों के पास भेज दिए।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का हुक्म हर सिक्ख के लिए सर्वोपरि है। मालवा क्षेत्र के सिक्खों को सिक्ख फौज के साथ मिलने में कोई मुश्किल नहीं थी, पर माझा क्षेत्र के सिक्खों को थी, क्योंकि सतलुज दरिया पर वज़ीर ख़ान और शेर मुहम्मद ख़ान ने सख़्त नाकाबंदी कर रखी थी, परंतु सिक्खों के जोश के सामने शाही फौज टिक न सकी। जरनैल खिजर ख़ान मारा गया और खालसा फौज सतलुज पार करने में सफल हो गयी। बाबा बंदा सिंघ बहादर माझा क्षेत्र के सिक्खों के पहुंचने तक बनूड़ और शतबीड़ को अपने अधीन कर चुके थे।

सिक्ख फौज में से पांच हज़ार सिक्ख वे थे जिन्होंने दशम गुरु जी के साथ पहले ही जंगें लड़ी हुई थीं। दूसरी श्रेणी वो थी जो नौजवान थे और जंग-ए-मदान में कूदने के लिए आतुर थे। इसके अलावा हिंदू जाट, राजपूत और गुज्जर भी थे जिनकी संख्या दस हज़ार के लगभग थी। खाफी ख़ान के मुताबिक सिक्ख फौज चालीस हज़ार के लगभग थी। वजीर ख़ान ने जेहाद का नारा दिया था, बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ जंग करने का। उसके पास पांच-छः हज़ार घुड़सवार, आठ हज़ार तोपची, हाथी और तोपखाना था।

सरहिंद से १०-१२ कोस की दूरी पर चपड़चिड़ी के मैदान में खालसा फौज आ पहुंची। मुगलों की ओर से शेर मुहम्मद ख़ान नवाब मलेरकोटला ने दाईं तरफ की कमान संभाल ली। वज़ीर ख़ान बीच में था और बाईं तरफ सुच्चा नंद था। सिक्ख सेना में भाई बाज़ सिंघ दाईं तरफ, भाई बिनोद सिंघ बाईं तरफ और बीच में बाबा बंदा सिंघ बहादर थे। मुगलई तोपों ने खालसा फौज का बहुत नुकसान किया। खालसा फौज को जान की परवाह नहीं थी। गुरु की खुशी लेना ही उसका असल मकसद था। साहिबज़ादों के कातिलों को मार-मुकाना ही उनका वास्तविक उद्देश्य था। नवाब मलेरकोटला शेर मुहम्मद ख़ान बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था, मगर खालसा फौज उस पर हावी हो रही थी। एक गोली उसका सीना चीरती हुई निकल गई और वो ज़मीन पर गिर गया। उसके गिरते ही उसकी फौज भाग खड़ी हुई। अब बाबा बंदा सिंघ बहादर और वज़ीर ख़ान में जंग चल रही

**२४८, अर्बन अस्टेट, फेज-१, लुधियाना-१४१०१०; मो. ९८७२६-०९९२१*

थी। इतने में भाई बाज़ सिंघ और भाई बिनोद सिंघ भी आ गये और वज़ीर ख़ान को घेरे में लेकर मार दिया। वज़ीर ख़ान की मौत के बारे में और भी लिखित मिलती है। 'अख़बार-ए-दरबार-ए-मौला' १२ मई, १७१० ई लिखता है कि लड़ाईं सवेरे शुरू हुई और दोपहर तक चली। वज़ीर ख़ान, उसका बेटा और जमाई इस लड़ाईं में मारे गये। बड़ा लड़का पहले ही दिल्ली भाग गया था। सुच्चा नंद के बारे में उस वक्त के किसी भी लिखने वाले ने कुछ नहीं लिखा। वो वज़ीर ख़ान का खजानची था, घमंडी और शातिर दिमाग था।

जिन-जिन इमारतों का गुरु के लालों की शहीदी से सम्बंध था वो खालसा फौज के गुस्से का शिकार हो गयीं, उनका नामो-निशान मिट गया। जो मजार या दरगाहें थीं वो सलामत रहीं। 'गुरू मारी सरहिंद' अब 'फ़तेहगढ़' हो गई।

खालसा फौज फ़तहि के डंके बजाती हुई सरहिंद में दाख़िल हो गई। १४ मई को सरहिंद पर कब्ज़ा कर लिया गया। आजकल इस दिवस को 'सरहिंद फ़तहि दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

इसके बाद बंदा सिंघ बहादर ने आस-पास के सभी शहरों, कसबों को अपने कब्ज़े में ले लिया-- समाणा, सुनाम मुसतफाबाद, कैथल, घुड़ाम, अंबाला, थानेसर, टोहाणा, सढौरा शाहबाद मारकंडा, हिसार, सोनीपत, मलेरकोटला आदि।

भाई बाज़ सिंघ को सरहिंद का सूबेदार नियुक्त किया गया। सिक्ख राज की राजधानी लोहगढ़ बनाई गई, जो कभी मुखलिसगढ़ के नाम से थी। मुगलों को सरहिंद का हाथ से चले जाना नागवार गुज़रा था। बाबा बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में पहली बार सिक्ख राज्य कायम हुआ।

बाबा बंदा सिंघ बहादर ने श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्का चलाया। जमींदारी-प्रथा खत्म कर खेती करने वालों के नाम ज़मीनें कर दीं। यह उस समय बहुत बड़ी बात थी। आम लोगों को जमींदारी-प्रथा की लूट से बचाया। उस समय खालसा राज की सालाना आमदन ३६ लाख रुपए थी। मुगलों के सताये हुए लोग खालसा राज में राहत महसूस करते थे, खुश थे।

खालसा राज बेशक थोड़े समय के लिए ही रहा, पर मुगलों को यह पता चल गया कि उन्हें टक्कर देने वाली कौम अभी पूरे दमखम में है।

सरहिंद पर विजय सिक्ख कौम के लिए अहम प्राप्ति साबित हुई। इसके पीछे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की दूरदर्शी सोच का कमाल था। अब सिक्ख बादशाह थे। यह बादशाहत उन्हें विरासत में नहीं मिली थी, यह उन्होंने अपने ज़ोर पर हासिल की थी।

दिसंबर माह में छोटे साहिबजादों एवं माता गुजरी जी की शहीदी होने के कारण सिक्ख कौम इस महीने को शोक अर्थात् दुख के महीने के रूप में मनाती है। जब सिक्ख जगत शहीदों की याद में इकट्ठा होता तो उसको सभा कहते थे। इन दिनों में लोग घरों में चूल्हा नहीं जलाते थे, ज़मीन पर ही लेटते थे, चारपाई का प्रयोग नहीं करते थे। यह सिक्खों की गुरु के लालों और माता गुजरी जी के लिए हार्दिक श्रद्धांजलि थी। आज सिक्ख संगत लाखों की संख्या में फ़तेहगढ़ साहिब में जहां छोटे साहिबज़ादों के शहीदी दिवस पर एकत्र होती है वहीं 'सरहिंद फ़तह दिवस' को भी मनाना नहीं भूलती।

छोटा घल्लूघारा

*-प्रो रजवंत कौर**

सिक्ख कौम विश्व के इतिहास में गौरवमयी स्थान रखती है। इसका लासानी इतिहास कुर्बानियों से भरा पड़ा है। बाबा बंदा सिंघ बहादर की शहीदी के बाद सिक्खों की ताकत दिन-ब-दिन कमज़ोर होती गई। फर्रुख्सियर की मौत के बाद मुहम्मद समद खां, जकरिया खां और उसके पुत्र यहीआ खां के शासन काल में सिक्खों पर बड़ी सख़्ती की गई। वास्तव में वे सिक्खों का नामो-निशान मिटा देना चाहते थे, इसलिए उन्होंने सिक्खों की ख़बर देने और ठिकाना बताने वालों को विशेष ईनाम देने का एलान किया हुआ था। यही कारण था कि सिक्खों की ख़बर देने वाले लालची लोगों की कोई कमी न थी। हर दिन बड़ी मात्रा में सिक्खों का कत्लेआम किया जा रहा था। अपने बच्चों व स्वयं के बचाव के लिए जंगल में पनाह लेने के सिवा सिक्खों के पास कोई चारा न था। १ जुलाई, १७४५ को जकरिया खां की मौत हो गई। उसके बाद उसका पुत्र यहीआ खां लाहौर का सूबेदार नियुक्त हुआ, जो स्वभाव से खूंखार और सिक्खों से घोर नफ़रत करने वाला था।

यहीआ खां ने लखपत राय को अपना दीवान नियुक्त कर लिया। लखपत राय की नीयत में यह दुर्भावना थी कि कोई भी सिक्ख बचना नहीं चाहिए। वह इनके पूरे सफाए की योजना बनाकर बैठा हुआ था। उसने अपने भाई जसपत राय, जो कि ऐमनाबाद का फौजदार था, को भारी फौज के साथ रावी नदी के किनारे सर छुपाकर बैठे सिक्खों पर हमला करने का आदेश जारी किया। हमला होने पर सिक्ख वहां से ऐमनाबाद की तरफ चल निकले। आगे चलकर वे रोड़ी साहिब गुरुद्वारा साहिब में ठहरे। कई दिनों से भूखे सिक्ख वहां से कुछ खरीददारी करके लंगर तैयार करना चाहते थे। जसपत राय ने इसकी इजाजत देने की बजाय सिक्खों को कहा कि मैं तुम्हारे सिर के बाल काटकर रस्सियां बनाऊंगा और उन्हें लाहौर दरबार में भेज दूंगा। उसने सिक्खों को तुरंत गुरुद्वारा खाली करने का आदेश दिया। सिक्ख इस बात को मानने के लिए राजी न हुए। उन्होंने यह फैसला किया कि भूखे मरने की बजाय लड़कर मरना बेहतर है। यह शान से जीने और गौरव से मरने की बात थी। जसपत राय की फौज के हमला करने से पहले ही सिक्खों ने जसपत राय की फौज पर हमला कर दिया। इस लड़ाई में जसपत राय हाथी पर सवार होकर अपनी फौज को उत्साहित कर रहा था। घमासान के दौरान भाई निबाहू सिंघ हाथी की पूंछ पकड़कर (जिस पर जसपत राय सवार था) उस पर चढ़ गया और उसने अपनी तेग से जसपत राय का सिर धड़ से अलग कर दिया। गुस्साए कृपा राम ने पांच सौ रुपये देकर सिक्खों से जसपत राय का सिर वापिस ले लिया। फिर सिक्खों ने खाने का सामान खरीदकर लंगर तैयार किया और वहां से कूच कर गए।

*४५२-बी, संधू कालोनी, छेहरटा, श्री अमृतसर-१४३००५, मो ८१४६६-५०४४९

लखपत राय को जब इसकी ख़बर हुई तो वह आग बबूला होकर तिलमिलाया, कहने लगा, "सिक्खों को एक खत्तरी (क्षत्रिय, श्री गुरु नानक देव जी) ने बनाया था और अब एक खत्तरी के हाथों ही इनका अंत होगा।" इसी योजना के तहत सारे पंजाब में सिक्खों के कत्लेआम का हुक्म दे दिया गया। उसकी नियत यहां तक मलीन थी कि उसने यह आदेश भी जारी कर दिया कि कोई भी 'ग्रंथ' को 'ग्रंथ' और 'गुड़' को 'गुड़' न कहे, बल्कि 'ग्रंथ' के स्थान पर 'पोथी' और 'गुड़' के स्थान जपर 'भेली' शब्द का प्रयोग किया जाए। लखपत राय की धारणा थी कि इन शब्दों के प्रयोग से ये लोग अपने धर्म की ओर उन्मुख हो जाते हैं। 'गुड़' कहने से 'गुरु' स्मृति में आ जाता है और 'ग्रंथ' कहने से 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब'। इससे उन्हें बढ़ावा मिलता है और मैं हरगिज नहीं चाहता कि उनकी संख्या में वृद्धि हो। १३ मार्च, १७४६ ई. को लखपत राय ने लाहौर के जितने भी सिक्ख सरकारी कर्मचारी थे, उन्हें गिरफ्तार कर लिया और वरिष्ठ सज्जनों के कहने पर भी उन्हें न छोड़ा, बल्कि कत्ल करवा दिया।

अब सिक्खों को रावी दरिया के जंगलों में चारों ओर से घेर लिया गया। लखपत राय ने जंगलों को काटने और आग लगा देने का आदेश जारी कर दिया। सिक्ख वहां से काहनूवान के छंभ (ज़िला गुरदासपुर) की ओर कूच कर गए। वहां गुरमता करके यह फैसला लिया गया कि अब दुश्मन से सीधी टक्कर लेने का वक्त आ गया है। अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लखपत राय की फौज द्वारा किए गए हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया जा रहा था, क्योंकि सिक्ख जंगल के रास्तों को भली-भांति जानते थे। दो-तीन महीने ऐसे ही युद्ध होता रहा। आखिरकार, सिक्खों के पास युद्ध-सामग्री व खाने-पीने के सामान की भारी किल्लत हो गई थी। जंगल से बाहर निकलना खतरे से खाली नहीं था और अंदर रहने का भी कोई चारा शेष न था, इसलिए सिक्ख शिकार व घासफूस खाकर गुज़ारा करने को मज़बूर थे। धीरे-धीरे सिक्ख बसौली की पहाड़ियों की तरफ बढ़ने लगे ताकि वहां सुरक्षित रह सकें। वहां भी शाही फरमान पहुंच चुका था कि कोई भी सिक्खों की मदद न करे। बसौली में सिक्खों पर गोलियों और पत्थरों की बौछार की गई। सिक्ख अब हर तरफ से घिर चुके थे, इसलिए रावी दरिया को पार करने का फैसला किया गया। उसका बहाव बहुत तेज था। पार निकल सकने की कोई उम्मीद न थी। रावी के पानी का बहाव जानने के लिए सरदार गुरदिआल सिंघ और उसके भाई स. हरदिआल सिंघ ने अपने-अपने घोड़े पानी में उतार दिए। बहाव तेज होने की वजह से दोनों भाई घोड़ों समेत बह गए। आखिर यह फैसला हुआ कि पैदल लोग पहाड़ी पर चढ़ें और घुड़सवार दुश्मन का मुकाबला करें। यह फैसला होने पर घुड़सवार सिक्खों ने दुश्मन की फौज पर हमला बोल दिया। नवाब कपूर सिंघ व स. जस्सा सिंघ अलग-अलग टुकड़ियों की कमान संभाले हुए थे। स. सुक्खा सिंघ माड़ीकंबो आगे बढ़कर मुकाबला कर रहा था कि अचानक लखपत राय उसके सामने आ गया। स. सुक्खा सिंघ उसको मौत के घाट उतारने ही वाला था कि उसे एक जंबूरे का गोला आ लगा, जिससे उसकी टांग टूट गई। उसने हौसला नहीं हारा। वह अपनी टूटी हुई टांग को बांधकर बहादुरी से फिर दुश्मन का मुकाबला करने लगा। सिक्खों ने ऐसी वीरता दिखाई कि दुश्मन

(शेष पृष्ठ २८ पर)

महान आध्यात्मिक योद्धा : सरदार हरी सिंघ नलूआ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

अफ़गानिस्तान की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों, अफ़गानियों की जुझारू-लड़ाकू प्रवृत्ति और उनकी गुरिल्ला छापामारी की युद्ध-कला के कारण अफ़गानिस्तान पर फ़तहि हासिल करना हमेशा से ही एक बेहद मुश्किल काम रहा है। पिछले २०० वर्षों से अंग्रेजों, रूसियों और अमेरिकियों ने अफ़गानिस्तान पर क़ब्ज़ा करने के जितने भी प्रयास किए हैं, वे सभी असफल रहे हैं। ऐसे दुर्जेय अफ़गानिस्तान के लड़ाकों को उनके घर में शिकस्त देने का कारनामा आज तक एक ही शक्ति कर सकी है। वह शक्ति है- 'खालसा'। लगभग पौने दो सौ साल पहले शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ के शूरवीर सिपहसालार सरदार हरी सिंघ नलूआ ने यह असंभव-सा कार्य कर दिखाया था।

संघर्ष से तपा हुआ बचपन : सरदार हरी सिंघ नलूआ का जन्म गुजरांवाला (जो अब पाकिस्तान का एक प्रमुख शहर है) में सन् १७९१ ई. में हुआ। आपके पिता का नाम स. गुरदिआल सिंघ और माता का नाम धरम कौर था। यह परिवार सिक्खी परंपराओं में रचा-बसा परिवार था, इसलिए सरदार नलूआ को आंरभ से ही गुरसिक्खी वाला माहौल प्राप्त हुआ। आपने प्रारंभिक शिक्षा फारसी के साथ-साथ गुरमुखी में भी प्राप्त की।

सरदार हरी सिंघ नलूआ अभी मात्र सात वर्ष के ही हुए थे कि इन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। पिता के अकाल चलाना ने इन्हें पितृ-प्रेम से वंचित कर दिया। ऐसे मुश्किल समय में सरदार हरी सिंघ ने धैर्य नहीं खोया। इन्हें अपने ननिहाल आना पड़ा, परंतु इन्होंने अपनी शिक्षा-साधना में कोई विघ्न नहीं पड़ने दिया। सरदार हरी सिंघ नलूआ को शस्त्र-संचालन का बड़ा शौक था। इन्होंने पढ़ाई के साथ-साथ शस्त्र-विद्या का अभ्यास भी जारी रखा। समर्पित अभ्यास के कारण युवा होते-होते सरदार हरी सिंघ ने तलवारबाज़ी, धनुर्विद्या, घुड़सवारी, नेज़ेबाजी आदि में गज़ब की महारत हासिल कर ली।

महाराजा से भेंट : बसंत ऋतु के अवसर पर महाराजा रणजीत सिंघ लाहौर में एक खास शानदार दरबार सजाया करते थे। इस दरबार में दूर-दूर से आने वाले लोग अपनी कला के जौहर दिखाया करते थे। सन् १८०५ ई. के बसंत-दरबार के अवसर पर युवा सरदार हरी सिंघ ने अपने अनुपम युद्ध-कौशल के ऐसे-ऐसे करतब दिखाये कि देखने वाले दंग रह गये। महाराजा रणजीत सिंघ इस १४-१५ वर्ष के युवक के रण-कौशल से इतना प्रभावित हुए कि उन्हें उसी समय सिक्ख फौज के लिए चुन लिया।

'नलूआ' खिताब की प्राप्ति : सिक्ख सेना में आकर स. हरी सिंघ ने बड़ी तेजी से तरक्की की। महाराजा उन्हें अपने करीबी योद्धाओं में रखने लगे। एक बार महाराजा शिकार खेलने गये। सरदार हरी सिंघ उनके साथ थे। शिकार

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१ मो: ९४१७२-७६२७१*

के दौरान अचानक एक शेर सामने पड़ गया। बहादुर सरदार हरी सिंघ ने दिलेरी दिखाते हुए शेर को मार डाला। महाराजा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने सरदार हरी सिंघ को 'नलूआ' का खिताब प्रदान किया। कहते हैं कि राजा नल शेर मारने में बड़े कुशल थे। सरदार हरी सिंघ ने उसी तरह शेर का वध किया था, इसलिए उन्हें 'नलूआ' कहा गया। 'नलूआ' यानी 'नल जैसा'।

सरदार नलूआ के जंगी कारनामे : सिक्ख सेना में आकर सरदार हरी सिंघ नलूआ अपनी योग्यता के बल पर जरनैल के पद तक पहुंचे। उनके जंगी कारनामों की सूची बहुत लंबी है। सन् १८०७ ई में कसूर के युद्ध में सरदार हरी सिंघ नलूआ ने अपनी बहादुरी के नायाब जौहर दिखाये। सन् १८१० ई में सरदार हरी सिंघ नलूआ ने सियालकोट पर आक्रमण किया। पहले दो दिनों तक सिक्ख सेना कोई खास कारवाई न कर सकी। तीसरे दिन सरदार हरी सिंघ नलूआ फौज को हल्लाशेरी देते हुए खालसाई झंडा पकड़ कर आगे बढ़े और पलक झपकते ही दीवार फांद कर क़िले के ऊपर जा चढ़े तथा खालसाई झंडा लहरा दिया। सरदार हरी सिंघ नलूआ की बहादुरी देखकर फौज जोश में आ गई और क़िला फ़तहि कर लिया गया। इसी वर्ष मुलतान की जंग में सरदार हरी सिंघ नलूआ ज़ख्मी हो गये परंतु शीघ्र स्वस्थ होकर लौट आये।

सरदार हरी सिंघ नलूआ ने १८१३ ई में हज़रों के युद्ध में अफ़गानों को हराया। १८१५ ई में राजौरी और चिनाब-तट के इलाकों को जीता। १८१८ ई में कंवर खड़क सिंघ के साथ मुलतान पर आक्रमण किया और उसे पक्के तौर पर सिक्ख राज्य में मिला लिया। १८१९ ई में कश्मीर को फ़तहि किया और वहां पिछले ५०० वर्षों से चली आ रही मुगल सत्ता का अंत किया।

नवंबर, १८२१ ई में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना हुई। सरदार हरी सिंघ नलूआ ७,००० सैनिकों और बड़े खजाने के साथ मुजफ्फराबाद के रास्ते लाहौर वापिस आ रहे थे। हजारा के निकट मंगली दर्रे पर ३०,००० के शत्रु लश्कर ने इन्हें रोका और चुंगी देने के लिए कहा। सरदार हरी सिंघ नलूआ ने उन्हें समझाने की कोशिश की, पर वे न माने। अंततः युद्ध छिड़ गया। सरदार हरी सिंघ नलूआ ने महज ७,००० सैनिकों के साथ ३०,००० के लश्कर को खदेड़ दिया और लगभग २,००० अफ़गानों को मौत के घाट उतार दिया।

यही नहीं, अटक, नौशहरा, पेशावर जैसी अन्य कई मुहिमों में सरदार हरी सिंघ नलूआ ने अद्वितीय वीरता दिखाई। इसमें कोई शक नहीं कि सरदार हरी सिंघ नलूआ की विजयों ने सिक्ख राज्य की स्थापना और विस्तार में विशेष भूमिका निभाई।

कुशल प्रशासक : सरदार हरी सिंघ नलूआ अत्यंत बुद्धिमान, तीक्ष्ण बुद्धि एवं गंभीर प्रवृत्ति के थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण इन्होंने महाराजा के हृदय में गहरी जगह बना ली थी। अपनी दूरदर्शिता के कारण ये महाराजा के खास विश्वास-पात्र बन गये। महाराजा राज्य संबंधी अहम मामलों में इनसे मशविरा ज़रूर करते।

महाराजा सरदार हरी सिंघ नलूआ की प्रशासनिक योग्यता के भी कायल थे। १८१९ ई की कश्मीर फ़तहि के बाद महाराजा ने इन्हें कश्मीर का गवर्नर नियुक्त कर दिया। इस ज़िम्मेदारी को इन्होंने बड़ी योग्यता से निभाया।

१८२१ ई में हजारे की बड़ी जीत के बाद सरदार हरी सिंघ नलूआ को हजारे का

गवर्नर बनाया गया। यहां इन्होंने हरीपुर नाम का शहर बसाया और किशनगढ़ नाम का नया क़िला बनवाया।

सरदार हरी सिंघ नलूआ पेशावर के पहले सिक्ख गवर्नर बने। औरंगजेब के समय से हिंदू 'जजिया' कर देते आ रहे थे। सरदार हरी सिंघ नलूआ ने तुरंत समाप्त कर दिया।

सरदार हरी सिंघ नलूआ के कुशल प्रशासन में पेशावर की आमदनी कई गुना बढ़ गई। महाराजा ने प्रसन्न होकर इन्हें अपने नाम का सिक्का जारी करने की आज्ञा दी।

पेशावर का कबीलाई इलाका तब भी बड़ा अशांत इलाका होता था। कबीलाई किसी कानून को नहीं मानते थे। सरदार हरी सिंघ नलूआ ने इस अराजक क्षेत्र में कानून-व्यवस्था कायम की। इन इलाकों के लोग सरदार हरी सिंघ नलूआ के नाम से थर्राने लगे थे। कहते हैं कि माताएं अपने बच्चे को 'नलवा रागले' (नलूआ आया) कहकर डराया/ चुप कराया करती थीं।

जमरौद का युद्ध : पिछले आठ सौ वर्षों से पंजाब विदेशी हमलावरों का पायदान बना हुआ था। हमलावर ख़ैबर के दर्रे से भारत में प्रवेश करते थे। सरदार हरी सिंघ नलूआ जानते थे कि ख़ैबर पर कब्ज़ा करते ही आक्रमणकारियों का प्रवेश रोका जा सकता है। सरदार हरी सिंघ नलूआ की यह मुहिम उन अफ़गानियों के विरुद्ध थी जिन्हें हराना लगभग असंभव माना जाता था। इस जबरदस्त मुहिम में सरदार हरी सिंघ नलूआ ने जमरौद पर कब्ज़ा करके न सिर्फ अफ़गानियों को हराया बल्कि उनमें मानसिक तौर पर भी ऐसा खौफ़ भर दिया कि वे इस ओर आंख उठाने से भी डरने लगे।

सन् १८३७ ई में एक बड़ी अफ़गान फौज ने जमरौद पर आक्रमण कर दिया। सरदार हरी सिंघ नलूआ अस्वस्थ थे और पेशावर में स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त कर रहे थे। जमरौद पर हमले की सूचना प्राप्त होते ही सरदार हरी सिंघ नलूआ ६,००० पैदल, १,००० घुड़सवार और १८ तोपें लेकर तुरंत जमरौद पहुंचे। सरदार हरी सिंघ नलूआ की आने की ख़बर सुनकर अफ़गानों के हौसले पस्त हो गये। वे यह सोचकर आये थे कि सरदार हरी सिंघ नलूआ बीमार है, वो लड़ने नहीं आ पायेगा, किंतु सब कुछ उल्टा हो गया। सिक्ख फौज के जबरदस्त हमले ने अफ़गानों के पैर उखाड़ दिये। उनकी प्रसिद्ध तोप 'कोह-सथन' (पहाड़-तोड़) समेत कई तोपें सिक्खों ने कब्ज़े में ले लीं।

इस युद्ध में सरदार हरी सिंघ नलूआ एक अन्य सिपहसालार सरदार निधान सिंघ के जत्थे की रक्षा करते समय दर्रे के अंदर शत्रु की गोलियों से ज़ख्मी हो गये। जमरौद के क़िले में कुछ दिन संघर्ष करने के बाद अपनी नाजुक हालत के मद्देनज़र सरदार हरी सिंघ नलूआ ने अपने सालारों को बुलाया और खालसे की चढ़दी कला के लिए अंतिम सांस तक जूझने की ताकीद की। अंततः ३० जुलाई, १८३७ ई की रात को सरदार हरी सिंघ नलूआ शहीदी प्राप्त कर गये।

महान् आध्यात्मिक योद्धा : सरदार हरी सिंघ नलूआ वास्तव में एक महान आध्यात्मिक योद्धा थे। उन्होंने जितने भी युद्ध लड़े, वे खालसे की चढ़दी कला के लिए लड़े। यह उनकी आध्यात्मिक शक्ति का प्रभाव ही था कि वे असंभव से असंभव युद्ध में भी हमेशा विजयी रहे।

खून-पसीना बहाने वाले श्रमिकों को उनका पूरा हक मिले!

*-डॉ. जगजीत कौर**

गुरमति में श्रम-चेतना ही जीवन का आधार है। लोकगत जीवन हो अथवा परमार्थगत पलत-सुख का जीवन, गुरबाणी निरंतर श्रम, परिश्रम, उद्यम, घाल-कमाई की ही प्रेरणा मानव को देती है। अध्यात्म जीवन को सुंदर बनाने के लिए गुरबाणी नाम-सिमरन की घाल कमाई की प्रेरणा देती है और लोक-जीवन को व्यवस्थित, सुंदर व संतुलित बनाए रखने के लिए परिश्रम और कर्मशीलता द्वारा धनोपार्जन करना, किरत-कमाई, नेक चलनी की प्रेरणा देती है। आदर्श रखा :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का आदर्श रखा गया जिसे *"हथी कार कमावणी पैरी चलि सतिसंगि मिलेही। किरति विरति करि धरम दी खटि खवालणु कारि करेही।"* की ओर दिशा दी गई। गुरबाणी उपदेश दिया गया :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥
(पन्ना ५२२)

मेहनत-परिश्रम करके अपना आहार-भोजन करे, परिवार के दायित्त्वों को ईमानदारी की किरत से पूरा करे और साथ ही अन्य जरूरतमंदों को भी यथाशक्ति सहारा दे, इसी को गुरु साहिबान ने 'वंड छकना' बताया और इसी से गुरमति में सेवा का विशाल दायरा निश्चित किया गया। अब किरत करने के लिए कई प्रकार के साधनों की भी चर्चा गुरबाणी में प्राप्त होती है। सभ्यता के प्रारंभ से ही शक्ति-सत्ता-सम्पन्नता की भावना ने समाज में राजा और प्रजा, स्वामी और सेवक, दाता और दीन की स्थिति को जन्म दिया। ज्यों-ज्यों शक्ति-सम्पन्न, सामर्थ्यवान दूसरों को पराजित कर अपनी राज्य-सत्ता कायम करते गए त्यों-त्यों दासता की प्रवृत्ति का जन्म हुआ। युद्ध होने लगे और परस्पर युद्धों में हारे बंदी दास बनने लगे। ऐसा भी समाज में होता रहा कि दास-दासियों की खरीद होती अर्थात् मोल-तोल होता। वे खरीदे गए दास-दासियां हैं, इसके लिए उनके माथे पर गर्म लोहे से चिन्ह बना दिए जाते, पहचान के लिए। वे आजीवन अपने क्रेता स्वामी की सेवा करते और उसके क्रूर व्यवहार को सहन करते। बंधुआ मज़दूरों की प्रथा इसी तरह चली। राजाओं-महाराजाओं की बात तो अलग, आम जमींदार भी दास रखने लगे। वे छोटे किसान, जो जमींदार का कर्ज़ नहीं चुका सकते थे, आजीवन उसकी बेगारी करते। मध्य काल तक ऐसा ही समाज का प्रचलन रहा और शोषण का तांडव चलता रहा। १५वीं सदी में अगम्य ज्योति साहिब श्री गुरु नानक देव जी ने इसके विरुद्ध क्रांति का शंखनाद किया। उन्हें स्वयं बंदी रूप में बाबर बादशाह के कैदखाने में डाला गया। उन्होंने इसके विरुद्ध स्वर उठाया, अनेक बंदियों को मुक्त कराया और बाबर बादशाह को खुलेआम 'पाप की जंञ' ले आने वाला बताया।

दरअसल गुरु साहिबान की काल अवधि मुगलकालीन भारत से सम्बंधित है, जिस समय

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो ९४१२४-८०२६६*

देश की धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक दशा अत्यंत बिखरी हुई थी। मुगलों के आक्रमणों के कारण युद्ध, मारकाट और लूट-खसूट से आम भारतीय की आर्थिक दशा अत्यंत शोचनीय थी। समाज में आर्थिक विषमता थी। कृषि, वाणिज्य-व्यापार सभी आर्थिक सम्पन्नता के मूल तत्त्व छिन्न-भिन्न दशा में थे। ऐसी लूट-खसूट में कुछ तो अत्यंत आर्थिक सम्पन्न रहे और कुछ अत्यंत रंक दरिद्रतापूर्ण जीवन जीने को मज़बूर थे। गुरबाणी स्पष्ट संकेत करती है : *"इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥"* (एक आरामदायक पलंग पर सो रहा है, एक उसकी सेवा में खड़ा है।) *"इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥"* (एक शक्ति-सम्पन्न घोड़े पर सवार हो चला जा रहा है, दूसरे (दास) के गले में जंज़ीर है; बंधी जंज़ीरों में उसे खींचा जा रहा है।) यह कैसी विषमता है? एक तो पाटपटंबर, रेशमी वस्त्र, इत्र-फुलेल से शरीर को सजा रहे हैं और मेवे, फल, गिरी, छुहारे खा रहे हैं, अन्य को सूखी रोटी भी नसीब नहीं है। एक तो *"लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार"* में मस्त है, दूसरा *"रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥"* पेट भरने के लिए तरह-तरह से शरीर के तोड़-मरोड़ के तमाशे दिखा रहा है। *"केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥"* अभावग्रस्त परिवारों में परस्पर प्रेम-सद्भाव का अभाव हो रहा है। भक्त कबीर जी प्रभु से प्रार्थना करते हैं : *"दुइ सेर मांगउ चूना ॥ पाउ घीउ संग लूना ॥ अध सेरु मांगउ दाले ॥ मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥"*

भक्त धंना जी की विनती है : *"दालि सीधा मांगउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥"*

ऐसी विषम परिस्थिति में भी सत्ता की ओर से जनसाधारण का लगातार शोषण हो रहा है। साधारण कृषकों-श्रमिकों को जमींदार को मालगुज़ारी के रूप में अनाज आदि देना पड़ता है। अनाज का एक बड़ा हिस्सा उनकी भेंट चढ़ता है। व्यापार-वाणिज्य पर कई तरह के कर के अलावा उन्हें सत्ताधारियों को अपना माल थोड़े दाम में या उपहार में देना पड़ता है। हिंदुओं को तो तीर्थ-यात्राओं पर भी जज़िया कर देना पड़ता है। श्री गुरु अमरदास जी की यात्राओं का वर्णन तुखारी राग में करते हुए श्री गुरु रामदास जी ने बताया है कि *"तीरथ उदमु सतिगुर कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥"* कैसे यमुना पार करने के लिए सिक्ख संगत को कर देना होता था। पर गुरु जी के दर्शन से उन 'जम जागातियों' से संगत को राहत मिली। इन्हीं करों का ज़िक्र भक्त कबीर जी अपनी बाणी में करते हैं :

अममु सिरानो लेखा देना ॥
आए कठिन दूत जम लेना ॥
किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ॥
चलहु सिताब दीबानि बुलाइआ ॥ (पन्ना ७९२)

दीन-हीन साधारण कृषकों-श्रमिकों को भी अपनी आय, लेन-देन का हिसाब करना पड़ा। सरकारी कारिंदे किसी को नहीं बख़्शते; उनकी हड्डियां-मांस नोच-नोचकर रक्त चूसते हैं। इसी का दुखदायी वर्णन संवेदनशील गुरु नानक पातशाह जी ने मलार की वार में किया है :

राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)

कई बार तो कर चुकाने के लिए कच्ची-पक्की फसल को भी काटना पड़ता था :

जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥
काची पाकी बाढि परानी ॥ (पन्ना ३७५)

जाहिर है कि गुरु-काल में मेहनतकश को अपने परिश्रम का पूरा सुख-उपभोग-लाभ प्राप्त नहीं होता था। श्री गुरु नानक देव जी दीन-दुखियों के मसीहा बनकर आए और इस धक्केशाही तथा शोषण का विरोध किया। अपनी उदासियों के दौरान आरंभ में ही गुरु जी श्रमजीवी भाई लालो (बढ़ई) के घर जाकर ठहरे और लोगों का खून चूसकर गरीबों का शोषण करने वाले मलिक भागो के पकवानों को रक्त-सिंचित बताया। दीन-दुखियों के ये मसीहा अपनी संपूर्ण यात्राओं के दौरान यही उपदेश करते रहे कि 'हक सच' की कमाई करो, दूसरे का हक न मारो, *"हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥"* की बात समझाते रहे, जिससे जिसका जो उचित बनता वह अधिकार उसे दिया जाए। खुद श्री गुरु नानक साहिब ने कृषि-कार्य किए, भैंसें चराईं, मोदीखाने की नौकरी की। आदर्श प्रस्तुत किया कि कर्म कोई भी हीन नहीं है। श्रम की महत्ता है, श्रमिक का सम्मान करना चाहिए। श्रम किसी भी प्रकार का क्यों न हो, व्यक्ति अपना खून-पसीना बहाकर ही कार्य को सम्पन्न करता है। दशमेश गुरुदेव जी ने तो यहां तक श्रमिक वर्ग को महत्त्व दिया कि : *सेव करी इन हूं की भावत और की सेव न सुहात जी को ॥*

आज के इस मशीनी युग में विज्ञान अथवा तकनीक का मशीनों से सम्बंधित कोई भी कार्य क्यों न हो, ईमानदारीपूर्ण श्रम की अपेक्षा रखता है। अपना खून-पसीना बहाकर ही श्रमिक वर्ग समाज के उपभोग-सुख के लिए सुविधायें जुटाता है। मार्शल, एडमस्मिथ, एरिक रोल इत्यादि प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों ने औद्योगिक विकास, जो कि देश की सामूहिक प्रगति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, इसके मुख्य तत्त्वों-- पूंजी, प्रबंधन, प्राकृतिक साधन, भूमि आदि के साथ-साथ श्रम को भी महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना है। किसी भी देश की जन-शक्ति उसका धन है और श्रमिक वर्ग इस धन का एक हिस्सा है। श्रमिक वर्ग की सुख-सुविधाओं, उनकी सुरक्षा, उनकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति पर ध्यान देना, उन्हें यथायोग्य बनाना उस विशेष देश की शासन-सत्ता का कर्त्तव्य बनता है। यदि ऐसा नहीं होता और प्रबंधन लाभ का मोटा भाग अपनी सुख-सुविधाओं के लिए जुटाता है, श्रमिक को उसकी मेहनत का पूरा मेहनताना नहीं दिया जाता तो धीरे-धीरे समाज में धन का असमान वितरण होता चला जाता है। जब समाजवादी व्यवस्था कमज़ोर पड़ जाती है, पूंजीवादी व्यवस्था जोर पकड़ने लगती है तो फिर वह स्थिति हो जाती है जिसके प्रति सुप्रीम कोर्ट के जज माननीय हंस राज खन्ना ने कुछ साल पहले कहा था-- "गरीबी समृद्धि के लिए घातक है।" **(Poverty anywhere is a threat to prosperity.)** जब उच्च वर्ग भड़कीला जीवन व्यतीत करता है तो साधनहीन वर्ग भड़क उठता है। **(When rich people become vulgar poor people become brutal.)** कन्हैया लाल मुंशी उच्च कोटि के विद्वान, दार्शनिक और अर्थशास्त्री का मत है कि अब उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के मध्य सांस्कृतिक जीवन-शैली का एक बड़ा अंतर आ जाता है तो खूनी क्रांति होकर रहती है। **(When a big cultural gap takes place between upper class & lower class, there is a revolution.)** ऐसा हुआ। इतिहास साक्षी है। महान रूसी क्रांति, फ्रांस की क्रांति आदि का। सन् १८८६ में शिकागो में हेअमार्केट में श्रमिकों का भारी प्रदर्शन हुआ और इसी प्रदर्शन में श्रमिकों का भारी कत्लेआम भी हुआ। श्रमिक अपने उचित अधिकारों की बराबर मांग करते रहे। काम

करने की अवधि की सीमा और काम किए गए घंटों का, समय का उचित पारितोषिक, इसके लिए श्रमिक वर्ग बराबर प्रदर्शन करता रहा, खून बहाता रहा, कुर्बानियां देता रहा। सन् १८९४ का मई दिवस इसी कुर्बानी की शौर्य-गाथा है। इसके बाद विदेशों में तो श्रम के घंटे भी निश्चित हुए और समय-समय पर पारितोषिक में भी बदलाव आया है। विदेशों में श्रमिक वर्ग सुख-चैन का जीवन व्यतीत करता है, किंतु भारत में अभी भी श्रमिकों का शोषण हो रहा है। उन्हें किए गए श्रम का उचित पारितोषिक नहीं मिलता।

कार्य के कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं जहां कार्य की स्थिति जोख़िम भरी होती है। भारी भरकम इमारतों के निर्माण, भारी-भारी पुलों के निर्माण-कार्य तथा रेल विभाग के कई जोख़िमपूर्ण कार्य है। एक सबसे जोख़िमपूर्ण श्रम खदानों की खुदाई का भी है। सर्वाधिक कठोर परिश्रम इस क्षेत्र में करना पड़ता है, क्योंकि कार्य भूमिगत होता है और सबसे अधिक शोषण भी इसी क्षेत्र में हो रहा है। यहां अनेकों प्रकार के गैरकानूनी हथकंडे अपनाए जाते हैं। उचित पारितोषिक न देना और बालश्रम का शोषण यहां आम बात है, क्योंकि भूमिगत कई सुरंगें ऐसी होती हैं जहां बच्चों को ही काम में उनके छोटे शरीर व आकार के कारण लगाया जाता है। यह स्पष्ट ही बाल-रक्षा कानून की अवहेलना है। भूमिगत खदानें खोदने में कई तरह की विषैली गैसें निकलती हैं जो जीवन के लिए घातक हैं। इस क्षेत्र में मृत्यु जैसी घटनाएं भी आए दिन होती रहती हैं। खदानों से खोदे जाने वाला लोह इस्पात, बॉक्साईट, चूना, कोयला, ग्रेनाइट और अन्य इसी तरह के पदार्थ अधिकांशतः पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, आसाम, मध्य प्रदेश, हिमाचल, राजस्थान आदि में पाए जाते हैं। इन्हीं क्षेत्रों में वे पछड़ी जातियां भी हैं जिन्हें श्रम के रूप में इन कार्यों में लगाया जाता है। खनिज द्रव्यों से समृद्ध क्षेत्रों में रहने वालों तथा कार्य करने वाली इन श्रमजीवी जातियों को तो समृद्ध होना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं है। अनमोल खनिज द्रव्यों का मोटा भाग तो इन क्षेत्रों में रहने वाले लोक तस्करी द्वारा हथिया लेते हैं, जिनका ज़िक्र आए दिन मीडिया में होता रहता है। ऐसे क्षेत्रों में जंगली जानवर तथा अन्य कई तरह की कष्टपूर्ण स्थितियों का सामना श्रमिक वर्ग को करना पड़ता है और ऊपर से पारितोषिक भी समुचित नहीं मिलता। ऐसे में टकराव का पनपना स्वाभाविक ही है। जर्मन दार्शनिक थोरे का मत है कि "जिस अनुपात में हमारी ऊर्ध्व चेतना सो जाती है उतने ही अनुपात में हमारी पशु-वृत्ति जागृत हो जाती है।" **(We are concions of an animal in us which awakens in proportion as our higher nature slumbers.)**

जब प्रतिदिन की जरूरतें ही पूरी नहीं होंगी तो उच्च चेतना, उच्च मानसिकता की बात साधारण व्यक्ति कैसे सोच सकता है? देश के सुख-साधनों का साठवां हिस्सा पंद्रह प्रतिशत लोगों की पॉकेट में जाता है और शेष चालीस प्रतिशत गरीब, आम श्रमिकों के लिए रह जाता है। ऐसे में देश की सर्वांगीण प्रगति के बारे में कैसे सोचा जा सकता है? हमारी शासन-सत्ता को ऐसे नियम-कानून बनाने चाहिए जो सरबत्त के भले के लिए हों। गुरु साहिबान का गणतांत्रिक शुभ संदेश है :

हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥
पै कोइ न किसै रञाणदा ॥
सभ सुखाली वुठीइहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥
(पन्ना ७४)

किरत के सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाला सिक्ख समाज

*-डॉ. अमृत कौर**

"नाम जपो, किरत (काम) करो और वंड (बांटना) छको" श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रतिपादित इन तीन सरल साधारण नियमों में जीवन का रहस्य छिपा है। ये तीनों सिद्धांत सिक्ख धर्म का आधार-स्तंभ हैं, जिनका अनुमोदन और प्रतिपालन शेष गुरु साहिबान ने भी किया। ये तीनों सिद्धांत आधुनिक युग में सिक्ख जीवन-शैली के प्रेरणा-स्रोत हैं :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी की इन दो पंक्तियों ने जनमानस को आंदोलित किया है। वे कोरे सैद्धांतिक दार्शनिक न होकर क्रियात्मक कर्मयोगी थे। उन्होंने कड़े परिश्रम द्वारा नेक कमाई करने पर बल दिया। कड़े परिश्रम में प्रभु को ढूंढने का प्रयास किया। कर्म से बढ़कर और कोई 'पूजा' नहीं :

जह करणी तह पूरी मति ॥
करणी बाझहु घटे घटि ॥ (पन्ना २५)

वास्तविक ज्ञान भी कर्म द्वारा ही प्राप्त होता है। शुभ कर्म आध्यात्मिक उन्नति का भी आधार है :

गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथनी करड़ा सारु ॥
करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥
(पन्ना ४६५)

श्री गुरु नानक देव जी सच्चे कर्मयोगी थे। वे आयु-पर्यंत कर्म करते रहे। शारीरिक श्रम से उन्होंने कभी जी नहीं चुराया। युवावस्था में मोदीखाने में काम किया। उन्होंने बुढ़ापे में खेतों में काम किया। वे जीवन भर समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए कार्यरत रहे। श्री गुरु अंगद देव जी का गुरगद्दी के लिए चुनाव का प्रमुख कारण था उनका परिश्रम से जी न चुराना। अपनी रेशमी पोशाक की परवाह किए बिना कीचड़ से सने घास के बंडलों से गिरते कीचड़ के छींटे उनके लिए कृपा बन गए, जिन्होंने उन्हें गुरगद्दी का अधिकारी बना दिया। कर्म की भट्ठी में तपकर श्री गुरु अंगद देव जी सोना बन गए। श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी भी गुरगद्दी के अधिकारी कड़े परिश्रम की कसौटी पर कसकर बने। श्री गुरु नानक देव जी के मन में परिश्रमी, कर्मठ व्यक्तियों के लिए विशेष प्रेम था। उन्होंने मलिक भागो की अपेक्षा भाई लालो को प्राथमिकता देकर कर्म को जीवन का बेजोड़ शासक कहा। उन्हें भाई लालो की रूखी-सूखी रोटी खाना प्रवान है, क्योंकि वह परिश्रम द्वारा नेक कमाई की उपज है। लोक-शोषण तथा अनुचित ढंग से कमाई नेक कमाई कैसे हो सकती है?

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

गुरु साहिबान के आदर्शों पर चलने वाला मनुष्य ही गुरमुख है जो कड़े परिश्रम द्वारा अपनी जीविका अर्जित करता है। वह सांसारिक कर्म करता हुआ भी कमल के फूल की तरह

**१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, ज़ीरकपुर-१४०६०३, मो. ९८१५१-०९९५७*

संसार में अलिप्त रहता है :

गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए ॥
सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥ *(पन्ना ७५३)*

गुरमुख व्यक्ति उद्यम और परिश्रम द्वारा अपनी जीविका-अर्जन करते हैं, कड़े परिश्रम द्वारा जीवन-यापन करते हैं। श्री गुरु नानक देव जी 'सिध गोसटि' में ऐसे योगियों की भर्त्सना करते हैं जो निष्क्रिय रहकर पलायनवादी वृत्ति अपनाकर दूसरों पर निर्भर रहते हैं :

गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ (पन्ना १२४५)

कर्म और भक्ति में कोई विरोध नहीं। प्रभु-भक्ति के लिए घर-बार त्यागकर जंगलों में निवास करना, कंदमूल खाकर गुज़ारा करना कोई जरूरी नहीं, दैनिक जीविका-अर्जन का कर्म करते हुए भी नाम-सिमरन किया जा सकता है :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभु मिलु नानक उतरी चिंत ॥
(पन्ना ५२२)

श्री गुरु अरजन देव जी के इस सलोक में लौकिक-आलौकिक जीवन का संगम है। हाथों से काम करते हुए, जिह्वा से नाम-सिमरन करते हुए, हंसते-खेलते, खाते-पीते, जीवन में सुखों का उपभोग करते हुए, *"हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ"*, चढ़दी कला में रहते हुए जीवन-यापन किया जा सकता है। इसी स्वर में भक्त कबीर जी कहते हैं :

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संमालि ॥
हाथ पाउ करि नामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७५)

शारीरिक काम-धंधों को गुरु साहिबान और संतों-भक्तों द्वारा आध्यात्मिक, पवित्र-नेक जीवन के विकास का साधन समझा जाता था। वे खून-पसीने द्वारा कमाई पवित्र रोजी-रोटी में विश्वास रखते थे। भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त सधना जी आदि सभी परिश्रम द्वारा ही जीवन बसर किया करते थे। सिक्ख गुरु साहिबान ने संगत द्वारा दिए दान को कभी अपनी व्यक्तिगत सुविधा के लिए प्रयोग नहीं किया। श्री गुरु अंगद देव जी बान (रस्सी) बनाकर अपना जीवन-निर्वाह किया करते थे। श्री गुरु अरजन देव जी को दो लाख जुर्माना देकर छोड़ देने की पेशकश मुगल शासकों द्वारा आई, परंतु उन्होंने संगत के धन को अपने निजी लाभ के लिए प्रयोग करने से इंकार कर दिया और देश, समाज व धर्म में नए प्राणों का संचार करते हुए, *"तेरा कीआ मीठा लागै"* का उच्चारण करते हुए शहादत का जाम पी लिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जब ग्वालियर के किले में कैद थे, उन्होंने जेल का खाना खाने से इंकार कर दिया और कहा कि वे कर्मठ सिक्ख के हाथों से बना भोजन ही स्वीकार करेंगे।

परिश्रम के द्वारा कमाई आजीविका से शरीर पवित्र होता है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने भी धर्मशालाओं में इकट्ठा हुआ पूजा का धन खाने की मनाही की थी।

अनुचित ढंग से कमाया धन बुद्धि और मन को मलीन करता है। कड़े परिश्रम द्वारा नेक कमाई करने के इस सिद्धांत ने पंजाबियों की मानसिकता को खूब घड़ा है। उन्हें स्वावलंबी, आत्मविश्वासी और स्वाभिमानी बना दिया है। उन्हें रूखी-सूखी मंजूर है, पर किसी के आगे हाथ पसारना, मांगना उन्हें मंजूर नहीं :

रुखी सुखी खाई कै ठंडा पाणी पीउ ॥

फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥
(पन्ना १३७९)

किसी अच्छे धंधे को अपनाकर कड़े परिश्रम द्वारा जीविका-अर्जन करना, रूखी-सूखी खाकर गुज़ारा कर लेना, यह शिक्षा हमें शेख़ फरीद जी के जीवन से मिलती है। अपने पैरों पर खड़े न होने, काम से जी चुराने, किसी के सहारे जीने की आशा रखने को शेख़ फरीद जी फटकारते हैं :

धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥
(पन्ना १३७९)

सिक्ख जंगल में मंगल बना देते हैं, रेगिस्तानों के सीने चीरकर दरिया बहा देते हैं। मेहनत और परिश्रम के द्वारा उन्नति के शिखर को छुआ जा सकता है, यह उन्हें खूब मालूम है। शेख़ फरीद जी के सलोक में भी यही संदेश छुपा हुआ है कि मेहनत छोड़कर किसी के दर पर जाकर बैठना परमात्मा किसी को न दे :

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥
(पन्ना १३८०)

हाथों-पैरों से काम करने से जहां शरीर स्वस्थ होता है वहां इंसान मानसिक शुद्धि को भी प्राप्त करता है। गुरु साहिबान ने स्वयं कर्म का जीवन जीकर दिखाया। उन्होंने नगरों को बसाया, धर्मशालाओं का निर्माण किया, किले बनाए। इन निर्माण-कार्यों में संगत बढ़-चढ़कर भाग लेती। संगत और पंगत की सेवा ने सिक्खों को कर्म करने के सिद्धांत का क्रियात्मक अनुभव प्रदान किया। संगत के लिए लंगर तैयार करना, लंगर छकाना, पानी पिलाना, पंखा झुलाना, फर्श साफ करना, जोड़े (जूते) साफ करने इन कामों को करने में प्रत्येक सिक्ख अपना अहोभाग्य समझता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उस व्यक्ति के हाथों से पानी पीने से इंकार कर दिया था जिसने अपने हाथों से कभी काम नहीं किया था। बाबा बंदा सिंघ बहादर समाज से दूर तपस्वी जीवन व्यतीत कर रहे थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उनके पास गए और उन्हें इस निरर्थक जीवन की निस्सारता बतलाई। उन्होंने उन्हें परामर्श दिया कि वे अपनी शक्ति और ताकत को व्यर्थ न गंवाएं, बल्कि मानवता की सेवा के लिए इसका सदुपयोग करें। अकर्मण्यता के जीवन से गुरु जी उन्हें कर्मण्यता के जीवन की ओर ले आए। वे पंजाब आये, फौज इकट्ठी की और इतिहास का मुंह मोड़कर रख दिया। इतिहास के पन्नों में कर्म के आदर्श जीवन के आधार पर उनका नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है।

गुरु साहिबान ने अपने शिष्यों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनके औद्योगिक, व्यापारिक विकास के लिए प्रयत्न किए। उन्होंने नए नगरों को बसाकर अपने शिष्यों को अनेक काम-धंधों द्वारा जीविका कमाने में सुअवसर प्रदान किए। इस दिशा में श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी की देन विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने श्री अमृतसर शहर को बसाकर ५२ अलग-अलग व्यवसायों के व्यापारियों, को बसाया ताकि व्यापारिक उन्नति हो। प्रत्येक धर्म और कर्म के लोगों को इस नगर में बसाया, ताकि कृषि, व्यापार, उद्योग आदि धंधे प्रफुल्लित हों। गुरु साहिबान के इन प्रयासों ने सिक्ख कौम को एक सुदृढ़ आर्थिक आधार प्रदान किया। कोई भी काम छोटा नहीं समझा जाता था। कड़े परिश्रम द्वारा जीविका कमाना पंजाबी सभ्याचार का अंग बन गया। परिश्रम और लगन द्वारा मनुष्य किसी भी क्षेत्र में शिखर तक पहुंच सकता है।

गुरु साहिबान की शिक्षा के कारण कड़े परिश्रम द्वारा जीविका कमाने के लिए पंजाबी संसार भर में प्रसिद्ध हैं। गुरु साहिबान ने अपने शिष्यों को परदेसों में जाकर व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित किया। सिक्ख काबुल, कंधार तक घोड़ों के व्यापार के लिए जाने लगे। गुरु साहिबान की शिक्षा के फलस्वरूप अपने परिश्रमी स्वभाव के कारण पंजाबियों ने हरित-क्रांति लाकर पंजाब को भारत का अन्न-भंडार बना दिया है। विदेशों में भी आर्थिक विकास में उनका भारी योगदान है। सिक्ख संसार के किसी भी कोने में जाकर अपने परिश्रमी स्वभाव, निडरता और साहस के कारण अपने स्थान बना लेते हैं। विदेशों में साऊथहाल जैसे अनेकों नगर 'मिन्नी पंजाब' लगते हैं। कैलिफोर्निया निवासियों के अनुसार सिक्खों ने उनके जंगलों को फूलों के बागों में बदल दिया है। कनाडा की खुशहाली में पंजाबियों का विशेष योगदान है। अमेरिका के प्रेज़ीडेंट ओबामा का कथन है कि अमेरिका के आर्थिक विकास में सिक्खों का विशेष योगदान है। सिक्खों की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाने में वे अपना गौरव समझते हैं। जहां भी सिक्ख जाते हैं अपनी काबलियत का परचम लहरा देते हैं। यूं ही पंजाबियों को धरती का पुत्र नहीं कहा जाता!

छोटा घल्लूघारा *(पृष्ठ १७ का शेष)*

की फौज ने दांतों तले उंगलियां दबा लीं। दुश्मन की फौज से लोहा लेते हुए सिक्ख योद्धा रावी पार करके फिर इकट्ठे हो गए। इसके बाद माझा क्षेत्र से होते हुए हरी के पत्तण के रास्ते सतलुज पार करके बराड़ों के गांवों में चले गए। सरदार सुक्खा सिंघ माड़ीकंबो के साथ लगभग दो हज़ार सिक्ख थे। उन्होंने जैतो जाकर अपने कमरकस्से खोले। स. सुक्खा सिंघ माड़ीकंबो के जख़्मों को भरने में पांच महीने का समय लगा। इसके बाद यह वीर योद्धा फिर अपने फर्ज को अंजाम देने के लिए रुचित हो गया।

इस घल्लूघारे में लगभग दस हज़ार सिक्ख शहीद हो गए। लखपत राय ने इसके बाद भी सिक्खों के कत्लेआम की मुहिम जारी रखी। १७४७ ई में जब अहमदशाह अब्दाली लाहौर आया तो फिर से देश में गड़बड़ हो गई। सिक्ख जंगलों से बाहर निकलकर दुश्मनों से लोहा लेने लगे और उन दरिंदों को भी सबक सिखाने लगे, जिन्होंने लालच में आकर मुखबरी करके सिक्खों का कत्लेआम करवाया था। ऐसे लोगों में चौधरी भी शामिल थे।

सहायक पुस्तकें :

१. करम सिंघ हिस्टोरियन : इतिहासक खोज
२. प्रिं. सतिबीर सिंघ : साडा सिक्ख इतिहास

तंबाकू-जनित पदार्थों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

तंबाकू-उत्पादन का आरंभ और विकास : तंबाकू की खेती ईसा पूर्व ६,००० में पहली बार मेक्सिको में शुरू हुई। सन् १४९२ ईस्वी में क्रिस्टोफर कोलंबस का बेड़ा क्यूबा से तंबाकू के बीज यूरोप ले गया। आठ साल बाद ही तुर्क लोग तंबाकू को मिस्र **(Egypt)** ले गए और तभी से मध्य एशिया में इसकी पैदावार होने लगी। सन् १५३० में जापान तथा फिलिपीन्स के जरिए तंबाकू के बीज चीन में पहुंचे। सन् १५६० में पुर्तगाल तथा स्पेन के व्यापारी पूर्वोक्त स्थानों से तंबाकू के बीज अफ्रीका में ले गए। सन् १६०० ईस्वी में पुर्तगाली व्यापारी ये बीज भारत में, विशेषत: गोआ में लाए। गोआ में तंबाकू के उत्पादन से लाभ होता देखकर भारत के अन्य भागों में भी इसकी खेती होने लगी। अब भारत तंबाकू पैदा करने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश है और यहां हर वर्ष लगभग ५ लाख टन तंबाकू का उत्पादन होता है।

तंबाकू-जनित रोग : कैंसर रोग विशेषज्ञों के अनुसंधान के अनुसार संसार में प्रतिवर्ष ४० लाख व्यक्ति तंबाकू से पैदा होने वाली घातक बीमारियों का शिकार होकर मौत के मुंह में समा जाते हैं। वर्ष २००० ई में दक्षिण एशिया (जिसमें भारतवर्ष भी आता है) लगभग १२ लाख व्यक्तियों को कैंसर-ग्रस्त पाया गया। इनमें से एक लाख लोग संसार छोड़ गए। चिकित्सा-शोधकों का अनुमान है कि सन् २०२० तक कैंसर के रोगियों की संख्या ९० लाख तक पहुंच जाएगी।

सिगरेट पीने के अलावा भारत में अन्य तरीकों से तंबाकू का सेवन करने वाले व्यक्तियों में ३१ मार्च, २००९ ई. तक लगभग ४ लाख व्यक्ति १५ वर्ष से कम उम्र वाले बालक और किशोर थे। बड़ी अवस्था के लोगों, युवकों तथा वृद्धों की संख्या तो १५ करोड़ से भी अधिक थी। लगभग ५० प्रतिशत भारतीय महिलाएं तंबाकू का सेवन सिगरेटनोशी के अतिरिक्त, जर्दे, नसवार तथा गुटखा आदि के रूप में करती हैं।

वस्तुत: जो व्यक्ति दिन भर में सिगरेट की एक डिब्बी पी जाते हैं, उन्हें सिगरेट तथा अन्य तंबाकू-निर्मित पदार्थों से परहेज़ करने वाले व्यक्तियों की तुलना में कैंसर होने की संभावना २० गुणा अधिक होती है।

विश्व की विभिन्न प्रयोगशालाओं में शोध के पश्चात चिकित्सकगण इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि तंबाकू में ४३ ऐसे विषैले तथा हानिकारक तत्व पाए जाते हैं जो कैंसर नामक रोग के बीज ही नहीं बोते प्रत्युत उस प्रक्रिया को बढ़ाने में मुख्य भूमिका भी निभाते हैं। ऐसे तत्वों में से कार्सिनोजन टी. एस. एन. ए. फेफड़े, गले, मुंह, खाने की नली तथा अग्न्याश्य का कैंसर उत्पन्न करता है। हाड्रोकार्बन मूत्राशय का कैंसर उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। बेंजीन के कारण रक्त-कैंसर की संभावना बढ़ जाती है। तंबाकू में पाया जाने वाला मुख्य तत्व निकोटिन होता है, जो कि तंबाकू के प्रयोग की लत पैदा करता है।[१] जोधपुर (राजस्थान) के एम. डी. एम. अस्पताल में आने वाले कैंसर रोगियों के बारे में वहीं के एक डॉक्टर ने निम्नलिखित तथ्य पेश किए हैं, यथा :

**बी-१८०१, प्लाट नं. १०६, तुलसी सागर हाऊसिंग सोसाइटी, सेक्टर-२८, नेरूल, नवी मुंबई-४००७०६, मो ०२२-२७७२९६९६*

मथुरादास माथुर अस्पताल में हर साल पांच हज़ार कैंसर पीड़ित व्यक्ति पहुंचते हैं। उनमें पुरुषों और महिलाओं का अनुपात ३:२ है। शहरी क्षेत्र से आने वाले अधिकतर लोग गुटखा खाने और सिगरेट पीने की वजह से कैंसर का शिकार होते हैं। ग्रामीण तबके के लोग बीड़ी, सिगरेट, गुटखे के अलावा तंबाकू का मंजन और नसनी (तंबाकू सूंघना, नसवार लेना) का सेवन करने से इस रोग की चपेट में आ जाते हैं। तंबाकू सेवन से मुख्यत: मुंह और गले का कैंसर होता है। इसके अलावा जीभ, तालू, गाल, भोजन नली, आमाशय, गुर्दा, मूत्राशय का कैंसर भी हो सकता है। कैंसर के अलावा फेफड़ों की बीमारी, अस्थमा (दमा), हृदय रोग, क्रॉनिक ब्रॉड़काइटिस (भोजन की नली का कैंसर) और सी. आई. पी. डी. होने की आशंका भी रहती है।[२]

सिगरेट पीने से फेफड़ों, सिर और गले में कैंसर के अतिरिक्त भुलक्कड़पन रोग होने के बारे में भी अमेरिका के डॉक्टरों को प्रमाण मिले हैं।[३] सिगरेट तथा तंबाकू से बनी अन्य चीज़ों का सेवन बचपन अथवा किशोरावस्था से करने वालों की हड्डियां ३० वर्ष की अवस्था में ही घिसने लगती हैं। ऐसे भी प्रमाण भारतीय डॉक्टरों को मिले हैं।[४]

स्त्रियों पर तंबाकू का कुप्रभाव : इंग्लैंड के दो चिकित्सा शास्त्रियों ने बहुत-से देशों में हृदय रोग से पीड़ित रोगियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने देश की चिकित्सा विज्ञान संबंधी पत्रिका **'दि लेंसट'** (British Medical Journal 'The Lancet') में लिखा है कि अमेरिका में दो करोड़ तीस लाख स्त्रियां, चीन में एक करोड़ तीस लाख स्त्रियां और भारत में एक करोड़ स्त्रियां सिगरेट पीती हैं। इस प्रकार भारत का स्त्री समाज धूम्रपान करने वालों में तीसरे स्थान पर आता है। भारत में प्रतिवर्ष डेढ़ लाख महिलाएं इसी कारण धरती से कूच कर जाती हैं। धूम्रपान की अवस्था में वे अनेक मनोवैज्ञानिक रोगों का शिकार बनी रहती हैं।[५]

अमेरिका की कैंसर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित **'कैंसर'** नामक पत्रिका में जोशुआ मस्कट नामक डॉक्टर ने अपने लेख में लिखा है कि जो स्त्रियां या पुरुष सुबह सोकर उठते ही सिगरेट पीना शुरू कर देते हैं, उनके शरीर में निकोटिन तथा तंबाकू के विषैले तत्व उन लोगों की अपेक्षा शीघ्र कुप्रभाव डालने लगते हैं जो कि सोकर उठने से आधा घंटा अथवा कुछ अधिक समय तक इससे दूर रहते हैं।[६]

फ्रांस में ३५ से ५५ वर्ष की अवस्था के स्त्री-पुरुषों की धूम्रपान की आदतों का अध्ययन करने वाले डॉक्टर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इस आदत से स्मृति संबंधी समस्याएं बढ़ जाती हैं और बहुत-से लोगों की श्रवण-शक्ति भी घटने लगती है। ऐसा स्त्रियों में अधिक पाया गया है।[७] ऐसे ही तथ्य किंग्स कॉलेज, लंदन के डॉक्टरों ने प्रस्तुत किए हैं।[८]

अमेरिका में सन् २००२ में कैंसर रोग से मरने वालों की स्थिति का अध्ययन करने के पश्चात न्यूयॉर्क से प्रकाशित "The Journal of National Cancer Institute" में डॉ स्दीवेन वोलोशिन ने लिखा है कि चालीस वर्ष अथवा उससे बड़ी उम्र की औरतों के फेफडों के कैंसर अथवा हृदय रोग से मरने का खतरा छाती के कैंसर की तुलना में अधिक रहता है।[९]

इंग्लैंड की यॉर्क यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता चिकित्सक का मत है कि जो स्त्रियां गर्भावस्था में धूम्रपान करना छोड़ देती हैं उनके बच्चे अधिक प्रसन्नचित्त तथा समझौतावादी होते हैं, जबकि इसकी लत बने रहने वालियों के बालकगण चिड़चिड़े स्वभाव वाले होते हैं।[१०] उनका रक्त-चाप १५ प्रतिशत अधिक रहता है; जो बालक के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।[११] धूम्रपान करने

वाली महिलाओं के गर्भपात की संभावना भी बढ़ जाती है।[१२]

किशोरों और युवकों की लत : अमेरिका में सिगरेटों की कीमत लगभग डेढ़ दशक से बढ़ जाने के कारण वहां के १२-१७ वर्ष के किशोरों ने ज़र्दे और नसवार का प्रयोग शुरू कर दिया है। वहां के नशीले पदार्थों के कुप्रभाव और मानसिक स्वास्थ्य विभाग के अनुसार सन् २००० की अपेक्षा सन् २००७ में ऐसा नशा करने वालों की गिनती बढ़कर ५ लाख ६६ हज़ार हो गई।[१३] भारत के गांवों में खेतों में काम करने वाले किशोर और युवक अधिकतर बीड़ी और ज़र्दे का प्रयोग करते हैं। बड़े शहरों के होटलों में तो 'हुक्का बैठक कक्ष' भी बन गए हैं। अपने घर पर माता-पिता के भय के कारण नशीले पदार्थों का सेवन न करने वाले महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी अब अपनी तलब मिटाने के लिए अपने पुरुष मित्रों एवं सहपाठी सहेलियों के साथ होटलों में हुक्का बैठकों में शाम को एकत्रित हो जाते हैं। मुंबई (महाराष्ट्र) में तो ऐसे हुक्का दीवानखानों का जाल ही बिछ गया है। यहां की धूम्रपान विरोधी समाज-सेवी संस्थाओं तथा मुंबई नगर पालिका परिषद के प्रेरित करने पर परिषद की महिला अध्यक्ष ने जब ऐसे हुक्का दीवानखानों पर अपने कर्मचारियों को साथ लेकर छापा मारा तो वहां पर महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के ही नहीं, बल्कि स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालक भी हुक्का पीते दिखाई पड़े।[१४] हुक्के की चिल्म के धुएं से प्रभावित इन स्कूली बच्चों के चेहरों पर घबराहट छाई हुई दिखाई पड़ी। वहां हुक्के में जलाए गए मसाले का जब प्रयोगशाला में परीक्षण किया गया तो उसमें निकोटिन, टार तथा कार्बन मोनोआक्साइड जैसे विषैले तत्व पाए गए।[१५]

मथुरादास माथुर अस्पताल, जोधपुर के डॉ. डी. पी. पुनिया, विभागाध्यक्ष रेडिएशन ऑरङ्कोलॉजी विभाग ने अपने एक लेख में युवा एवं किशोर कैंसर रोगियों की बढ़ती संख्या के बारे में निम्नलिखित सूचनाएं दी हैं :

"तंबाकू जनित पदार्थों तक युवाओं की पहुंच जैसे-जैसे बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे हॉस्पिटल में कैंसर रोगियों की हिस्ट्री में भी उनका नाम जुड़ता जा रहा है। कैंसर रोगियों में अब २० से २५ फीसदी युवा शामिल हैं, जिन्होंने १५ से २० साल पहले तंबाकू का सेवन शुरू किया था और परिणाम अब सामने आ रहा है। हमारे विभाग में दस साल पहले तक चालीस साल की उम्र पार के कैंसर रोगियों के नाम ही रजिस्टर में दर्ज हुआ करते थे। पिछले पांच साल के मुकाबले अब यहां आने वाले मरीज़ों में से तीस प्रतिशत युवा होते हैं, जो सिगरेट या गुटखे का नियमित सेवन करते हैं। दरअसल तंबाकू धीरे-धीरे अपना असर बताता है। आजकल स्कूल जाने वाले किशोर भी तंबाकू की लत का शिकार हो जाते हैं।

जब कोई व्यक्ति तंबाकू का सेवन करता है तो उसमें मौजूद निकोटिन सहित चार हज़ार अन्य हानिकारक रसायन आङ्को जीन्स को सक्रिय करने का कार्य करते हैं, उसका परिणाम 'कैंसर रोग' होता है।[१६]

दूसरों के धूम्रपान का कुप्रभाव : स्कॉटलैंड में सन् १९९८ तथा सन् २००३ में लगभग २५९५ धूम्रपान करने वाले और ५,५६० इससे परहेज़ करने वाले व्यक्तियों के स्वास्थ्य का परीक्षण करने पर यह तथ्य सामने आया है कि धूम्रपान करने वालों में परहेज़गारों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक उदासी अधिक होती है। परहेज़गार यदि उनके तंबाकू सेवन के समय पास बैठते हैं तब भी स्वयं बचने के बावजूद तंबाकू के प्रयोगकर्त्ताओं के धूम्रपान के कारण वे प्रदूषण से बच नहीं पाते, क्योंकि सामान्य स्थिति से यह प्रदूषण डेढ़ गुणा अधिक होता है। इसका मुख्य कारण तंबाकू

में विद्यमान निकोटिन होता है।[१७]

अमेरिका में विवाहित दंपतियों पर परीक्षण करने से ये तथ्य सामने आए हैं कि जिस स्त्री ने कभी धूम्रपान न किया हो और उसका विवाह धूम्रपान करने वाले व्यक्ति से हो जाए तो उसे गुर्दे का कैंसर, अधशीशी दर्द वाला कैंसर, सांस की नली में रुकावट तथा दिल की बीमारी होने का भय रहता है। ऐसा ४२ प्रतिशत स्त्रियों में पाया गया। जो स्त्री विवाह से पहले तंबाकू सेवन करती रही हो और फिर इस लत को छोड़ देने पर भी धूम्रपानकर्ता व्यक्ति की जीवन-साथिन बन जाए, उनमें से ७२ प्रतिशत स्त्रियां ऐसी होती हैं जो उपर्युक्त रोगों का शिकार हो जाती हैं।[१८]

मेक्सिको में गर्भवती स्त्रियों के बारे में ये तथ्य सामने आए हैं कि यदि वे इस अवस्था में धूम्रपान करती हैं तो उनके बच्चे चिड़चिड़े होंगे।[१९] भारत में भी यह पाया गया है कि धूम्रपान करने वाले माता-पिता अथवा दोनों में से एक की लत के कारण उनके बच्चों को सांस की बीमारियां, विशेषत: इंफ्लूएंजा का रोग सर्दी के मौसम में अधिक होता है।[२०] घरों में अथवा होटलों में भोजन करने गए परहेज़गार लोगों को तंबाकू के धुएं के प्रदूषण के कारण इस प्रकार के रोगों की संभावना रहती है, क्योंकि तंबाकू के धुएं में ४०० निकोटिन तत्व विद्यमान रहते हैं।[२१] इससे मनुष्य की घ्राण-शक्ति तथा स्वाद मंद पड़ जाते हैं।[२२]

सरकारी और गैर-सरकारी कार्यालयों के कर्मचारी अपने इसी शौक में कार्यकाल का लगभग आधा घंटा प्रतिदिन गंवा देते हैं। लगभग ८१ प्रतिशत भारतीय कर्मचारियों ने यह बात स्वीकार की है। कार्य-कक्ष में परहेज़गारों पर धूम्रपान करने वालों की लत से बचाने के लिए भारत सरकार ने २ अक्तूबर, २००८ ई को एक अधिनियम लागू किया था, जिसका शत-प्रतिशत पालन अब भी कई कार्य-स्थलों पर नहीं हो रहा। अत: भारत में स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले तंबाकू संबंधी १४वें विश्व सम्मेलन में भारत के तत्कालीन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री ए. रामदोस ने यह घोषणा की थी : "हम ऐसा नियम शीघ्र ही बना रहे हैं कि जिन गैर-सरकारी कंपनियों में धूम्रपान-मुक्त क्षेत्र नहीं होगा उन्हें सरकारी कार्य का ठेका प्राप्त करने हेतु अपनी शर्तें रखने का अधिकार नहीं होगा।"२३.

संदर्भ-सूची :

1. डॉ. अजय बापना : तिनका तिनका ज़िंदगी (राजस्थान पत्रिका, जोधपुर, ३१ मई, २००९)

2. डॉ. डी. पी. पुनिया : कैंसर की कतार में युवा (राजस्थान पत्रिका, जोधपुर, १ जून, २००९)

3. Bombay Times (The Times of India, Supplement of Bombay Edition), 2 March, 2008.

4. Mumbai Mirror (The Times of India, Supplement of Bombay Edition), 29 January, 2013.

5. The Times of India, Mumbai, August 12, 2011.

6. Ibid, August 9, 2011. 7. Ibid, June 11, 2008.

8. Ibid, Nov. 26, 2012. 9. Ibid, June 12, 2008.

10. Ibid, March 15, 2008. (Stop Smoking for Happier Babies)

11. Mumbai Mirror, March 4, 2008.

12. Ibid, February 21, 2008.

13. The Times of India, Mumbai, March 6, 2009.

14-15. Ibid, June 25, 2008.

16. राजस्थान पत्रिका, जोधपुर, १ जून, २००९.

17. The Times of India, Mumbai, June 13, 2006.

18. Ibid, July 30, 2008. 19. Ibid, March 16, 2008.

20. Mumbai Mirror, July 26, 2008.

21. The Times of India, Mumbai, March 7, 2009.

22. (a) Advertisement under "Express Social"; The Tribune, Chandigarh Newsline, May 20, 1998.

(b) पंजाब केसरी, जलंधर; २८ मई, २००८.

(c) डॉ. नवरत्न कपूर, खालसा पंथ : विकास-यात्रा और मानव हितैषी आदर्श, पृष्ठ ११८-११९ (इंडो प्रिंटर्स, पटियाला), सन् २००३

23. The Times of India, Mumbai, March 10, 2009.

स्वस्थ शरीर का दुश्मन : नशा

*-स. गुरदीप सिंघ**

नशे समाज को खोखला, दुखी बनाने के साथ-साथ वातावरण को भी खराब कर रहे हैं। नशों के कारण ही अपराध बढ़ते हैं। अपराधों पर नज़र डाली जाए तो प्रत्येक चोरी, लूट-मार, बलात्कार और हत्या के पीछे अधिकतर नशों की लत ही सामने आती है।

नशे का भाव है अपने आप को भुला देना; शोक, बुरी आदत, स्वाद। नशे के कारण मनुष्य के शरीर में एक ऐसी तेज क्रिया उत्पन्न होती है जिससे नशा करने वाला अपने आप से, अपने आस-पास से, अपनों से और बुरे-भले परिणामों से बेख़बर होकर अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। उसे यह एहसास ही नहीं होता कि वह गलत कर रहा है या ठीक।

नशा करने के कारण : नशा करने के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक कारण हैं :

१. आराम महसूस करने के लिए
२. चिंता और गम भुलाने के लिए
३. मित्रों के दबाव में आकर या फिर उनका साथ देने के लिए
४. (ड्राइवरों में) ध्यान-शक्ति बढ़ाने के लिए
५. गुस्सा तथा कमज़ोरियों से राहत पाने के लिए
६. देखा-देखी में . . . इत्यादि।

नशा करने वालों के लक्षण :

१. भूख न लगना, खाने-पीने का गलत समय
२. अकारण ही गुस्सा आना
३. हर समय खांसी-जुकाम होना
४. हाथ-पांव ठंडे होना या फिर गर्म लगना
५. नींद न आना, रात को देर तक जागना
६. बिना कारण वज़न घटना या बढ़ना
७. दिल की धड़कन बढ़ना
८. ज्यादा पसीना आना, घबराहट होना, चेहरा पीला पड़ना, चेहरे का लाल होना
९. आंखों से पानी आना
१०. टीके के निशान बाजू के निचले हिस्से में होना या पैरों के तले में होना
११. स्वभाव में परिवर्तन आना
१२. बिना कारण पैसे मांगना, चोरी करना, घर का कीमती सामान बेचना
१३. शक करना
१४. अकेले रहना, परिवार से कटे रहना
१५. हमेशा उदास रहना
१६. मुख से नशे की वस्तुओं या शराब की बदबू आते रहना
१७. चक्कर आना, सिर भारी होना
१८. बातों को छुपाना, झूठ बोलना
१९. हाथों तथा दांतों पर दाग पड़ना
२०. लड़ाई-झगड़े में पड़ना, कानून को हाथ में लेना
२१. अचानक दोस्त बदलना, देर रात तक फोन पर बातचीत होना
२२. धुंधलापन लगना, ठीक से दिखाई न देना

मानव शरीर पर नशों का बुरा प्रभाव :

१. नशा करने से दिमाग की खून की नाड़ियां बंद हो जाती हैं।
२. नज़र कमज़ोर और अंधेपन की संभावना

***३०२, किदवई नगर, लुधियाना-१४१००८ मो ९८८८१-२६६९०*

बढ़ जाती है।
३. श्वास नली में सूजन और फेफड़े फूल जाते हैं; आक्सीजन की जगह ज़हरीली गैस शरीर के अंदर प्रवेश कर जाती है।
४. हृदय की धमनियां कमज़ोर पड़ने लगती हैं और सांस फूलने लगती है।
५. दिल का दौरा पड़ना, उच्च रक्त-चाप होना, और अचानक मौत भी हो सकती है।
६. गुर्दे खराब हो जाते हैं या उन पर बुरा असर पड़ता है।
७. पाचन-शक्ति कम हो जाती है और बदहज़मी हो जाती है।
८. गुर्दों में विकार आने से पेशाब ज्यादा आने लगता है।
९. टांगों में कमज़ोरी आ जाती है।
१०. पुरुष नपुंसक भी हो सकता है।
११. गर्भ में पल रहे बच्चे पर बुरा असर पड़ता है।
१२. नींद में बाधा पड़ती है।
१३. नशा करने वाला अपने परिवार और समाज से कटा हुआ रहने लगता है।

नशे :

शराब : यह नैतिक गिरावट लाकर इंसान की बुद्धि भ्रष्ट करती है। शारीरिक तौर पर बहुत नुकसान पहुंचाती है। शराब का लगातार प्रयोग मानसिक परेशानियों का कारण बन जाता है। इसके सेवन से हाथ-पांव कमज़ोर, अमाशय का कैंसर, भूख कम लगना, खून का दबाव घटना, दिल का दौरा पड़ना, नज़र व गुर्दे कमज़ोर हो जाते हैं।

अफीम/चरस/डोडे/गांजा : ये सारे नशे एक समान हैं। अफीम पीले या मटमैले रंग में आती है। इसका स्वाद कड़वा होता है। इसमें किसी प्रकार की सुगंध या दुर्गंध नहीं होती। अफीम कब्ज करती है; पाचन-शक्ति कम करती है। श्वास रोग, आंतों का रोग, दिल की धड़कन, शरीर में ऐंठन आना, पागलपन आदि समस्याएं इससे पैदा होती हैं। अफीमची को यदि अफीम न मिले तो मौत भी हो सकती है। इसे लेने वाले लोग आराम और खुशी का अनुभव करते हैं। इसके लगातार प्रयोग से सहन-शक्ति कम हो जाती है। कई बार दर्द का अनुभव ही नहीं होता, जो आगे जाकर किसी भयंकर बीमारी का रूप ले लेता है। इसकी और भी किस्में हैं जो मिलावट करके दी जाती हैं। ये अफीम व डोडे से थोड़ी घटिया होती हैं, जैसे पोस्त और भुक्की।

भांग : यह एक प्रकार का नशा है जो पेड़-पौधों में पैदा होता है। होली के पर्व पर काफी लोग इस नशे का सेवन दूध, लस्सी और पकौड़ों आदि में करते हैं। भांग बातूनी और सुस्त बनाती है, फेफड़े खराब करती है, दिमागी संतुलन बिगाड़कर पागल करती है। खून के लाल कणों की कमी, रंग काला, नज़र कमज़ोर, शरीर का कोई भी अंग खराब कर सकती है।

स्मैक/हैरोईन/मोरफिन/सोरफिन : ये सारे नशे एक प्रकार के होते हैं। ये खेतों में फूलों (बिना खिले हुए) से मिलते हैं। ये सारे पदार्थ दर्द को रोकने के लिए दवाइयों में प्रयोग किए जाते हैं। कुछ लोग इन्हें नशे के रूप में लेते हैं।

स्मैक रसायन पदार्थ में मिलाकर बनता है, जिसका रंग ब्राऊन (भूरा) होता है। यह सबसे महंगा नशा है। इसे लेने वालों को अन्य नशीले पदार्थ मिलाकर बेचा जाता है। यह नशा कागज पर रखकर नाक द्वारा सूंघा जाता है।

हैरोईन सफेद रंग की होती है। यह मोरफिन और सोरफिन से मिलती-जुलती है। यह इंजेक्शन द्वारा ली जाती है।

तंबाकू : तंबाकू में निकोटिन के अलावा अन्य कई प्रकार के खतरनाक रासायन पाए जाते हैं, जो खांसी, कैंसर, हड्डियां टूटने के रोग, दिल के रोग, वातावरण में प्रदूषण के अलावा उम्र कम करते हैं।

सिगरेट : सिगरेट पीना एक नशा है, जो शरीर को धीरे-धीरे खत्म कम देता है। कुछ समय बाद सिगरेट का नशा केवल कैंसर ही नहीं बनता बल्कि अन्य बीमारियों को भी न्यौता देता है, जैसे कि गुर्दे और फेफड़े खराब करना, दांतों और मुंह में छाले बनना, गला खराब होना आदि।

गुटखा : यह पान, सुपारी, कत्था, चूना और तंबाकू को मिलाकर एक प्रकार का बना हुआ सूखा पाऊडर है। यह बहुत ही ज़हरीला पदार्थ है। गुटखा मुख, जीभ और गलफड़े का कैंसर बनाने में सक्षम है।

पान-मसाला : गुटखे की तरह पान-मसाला ज़हरीली और नशीली वस्तुओं का पाऊडर है। पान-मसाला खाने से मुंह में कालेजन बनता है जिससे मुंह के अंदर की कोमल कोशिकाएं सख़्त हो जाती हैं और मुंह सिकुड़ने लगता है। धीरे-धीरे मुंह पूरी तरह से बंद हो जाता है। इस अवस्था को 'सब मियुकस फाईबरोसिस' कहते हैं। पान-मसाला तैयार करने वाली कंपनियां इसमें खतरनाक चीजें, नकली सुपारी, मयुटाजेन, गैमबियर, सैकरीन, अल्मीनियम वर्क, सस्ते रंग, रेत आदि मिला देती हैं। यह स्वास्थ्य के लिए अति खतरनाक है। कत्थे के स्थान पर गैमबियर चमड़ा रंगाई का खतरनाक रासायण है, जिससे नपुंसकता की शिकायत हो सकती है। चांदी वर्क की जगह अलमीनियम वर्क मैंथाल कैंसर पैदा करने का मुख्य तत्व है। विशेषज्ञों के अनुसार एक बार फाईबरोसिस की शिकायत हो जाने पर दवाइयों से कंट्रोल नहीं हो पाता।

ड्रग्ज़ : यह गोली, कैप्सूल, पाऊडर, सिरप आदि के रूप में मिलता है। टीके द्वारा नशा बीमारी का घर है। एक दूसरे का टीका प्रयोग में लाने से एच. आई. वी. या एड्स हो सकती है। अन्य परेशानी, जैसे सांस लेने में कठिनाई, शरीर के दाग या ज़ख़्म की तकलीफ, नींद न आना आदि।

अन्य नशे : इनके अतिरिक्त लोग टुथपेस्ट या आयोडेक्स का नशा भी करते हैं। केवल गरीब व्यक्ति को ही नहीं बल्कि अमीरों को भी इस नशे की लत लग जाती है। लोग आयोडेक्स को ब्रेड में लगाकर खाते हैं। कुछ टुथपेस्ट और माऊथफ्रेश लेकर ही अच्छा अनुभव करते हैं। इन सबसे पेट की बीमारी ही नहीं बल्कि दिमागी संतुलन भी बिगड़ जाता है।

इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥

-डॉ. मधु बाला*

यह अटल सच्चाई है कि व्यक्ति के खान-पान का मन, बुद्धि, वचन, धर्म और स्वास्थ्य पर निश्चित प्रभाव पड़ता है। युवा पीढ़ी का स्वच्छंद आचरण, संस्कारहीनता एवं दिनचर्या, परिवेश उसे पतन के गर्त में धकेल रहे हैं। दूषित, तामसी एवं बासी भोजन का भी ग्रंथों में निषेध किया गया है, क्योंकि ये मन को विकृत करने वाले हैं। किसी प्रकार का नशा चाहे खाने वाला, पीने वाला अथवा सूंघने वाला हो, वह शरीर के लिए अत्यंत हानिकारक होता है। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है :

जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन।
जैसा पीवे पानी, वैसी होवे वाणी।

नशा शरीर में शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता पैदा करता है, जो नैतिक मूल्यों की दुर्बलता का जनक भी बनता है। धर्म-ग्रंथों में जिन विकारों को दूर करने की पुन:-पुन: प्रेरणा दी जाती है वे हैं-- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। प्रत्येक विकार अकेला भी मनुष्य के विनाश के लिए पर्याप्त है जबकि मद्य इन विकारों को और भी बढ़ावा देकर जीवन का सर्वनाश कर देता है।

धर्म-ग्रंथों में यह भी लिखा मिलता है कि जो विचार कर सकता है, मनन कर सकता है, चिंतन कर सकता है, वो है 'मनुष्य'। मनुष्य केवल एक ही विचार करे कि वह जीवन को सुखमयी बनाना चाहता है अथवा दुखमयी? सुखी जीवन के लिए स्वच्छंदता की नहीं, नियंत्रण की आवश्यकता होती है। पांच कर्मेंद्रियां एवं पांच ज्ञानेंद्रियां मन से ही प्रेरित होती हैं। अत: नियंत्रित मन ही हमारी इंद्रियों को सद्कर्मों में लगा सकता है। जैसे अनियंत्रित घोड़े रथ एवं सारथि को गिरा देते हैं ठीक इसी प्रकार उच्छृंखल मन रूपी घोड़ा शरीर रूपी रथ एवं सारथि रूपी प्राण को भी संकट में डाल देता है।

बुद्धि को भ्रष्ट करने वाले पदार्थों में नशा सर्वोपरि है। आज शराब पीने वाले को (कथित) 'सभ्य' माना जाता है। जहां भी कोई कार्यक्रम हो-- घर, बाहर, कार्यालय अथवा क्लब में, ज्यादातर में मद्य-पान के बिना कोई भी भोजन सम्पन्न नहीं किया जाता। यही चलन आज भारत में चहुं और फैल रहा है। शराब को 'शैतान का रक्त' भी कहा जाता है, क्योंकि मनुष्य मद्य-पान करके मनुष्य नहीं रह जाता, वह अपनी सुध खो बैठता है, अनाप-शनाप बोलता है, उसकी गति-मति सब भ्रष्ट हो जाती है, वह शरीर, मन और वाणी को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। मनुष्य की दीर्घायु के लिए शारीरिक, मानसिक और नैतिक तीनों विकास ही आवश्यक हैं। स्वस्थ और निरोग शरीर ही हमें मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जा सकता है। ज्ञान एवं विद्या के बल से मस्तिष्क की शक्तियों को जागृत करके, अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके ज्ञान-प्रकाश एवं

* # आई-१०९, गली नं. ५, मजीठीया इंकलेव, पटियाला-१४७००५ मो. ९९१४१-९०७२४

तेज को प्राप्त किया जा सकता है।

आहार की शुद्धि से सत्व-शुद्धि, सत्व-शुद्धि से ध्रुव-स्मृति तथा स्मृति की शुद्धि से अविद्या (अज्ञान) की सभी ग्रंथियों का नाश हो जाता है। कार्य का परिणाम भी निश्चित है। यदि अशुद्ध आहार का परित्याग करके शुद्ध आहार को अपनाया जाए तो विचारों की शुद्धता निश्चित है। मनुष्य के चरित्र-निर्माण में संस्कार, कर्म, अनुभव और विचारों का अत्यधिक महत्त्व होता है।

यद्यपि बालक का चरित्र-निर्माण बचपन से ही आरंभ होता है, इसलिए चरित्र की शिक्षा देने का यह उपयुक्त समय होता है। बालक के अधिकतर संस्कार माता-पिता के संस्कारों पर भी निर्भर करते हैं। यदि पिता ही नशों का सेवन करता है तब वह किस अधिकार से अपनी संतान को रोक सकता है? वर्तमान युवा पीढ़ी को सचेत कर सकता है? संतान की कामना करने के साथ-साथ हमें परमात्मा के आगे यह भी प्रार्थना करनी चाहिए कि संतान सुसंतान हो, विनयी और सुशील हो। माता-पिता के श्रेष्ठ चरित्र एवं परमात्मा की कृपा से यदि संतान आज्ञाकारी है तो उसमें अन्य सद्गुणों का प्रवेश होना भी कठिन नहीं है। यदि संतान ही हठी है तो उसे समझाना असंभव हो जाता है। नशा न केवल शरीर में रोग-उत्पत्ति का कारण बनता है, बल्कि इसके कारण वाचिक और मानसिक विकार भी पैदा होते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में नशा-पान का निषेध स्पष्ट रूप से मिलता है। जो व्यक्ति मद्य-पान करते हैं उनका स्वयं पर, स्वयं के द्वारा किए जाने वाले कार्यों पर, अपनी वाणी पर नियंत्रण नहीं रहता। वे अनाप-शनाप, जो भी मुंह में आए बोलते जाते हैं :

- ओह आलु पतालु मुहहु बोलदे जिउ पीतै मदि मतवाले ॥ *(पन्ना ३११)*

- जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥
(पन्ना ५५४)

मद्य-पान से व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, विवेक का नाश होता है, सोचने-विचारने की शक्ति क्षीण हो जाती है तथा अनेक विकारों का उदय हो जाता है :

इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥
(पन्ना ५५३)

मादक वस्तुएं मनुष्य को मद्कारी एवं बुद्धि-नाश की तरफ ले जाती हैं, इसीलिए नशे की वस्तुओं को **'मद्य'** नाम से पुकारा जाता है। भारतीय संस्कारों में, धर्म-ग्रंथों में नशा-पान का निषेध किया गया है।

उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता है कि नशा स्वास्थ्य का, जीवन का, चरित्र का, शरीर, मन और विवेक का शत्रु है। इसका परित्याग प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य है। व्यक्ति-व्यक्ति से मिलकर समाज बनता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को सभ्य, सुंदर, सुशील बनाकर रखे तो सभ्य-सुंदर-सुशील समाज की कल्पना करना संभव हो सकता है।

मेहनत ही सफल जीवन का आधार

-डॉ. रछपाल सिंघ*

विश्व भर में गुरमति मार्ग ही एक ऐसा विलक्षण मार्ग है, जिसमें आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ किरत (श्रम, मेहनत) को मानव जीवन का जरूरी अंग बनाया गया है। गुरु जी का पावन वचन है कि किरत करना सर्वोत्तम गुण है। जो पुरुष हाथों से किरत नहीं करते, दूसरों के घर से मांगकर खाते हैं, उनको ये पंक्तियां संबोधित हैं :

जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥
घरि घरि मागत लाज न लागै ॥ (पन्ना ९०३)

नाजायज़ ढंग से एकत्र की हुई कमाई (माया) गुरमति में प्रवान नहीं है। बेगाना हक खाना, दूसरों का खून पीने के बराबर है :

-- सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥
सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥
(पन्ना १२४३)

-- जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

धर्म का अर्थ ही मेहनती जीवन-ढंग है। ऐसा जीवन परिश्रम से बनता है। निकम्मे लोगों के लिए गुरमति में कोई स्थान नहीं है। एक साखी है कि श्री अनंदपुर साहिब में विराजमान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को प्यास लगी तो उन्होंने पानी का गिलास मांगा। भरे दीवान में से एक नौजवान उठा और पानी का गिलास ले आया। पानी का गिलास पकड़ते समय गुरु जी ने उसके हाथों को देखा। उसके हाथ बहुत ही कोमल थे। गुरु जी ने पूछा, "भाई तुम क्या काम करते हो?" नौजवान ने उत्तर दिया, "गुरु जी! काम करने की कोई जरूरत ही नहीं है। घर में नौकर-चाकर हैं। वही सारा काम करते हैं।" गुरु जी ने उसके हाथों से पानी पीने से मना कर दिया। नौजवान ने विनती की, "गुरु जी! मैं बहुत प्यार से जल लेकर आया था।" गुरु जी ने उतर दिया, "जो मनुष्य अपने हाथों से मेहनत नहीं करते, वे मुरदे के समान हैं। जैसे मुरदे के शरीर के साथ लगी हुई किसी भी वस्तु को कोई नहीं खाता, वैसे ही श्रमविहीन लोगों के हाथ से कोई चीज खाना-पीना ठीक नहीं ।"

जिम मुरदे के अंग अपावन ।
सुकचित सभि नह करहि छुवावन।
सुन सिखा! गुरमति इह सार।
सति संगत की सेव उधार।
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ)

गुरु का सिक्ख बेगानी वस्तु अथवा पराया धन न खाए, रिश्वत न ले, वो अपने हाथों से किरत करे! दसवंध निकालकर धर्म-अर्थ कार्यों में लगाए! फिर गृहस्थ-जीवन के खर्चे निकालकर अगर कुछ बचे तो वो वंड (बांटकर) छके!

सुनि गुर कहओ किरति कर कोई।
धरम समेति त्रिबाहहि सोई।
कपट बिहीन जीवका करै।
पर की वसतु छुपाइ न धरै।
तिस महिं बांट प्रभू हित खावै।

*पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केन्द्र, गुरदासपुर, पंजाब-१४३५२१

तिसि को उर निरमल हुइ जावै।

(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रुति २, अंसू ४५)

दुनिया में बहुत-से मनुष्य हैं जो पूरा दिन मेहनत करते हैं। वे दिन-रात लगे रहते हैं। किसी का हक जायज़-नाजायज़ नहीं देखते। उनका मुख्य लक्ष्य केवल माया (धन) एकत्र करना ही होता है। उनका दिमाग हर समय हेराफेरी, ठगी आदि में लगा रहता है। ऐसी एकत्र की गई कमाई सिक्ख धर्म-मर्यादा के परिसर में नहीं आती। सिक्ख धर्म में मलिक भागो जैसी कमाई प्रवान नहीं, भाई लालो जैसी सच्ची-सुच्ची किरत ही प्रवान है। सिक्ख गुरु साहिबान ने अपने हाथों से किरत की। श्री गुरु नानक देव जी ने खुद अपने हाथों से हल चलाया, खेती की। भक्त कबीर जी ने बुनाई का काम किया :

हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥ *(पन्ना ४८२)*

भक्त नामदेव जी कपड़ों पर छापे लगाने की किरत करते थे। वे मेहनत के साथ-साथ मन में श्वास-श्वास प्रभु-सिमरन में लीन रहते थे :

नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥
काहे छीपहु छाइलै राम न लावहु चीतु ॥
(पन्ना १३७५)

भक्त रविदास जी जूते गांठने की किरत करते थे :

पाण्हा गंढै राह विचि कुला धरम ढोइ ढोर समेटा। *(भाई गुरदास जी, वार १०:१७)*

बिना मेहनत के किसी भी फल की आशा नहीं रखी जा सकती। मंदे काम करके सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। श्री गुरु नानक देव जी का पावन वचन है, "मेहनत करने वाला मनुष्य ही प्रभु-मार्ग का वास्तविक पथिक है। बिना मेहनत के प्रभु-दर से कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। भूखे मुल्लां चढ़ावे की खातिर अपने घर को ही मसजिद बना लेते हैं। निकम्मे लोग योगी बनकर, कान छिदवाकर, उनमें मुंदराएं डाले फिरते हैं। ऐसे लोगों से बचकर रहना चाहिए। प्रभु-प्राप्ति के लिए, वास्तविक साधना-मार्ग, घर-गृहस्थी में रहकर किरत करते हुए, नाम-गुरबाणी में जुड़े रहना है।"

गिआन विहूणा गावै गीत ॥
भुखे मुलां घरे मसीति ॥
मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

गुरु का सिक्ख पूरी मेहनत करके किरत-कमाई करे!

रहितवान गुरसिख है जोई। करि उपाव धन खाटे सोई। *(रहितनामा : भाई देसा सिंघ जी)*

जिन लोगों ने हाथों से किरत की, नाम जपा, सेवा की और अपना पूरा जीवन मानवता की भलाई के लिए अर्पण कर दिया, उनके मुख लोक-परलोक में उजले होते हैं। उनको ही प्रभु-दरबार में सम्मान मिलता है और वे सदीवी अमर रहते हैं :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

मेहनत ही मनुष्य के सफल जीवन का आधार है। सच्ची-सुच्ची किरत, प्रभु-नाम-सिमरन, वंड छकना का सिद्धांत तथा गुरबाणी का उपदेश मनुष्य का लोक-परलोक संवार देते हैं।

मनु रंगहु वडभागीहो

-डॉ. परमजीत कौर*

होली का रंग गुलाल शरीर को रंगता है जो थोड़ी देर तक रहता है। इस रंग से मन को आत्मिक आनंद का अनुभव प्राप्त नहीं होता, बल्कि मेर-तेर बनी रहती है। यदि मन को परमात्मा के प्यार के (गाढ़े लाल) रंग से रंगा जाये तो वह रंग कभी नहीं उतरता। उस पर माया का कोई रंग अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। गुरबाणी में कथन है :

राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥ (पन्ना १९४)

श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि यदि शरीर (रंगने वाले) रंगरेज़ की भट्ठी बन जाये तथा शरीर मे मजीठ जैसे पक्के रंग वाला परमात्मा का नाम-रंग डाला जाये, प्रभु स्वयं रंगरेज़ बनकर जीव-स्त्री के मन को रंग में डुबो दे तो ऐसा रंग चढ़ता है जो पहले कभी न देखा गया हो :

काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥ (पन्ना ७२१)

प्रत्येक जीव परमात्मा का सुंदर प्रेम-रंग प्राप्त करना चाहता है, परंतु केवल बातों से प्रेम प्राप्त नहीं होता :

हरि रंग कउ लोचै सभु कोई ॥
गुरमुखि रंगु चलूला होई ॥ (पन्ना ७३२)

जैसे मैले या कोरे कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता, इसी तरह जिस जीव के मन को माया रूपी मैल लगी होती है, जो जीव मन के पीछे चलता है, उस पर प्रभु के नाम का प्रेम-रंग कभी नहीं चढ़ता। यदि थोड़ा-बहुत चढ़ता भी है तो वह टिकता नहीं, थोड़ी-सी कठिनाइयों की गर्मी से शीघ्र उतर जाता है। मन के पीछे चलने वाले जीवों का मन प्रेम से रहित कोरा होता है। ऐसे जीव चाहे कितनी कामना करें तो भी उन पर प्रभु-प्रेम का पक्का रंग कभी नहीं चढ़ता :

-- *कोरै रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥* (पन्ना ७३२)

-- *मनमुखी मुगधु नरु कोरा होइ ॥*
जे सउ लोचै रंगु न होवै कोइ ॥ (पन्ना ७३२)

विषयों के स्वाद में फंसा हुआ मन काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार आदि विकारों का ज़हर अपने अंदर एकत्र कर लेता है। उसका मन सदैव अधिकाधिक सुख, सम्मान आदि की प्राप्ति के लिए चिंता करता हुआ इधर-उधर भटकता रहता है। दुनिया के रूप-रंग, खुशियां, मन की मौजें ये सारे ही आत्मिक जीवन में छिद्र हैं। इनमें लिप्त जीव आत्मिक जीवन के मार्ग पर नहीं चल सकता। कभी वह मोह का नाला पार नहीं कर सकता तो कभी लोभ की खाई में गिर पड़ता है। खाई में से निकलता है तो अहंकार का पत्थर आगे आ जाता है :

*620, Gali no. 1, Chhoti Line, Santpura, Yamunanagar(Haryana)- 135001 ph.- 01732-224988

-- माइआ का भ्रमु अंधु पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाए ॥ *(पन्ना २४७)*
-- हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ ॥ *(पन्ना १३४६)*

जब तक जीव माया के नशे में लिप्त है, सम्मान आदि की चाहत रखता है, सांसारिक रस्मों, रीति-रिवाजों तथा लोकाचार के बंधनों में जकड़ा रहता है, लोगों द्वारा प्रशंसा किए जाने पर या किसी की निंदा-चुगली करने में खुशी महसूस करता है, भूत काल की स्मृतियों तथा भविष्य की चिंता से मुक्त नहीं होता, सदा अपने साथ ही जुड़ा रहता है, तब तक वह परमात्मा का सामीप्य अनुभव नहीं कर सकता। श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है :

नालि होवंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूड़ा ॥
माइआ मदि माता होछी बाता मिलणु न जाई भरम धड़ा ॥ *(पन्ना ९२४)*

यदि कपड़े को रंगने से पहले नमक या सोढे वाले गर्म पानी में उबाला न जाए अर्थात पाह न लगाई जाए तो उस पर रंग नहीं चढ़ता। ठीक इसी तरह परमात्मा के डर तथा अदब के बिना मन रूपी कपड़े को पाह नहीं लग सकती। पाह के बिना पक्का प्रेम रंग नहीं चढ़ता :

भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥ *(पन्ना ४२७)*

मनमुख के अंदर परमात्मा का डर तथा प्यार नहीं होता। गुरु की शरण में आए बिना परमात्मा का डर हृदय में पैदा नहीं होता। हमारे लिए गुरबाणी ही गुरु है। गुरु के शबद की विचार करने पर, गुरु की मति पर चलने से परमात्मा का डर अंदर पैदा होता है :

सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि ॥
तनु मनु रता रंग सिउ हउमै त्रिसना मारि ॥ *(पन्ना ७८८)*

जो जीव गुरु-शबद के साथ जुड़कर गुरमति अनुसार जीवन ढाल लेता है उसका मन तृप्त हो जाता है, माया की तृष्णा समाप्त हो जाती है, मन निर्मल हो जाता है, अहंकार मिट जाता है; वह अंतरमुखी हो जाता है :

गुरमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रंगि रंगावणिआ ॥ *(पन्ना १११)*

ऐसा जीव आपना मन अर्पण करने योग्य हो जाता है, क्योंकि मन को नाम-रंग में रंगने के लिए उसे प्रभु के आगे अर्पण करना पड़ता है :

जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥
नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥ *(पन्ना ६४४)*

श्री गुरु अमरदास जी समझा रहे हैं कि मेरा सज्जन रंगीला है, मन लेकर प्रेम का रंग लगा देता है। जैसे कपड़े भी पाह देकर मजीठ में रंगे जाते हैं, वैसे ही खुद को अर्पण करके ही प्रेम-रंग प्राप्त होता है। इस तरह का रंग फिर कभी नहीं उतरता, न ही उस पर फिर कोई अन्य रंग चढ़ पाता है अर्थात् तब कोई अन्य वस्तु प्रिय नहीं लगती।

मन देने से तात्पर्य है **'मैं'** को मिटा देना, अपना कोई अस्तित्व न रह जाना। आपा-भाव मिटाने के लिए मन के साथ लड़ना पड़ता है, जूझना पड़ता है। श्री गुरु अमरदास जी समझाते हैं कि जो जीव मन के साथ जूझते हैं वे ही सूरमे अर्थात् शूरवीर हैं, ज्ञानवान हैं। वे मन को इधर-उधर भटकने नहीं देते, सदा अंतर्मुखी रहते हैं।

जिस जीव पर प्रभु कृपा करता है उसे सतसंग प्राप्त होता है। जैसे-जैसे वह सतसंग में बैठता है वैसे-वैसे ही परमात्मा का नाम जपना प्रारंभ कर देता है :

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥
जिउ जिउ उहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥ (पन्ना ७०)

हरि-नाम का सिमरन जीव के मन में मजीठ के रंग जैसा पक्का प्रेम पैदा करता है :

हरि नामा हरि रंङु है हरि रंङु मजीठै रंङु ॥
गुरि तुठै हरि रंगु चाड़िआ फिर बहुड़ि न होवी भंङु ॥ (पन्ना ७३१)

नाम-रंग में रंगा हुआ जीव मानो गाढ़े लाल रंग वाला हो जाता है। वह सृजनकर्त्ता परमात्मा का रूप हो जाता है। नाम-रंग में रंगा हुआ जीव ही सुखी जीवन वाला कहा जा सकता है :

नाम प्रभू के जो रंगि राते कलि महि सुखीए से गनी ॥ (पन्ना ११८६)

श्री गुरु रामदास जी सुखी जीवन के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए आदेश देते हैं कि हे भाग्यशाली जनो! गुरु की शरण में आकर अपना मन परमात्मा के नाम-रंग मे रंग लो। गुरु प्रसन्न होकर कृपा करता है तथा परमात्मा के नाम को हृदय में दृढ़ कर देता है :

मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥
गुरु नाम द्रिड़ाए रंग सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥ (पन्ना ४०)

धूम्रपान के नुकसान

*-डॉ. रमेश जैन**

कंठनली काली करे, भरे न जिससे पेट।
सतत धसक उठती रहे, क्यों पीते सिगरेट?
क्यों पीते सिगरेट, नाक-मुंह धुआं निकालें?
गला, नासिका, श्वासयंत्र, काले कर डालें।
कहें चिकित्सक-वैद्य, रोग पल्ले पड़ जाता।
तलब न जिसकी मिटे, उसे क्यों कंठ लगाता?
सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, चैनी और सिगार।
तंबाकू के हर उत्पाद पर, लिखती है सरकार।
लिखती है सरकार, स्वास्थ्य को हानिकारक।
किंतु आय का स्रोत, मीडिया बनी प्रचारक।
धुआंधार प्रचार, लोग पीते पीढ़ी-दर-पीढ़ी।
साहब सिगरेट पियें, श्रमिक पीते हैं बीड़ी।
बर्बादी का खेल, अंत में राख निकलती।
धोती-कुर्ता जले, बिछौना झोंपड़ी जलती।
अच्छी नहीं कुटेव, गुलाम इसका बन जाये।
जो भी बैठे पास, उसे भी रुग्ण बनाये।
पीकर टुकड़ा ठूठ, बच्चे बनते हैं आदी।
रोज-रोज का खर्च, स्वास्थ्य की हो बर्बादी।
जर्दा, पान, सुपारी, पाऊच, रंग-बिरंगे आवैं।
मियां, बीबी, अम्मा, दादी, बड़े चाव से खावैं।
काले-पीले दांत-मसूड़े, रोग पायरिया होता।
हिले दांत की पाल, दर्द से पकड़ मुखौटा रोता।
कहें चिकित्सक-वैद्य, अकल पर उनके पर्दा।
धूम्रपान जो करें, चबावैं, नित्य नियम से जर्दा।

**जनता अस्पताल, बुढलाडा, ज़िला मानसा-१५१५०२(पंजाब), मो ९८१५८-३०३७३*

कुदरत के सब बंदे

*-डॉ (मेजर) मनमीत कौर**

भारतीय संस्कृति मनुष्य में सद्भावनाओं के विकास व सर्वधर्मसमभाव की भावना पर अधिक ज़ोर देती है। सबके सुख में सुखी होना, मिल-बांटकर खाना, परमार्थ में जीवन जीना-- इस प्रकार का सर्वहितकारी चिंतन और व्यवहार भारतीय संस्कृति की मूल विशेषता है।

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। आज की सभ्यता भौतिकवादी सभ्यता है। आज की सोच अर्थकेंद्रित सोच है। आज विश्व का भूमंडलीकरण हो गया है। आज सभी संस्कृतियां, सभी विचारधाराएं विश्व बाज़ार में खरीदो-फरोख्त की वस्तुएं बन गई हैं, सब कुछ अर्थ के इर्द-गिर्द घूम रहा है। साहित्य हो, कला हो या संवेदनाएं, उपयोगितावादी मानदंडों पर कसे जा रहे हैं। असंतोष, असंयम, असीमित लिप्सा और बिना कर्म किए शीघ्रातिशीघ्र सब कुछ पाने की मानसिकता, यह हमारी संस्कृति नहीं थी, न हमारी सोच थी और न ही हमारी जीवन-शैली। समस्याओं के निवारण के लिए जो स्पष्ट चिंतन एवं सहयोगपूर्ण सामूहिक प्रयत्न अपेक्षित है उसका अभाव ही हमारे युग की विडंबना का प्रमुख कारण है।

'सरबत्त का भला' सिक्ख धर्म का बुनियादी उसूल है। इस धर्म की शिक्षा का स्रोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी है। ऐसी विषम परिस्थितियों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी देश की भावात्मक एकता और अस्मिता की रक्षा तथा राष्ट्रीय चरित्र और मानवीय मूल्यों की रक्षा के साथ-साथ मानवीय विकास के लिए भाईचारे व एकता का मार्ग दर्शाती है, जिसके अनुसार :

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

इस आदेश को केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि व्यवहारिक रूप से संगत तथा पंगत के रूप में स्थापित किया गया। श्री हरिमंदर साहिब की नींव एक मुसलमान फकीर साईं मीयां मीर के हाथों रखवाई गई। गुरु का लंगर बिना किसी भेदभाव के एक ही पंक्ति में बैठकर छकने की रीति चलाई गई। श्री हरिमंदर साहिब के चार दरवाजे इस बात के सूचक हैं :

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ (पन्ना ७४७)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना के समय अलग-अलग जातियों के प्रतिनिधियों का चयन करके एक निराली कौम स्थापित की जिससे जात-पात का झगड़ा मिट सके। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विभिन्न धर्मों, प्रांतों, जातियों के संतों-भक्तों की बाणी को सम्मिलित करना समस्त मानवता को एक सूत्र में पिरोने का अद्भुत प्रयास था। बाणी दर्ज करते समय किसी प्रकार की जाति, नस्ल, कौम, वर्ण-भेद आदि को प्रधानता नहीं दी गई, बल्कि इसका उद्देश्य प्रेम व भाईचारे की भावना को मज़बूत करने के साथ परमात्मा की एकता को स्थापित करना था। भक्त नामदेव जी, भक्त

**विभागाध्यक्षा दर्शन शास्त्र, नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-२२६००४, मो ९४१५४-२६१८३*

कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त सधना जी आदि जातीय विधान के अनुसार उन तथाकथित निचली जातियों से संबंधित थे जिन्हें न विद्या प्राप्त करने का अधिकार था और न ही धर्म-कर्म करने का। परमात्मा की भक्ति द्वारा ये सभी ब्रह्मज्ञानी बने और श्रेष्ठ पदवी को प्राप्त हुए। श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है :

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥रहाउ॥
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥
(पन्ना ४८७-८८)

गुरमति में इस बात को दृढ़ता से स्वीकार किया गया है कि यह बात महत्त्व की नहीं है कि मनुष्य ने किस घर में जन्म लिया है, बल्कि महत्त्व इस बात का है कि जीव का कर्म क्या है? उसका जीवन क्या है? वह जीवन को किस नज़रिये से देखता है? वह अपनी भलाई के साथ-साथ दूसरों के लिए क्या सोचता है? जात-पात का अहंकार करना व्यर्थ है :

जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
(पन्ना ११२७)

मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से श्रेष्ठ बनता है। यदि स्वर्ण कलश में मदिरा भरी हो तो साधु केवल स्वर्ण पात्र होने के कारण उसका सत्कार नहीं कर सकते। इसी प्रकार से खुद से उच्च कुल में उत्पन्न हुआ कहने वाला व्यक्ति दुष्कर्मों के कारण निंदनीय बन जाता है :

कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ ॥
ओह नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ ॥ (पन्ना १३६७)

श्री गुरु रामदास जी के अनुसार कोई मनुष्य राजनैतिक शक्ति के कारण, किसी उच्च पदवी का स्वामी होने के कारण या शारीरिक बल या सुंदरता के कारण ऊंचा नहीं समझा जा सकता, बल्कि उच्चता की कसौटी है :

ओहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै वसिआ भगवानु ॥
जन नानकु तिस के चरन पखालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥ (पन्ना ८६१)

श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि समस्त सृष्टि एक परमात्मा का ही अंश है :

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ (पन्ना २)

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना, विश्व-बंधुत्व, प्रेम और शांति का संदेश देने हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने वर्षों तक देश-देशांतरों की यात्रा की। सम्पूर्ण सृष्टि को उस अकाल पुरख की रचना मानने वाले श्री गुरु नानक देव जी कण-कण में उस ईश्वर की ज्योति का दर्शन करते हैं। धनवान मलिक भागो के निमंत्रण को ठुकराकर गरीब बढ़ई भाई लालो की सूखी रोटी को स्वीकार करने में उनका गूढ़ संदेश छिपा है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

अर्थात् सभी प्रकार के जीवों में उसी एक प्रभु की ज्योति विद्यमान है, उसी के प्रकाश से सभी प्रकाशमान हैं।

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
(पन्ना १३३०)

अपने कथन को व्यवहारिक रूप देने के लिए गुरु जी ने लोकहित के लिए की गई उदासियों के दौरान अपने साथ तथाकथित मीरासी जाति के भाई मरदाना जी को लिया। जाति के भेदभाव को महत्त्व देने वालों तथा धर्म के ठेकेदारों द्वारा फैलाए गए भ्रमजाल एवं कर्मकांडों का उन्होंने डटकर विरोध किया। इस सम्बंध में उनका कथन था :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नाच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥
(पन्ना १५)

जाति का अभिमान करने वाले सिद्धों को भी श्री गुरु नानक देव जी ने कहा :

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥ (पन्ना ९१)

उनका उपदेश यही था :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

गुरमति के अनुसार धर्म एक ही हुआ करता है, जिसकी आधारशिला सत्य पर आधारित होती है। फिर्काप्रस्ती, नफ़रत और मानव को बांटने वाले तत्त्व किसी भी धर्म का हिस्सा नहीं हो सकते। मानव को बांटने वाले ऐसे तत्त्वों को धर्म-क्षेत्र से खारिज करते हुए बताया कि सच्चा धर्म वही होता है जो सारी मानवता की सेवा और भलाई चाहने वाला हो :

एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ (पन्ना ११८८)

भक्त रविदास जी ने भी अपनी बाणी में जात-पात का स्पष्ट शब्दों में खंडन किया है। उनके अनुसार जात-पात का भेद कोई महत्त्व नहीं रखता। किसी भी जाति का मनुष्य परमात्मा की भक्ति करके उसकी प्राप्ति कर सकता है :

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ (पन्ना ८५८)

जातिगत एकाधिकार की भर्त्सना करते हुए उनका कहना है कि ईश्वर-भक्ति पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, मलेच्छ सभी का समान रूप से अधिकार है, किसी जाति विशेष का नहीं।

उन्होंने व्यक्तियों द्वारा सांसारिक तौर पर बनाए गए गैर-बराबरी के विचार का भी खंडन किया। परमात्मा निम्न कोटि के समझे जाने वाले मनुष्य को भी उच्च पदवी का स्वामी बना सकता है :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥रहाउ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
(पन्ना ११०६)

परमात्मा सर्वशक्तिमान है। यह जगत परमात्मा की रचना है, इसलिए इसे ईश्वर रूप दिया जा सकता है। यह तभी संभव है जब मनुष्यों में भाईचारा हो, जातिवाद, धार्मिक कट्टरता व आर्थिक विभेद समाप्त हो जाए, कोई किसी को दुख न दे, किसी को कोई भय न हो अर्थात् समाज में कोई ऊंच-नीच की भावना न हो। तब यह संसार 'बेगमपुरा' बन सकता है :

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥

नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोम न सेम एक सो आही ॥ (पन्ना ३४५)

भक्त कबीर जी असरदार और विचलित कर देने वाली सच्चाइयों के प्रमुख वाचक संत माने जाते हैं। उनका मानना है कि समस्त जीव परमात्मा की रचना हैं, चाहे वे किसी भी जाति के हों :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ (पन्ना १३४९)

जिस प्रकार मिट्‌टी से कुम्हार तरह-तरह के बर्तन बना देता है इसी प्रकार से परमात्मा भी एक ही मिट्‌टी से इंसान को बनाता है, परंतु दुनिया में आकर इंसान अलग-अलग रंगत ले लेता है :

माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥
ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै ॥ (पन्ना १३५०)

उनके अनुसार जब सभी मनुष्यों के खून का रंग एक है, सब में चर्म और मांस है तो फिर यह ब्राह्मण-शूद्र का भेद कैसा? वे जातिवाद का विरोध करते हैं। संकीर्ण आधारों पर कभी भी बड़ी चुनौतियों का सामना नहीं किया जा सकता। भक्त कबीर जी के लिए प्रेम का अर्थ है हर संकीर्ण सामाजिक दीवार को तोड़कर मनुष्य जाति की एकता।

भक्त कबीर जी ने योगी, हिंदू तथा मुसलमान को एक ही समन्वयवादी भावना के अंतर्गत एक ईश्वरवाद का संदेश दिया :

जोगी गोरखु गोरखु करै ॥
हिंदू राम नामु उचरै ॥
मुसलमान का एकु खुदाइ ॥
कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥ (पन्ना ११६०)

शेख़ फरीद जी का मानना है कि संसार की रचना करने वाला खालिक यानि ईश्वर है तथा वह हर व्यक्ति में व्याप्त है। जिसमें स्वयं ईश्वर का निवास हो उसे बुरा क्यों कहा जाए?

फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥
मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥
(पन्ना १३८१)

गुरबाणी के आदर्श मानवीय एकता के सूत्रधार हैं :

सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ (पन्ना ९७)

वास्तव में श्री गुरु ग्रंथ साहिब संसार के सभी धर्मों का समान रूप से आदर करते हुए विश्व-बंधुत्व का संदेश देता है। वर्तमान समय में जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से सामाजिक व भावनात्मक तौर पर दूर जा रहा है, जनसमुदाय दल और मतवाद के आधार पर टुकड़ों में बंट गया है, संकीर्ण विचारधारा के कारण आपसी सौहार्द और सहयोग की भावना मिटने लगी है, जातिवाद के कोढ़ ने समाज के शरीर को खोखला बना दिया है, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा जैसी अमानुषिक प्रवृत्तियों ने मानव को घेर लिया है, इसी का दुष्परिणाम हैं-- आतंकवाद, सांप्रदायिक दंगे। विश्व की आधुनिक परिस्थितियों में धार्मिक सद्‌भावना और राष्ट्रीय एकता समय की मांग है। गुरमति के सिद्धांतों पर चलकर हम राष्ट्रीय भावना का विकास कर सकते हैं। आज आवश्यकता है श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा को समझने की तथा उसके अनुसार अपने जीवन को ढालने की, तभी हम सब एक आदर्श समाज का निर्माण कर सकते हैं। ❁

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के परिप्रेक्ष्य में आदर्श मनुष्य बनने के लिए शुभ विचारों की महत्ता

*-स. राजविंदर सिंघ 'जोगा'**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब ऐसा धर्म-ग्रंथ है जो सिक्ख धर्म के अनुयायियों को ही नहीं बल्कि हर एक मनुष्य को मार्गदर्शन देता है। इस महान ग्रंथ के अनुसार श्रेष्ठ धर्म वो है जिसमें प्रभु के स्मर्ण और शुभ अमलों को प्राथमिकता दी जाए :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
(पन्ना २६६)

विश्व का हर धर्म अपने प्रवर्त्तक के रूहानी और अनुभवी वचनों से उजागर होता है। ये रूहानियत भरपूर रूहें जब विश्व में ईश्वर का पैगाम देती हैं तो वो सर्वकल्याणकारी होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मानवीय शख़्सियत की सम्पूर्णता के लिए आदर्श मार्ग का उल्लेख मिलता है। हर धर्म का उद्देश्य एक ही है-- दुखों से छुटकारा, आवागमन के चक्कर से मुक्ति अर्थात् ईश्वर में विलीन होना। रास्ते भले ही देखने को अलग-अलग लगते हैं पर इन रास्तों के सफ़र को आसान बनाने के लिए शुभ विचारों का होना बहुत जरूरी है। प्राचीन समय में गोष्ठियां होती थीं। इन गोष्ठियों का मकसद अपने आपको ऊंचा करना और अपने धर्म को अच्छा बताना था, पर कहीं-कहीं इनका मनोरथ दूसरे धर्मों को जानना भी था।

श्री गुरु नानक साहिब ने अपनी धर्म-प्रचार यात्राओं के दौरान अन्य धर्मों के अगुओं के साथ गोष्ठियां कीं। ये गोष्ठियां किसी को नीचा दिखाने अथवा अपने आपको ऊंचा दिखाने के किए नहीं थीं, बल्कि इनका मनोरथ ईश्वर की प्राप्ति के लिए लोगों को धर्म के सही अर्थों से अवगत कराना और उन पर चलने का आदेश करना था। श्री गुरु नानक साहिब ने जो विचार आदान-प्रदान के रूप में पेश किए, उनको गोष्ठियां कहा गया है। आप जी द्वारा उच्चरित 'सिध गोसटि' शीर्षक वाली बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है, जिसमें सिद्धों के साथ हुए प्रश्न-उत्तर शामिल हैं। इन गोष्ठियों को वर्तमान समय में अकादमिक स्तर पर अंतर-मत संवाद के नाम से विचारा जा रहा है, जो चर्चा का महत्त्वपूर्ण विषय है। इस विषय पर बात करने से पहले हमें यह समझने की जरूरत है कि 'अंतर-मत संवाद' है क्या?

'संवाद' शब्द के अर्थ भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'गुर शबद रतनाकर महान कोश' में इस तरह किये हैं-- "संवाद-चर्चा (वार्ता), प्रश्न-उत्तर, ख़बर या समाचार।"[१] साधारण अर्थों में हम कह सकते हैं कि प्रश्न-उत्तर एक व्यक्ति नहीं कर सकता, यह दो या दो से अधिक व्यक्ति करते हैं। वह बात अलग है कि मनुष्य कई बार अपने आप से भी संवाद रचाता है। वहां उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों की आपसी चर्चा होती है। दूसरे के साथ संवाद करने में एक-दूसरे से कुछ सीखने की चाहत या किसी उच्च उद्देश्य की प्राप्ति के लिए

**रीसर्च फैलो, श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन केंद्र, ए-१, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर-१४३००१,मो: ९५०१३००४५९*

ज्ञानवान होना और आत्म-अनुभव के आधार पर चर्चा होती है। इसे 'संवाद' कहा जाता है। संवाद विभिन्न दृष्टियों में एक-दूसरे को अलग मानते हुए और आदर कायम करते हुए अपने सच की परतों को खोलने के लिए कार्यशील होता है अर्थात् दो अलग-अलग सच अपने तात्विक रूप में एकता के भावुक और संवेदनशील सम्बंधों से जुड़े होते हैं। इस तरह की विभिन्नताएं प्रवृत्ति को त्यागती हुई जगत और ब्रह्मांड में समुचित पासारे की विभिन्नता को खूबसूरती प्रधान करती हैं।[२] इस तरह जब अन्य धर्मों के साथ विचारों में समानता न आए तो वह बहस/विवाद बन जाता है।

अंतर-मत संवाद रचाने के लिए जहां अपने धर्म में सिद्धांतों की समझ और दूसरे धर्म के सिद्धांतों की जानकारी होनी अनिवार्य है वहीं सहनशीलता, नम्रता, संतोष, धैर्य और भ्रातृ-भाव होना भी आवश्यक है। अकादमिक स्तर पर उच्च विद्या प्राप्त व्यक्ति अपने बराबर के व्यक्ति के साथ ही संवाद कर सकता है। हर स्तर पर संवाद तभी हो सकता है अगर पहले बताई बात पर पहरा दिया जाए। श्री गुरु नानक साहिब ने हर स्तर के व्यक्तियों-राजाओं, कंगालों, ब्राह्मणों, काजियों, योगियों, सिद्धों, गृहस्थियों और उदासियों के साथ संवाद रचाया।

इसका कारण श्री गुरु नानक साहिब का हर पक्ष से सम्पूर्ण होना और व्यवहारिक जीवन जीना था। हम कह सकते हैं कि अंतर-मत संवाद केवल मौखिक वाक्यों से नहीं बल्कि व्यवहारिक जीवन जीते रचाया ज्यादा कारगर सिद्ध होता है। इससे मनुष्य एक-दूसरे के गुणों का आदान-प्रदान करता हुआ आदर्श मनुष्य बनने का रास्ता अख्तियार करता है। ऐसा करने के लिए बहुत सारे पक्ष हैं, जिनमें सबसे पहले शुभ विचार या शुभ इच्छाएं आती हैं। हर धर्म में किसी न किसी रूप में आदर्श मनुष्य बनने के लिए किए गए उपदेशों में शुभ विचारों की महत्ता बताई गई है। बौद्ध धर्म में मुख्य उद्देश्य निर्वाण की प्राप्ति के लिए अष्टांग मार्ग में शुभ विचार और ठीक सोच का सिद्धांत है। जैनियों के अहिंसा के सिद्धांत में किसी के प्रति मन में गलत विचार भी हिंसा माने गए हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शुभ विचार या शुभ इच्छाओं पर विशेष चर्चा की गई है :

सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥ *(पन्ना २८)*

जिस इंसान के हृदय में प्रवीण समझ और सोच-विचार है वह अधर्मी अर्थात् मंदे विचार वालों के साथ नहीं मिलता और अच्छे पुरुषों की संगत करता हुआ गुणों का आदान-प्रदान करता है। प्रस्तुत आलेख में पहले शुभ इच्छा के बारे में समझने का प्रयत्न किया जायेगा।

साधारण शब्दों में शुभ की इच्छा या शुभ को इच्छुक तौर पर मानकर चलना शुभ इच्छा है। शुभ को सबसे बड़ा नैतिक आदर्श मानकर चलना और उसकी बौद्धिक तौर पर इच्छा रखना तथा उस इच्छा को प्राप्त करना शुभ इच्छा है। इसको सद्गुणी इच्छा या पवित्र इच्छा भी कह सकते हैं। इस सम्बंधी अपनी पुस्तक में कांट लिखता है-- "शुभ इच्छा के बिना दुनिया में या इसके बाहर ऐसा कुछ भी संभव अनुमानित तौर पर सोचा नहीं जा सकता, जिसके बिना योग्यता को शुभ इच्छा कहा जा सकता है।"[३]

कांट नैतिकता को बुद्धि और फ़र्ज की पालना पर आधारित मानता है और इसको एक नया नाम 'शुभ इच्छा' देता है। दूसरे शब्दों में शुभ इच्छा नैतिकता का दूसरा नाम है।

शुभ इच्छा को परिभाषित करते हुए कहा जाता है कि **"The ethics of a society is embedded in the ideas and beliefs about what is right or wrong, what is a good or bad character; it is also embedded in the conceptions of satisfactory social relations and attitudes... goodwill, sympathy compassion and the willingness to help can be a great boost to a person's attempts to achieve his goals, to fulfill his life. The dependency noted in the foregoing proverb is to be..."[4]**

समाज का सदाचार विचारों और विश्वासों के साथ जुड़ा होता है; क्या अच्छा क्या बुरा है, अच्छा या बुरा आचार क्या है, के इस सामाजिक संबंधों और व्यवहारों के संकल्पों के साथ भी जुड़ा होता है। शुभ इच्छा, हमदर्दी, दया और सहायता के लिए सहमति जीवन के मनोरथों को प्राप्त करने के लिए इंसान के द्वारा की जा रही कोशिशों को प्रोत्साहन देने में भी मदद करती है। गुरबाणी में इसके बहुत सारे प्रमाण मिलते हैं :

-- *सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ ॥* *(पन्ना ३०२)*

-- *जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ झोलि अंम्रितु पीजै ॥*
गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥
(पन्ना ७६६)

गुरबाणी में मन के चार स्वरूप माने गए हैं, जिनमें बुद्धि-विवेक के साथ निश्चय करने की शक्ति को मुख्य माना गया है।[५] मन में अच्छी-बुरी इच्छा प्रकट होती है। इस अच्छी-बुरी इच्छा का निर्णय बुद्धि ही करती है। मन बुद्धि की बात न मानकर जो कार्य करता है वह अनैतिक होता है। इसको गुरमति में 'मनमति' कहा गया है। शुभ इच्छा की विशेषताएं :

१. शुभ इच्छा शुभ के लिए की गई इच्छा है : नैतिकता में शुभ इच्छा का विशेष स्थान है। गुरमति में नैतिकता को प्रमुखता दी गई है। इसको अपनाने के लिए किसी कानून की जरूरत नहीं होती, बल्कि मनुष्य वहां भी नैतिक नियमों की पालना करता है जहां कानून की दृष्टि नहीं पड़ती। गुरमति में इसको व्यवहारिक जीवन जीना कहते हैं।

२. शुभ इच्छा ही शुभ है : शुभ इच्छा अपने आप में ही शुभ है। अगर शुभ कोशिशें करने के साथ कार्यों के परिणाम अच्छे नहीं निकलते तो यह नहीं समझना चाहिए कि इच्छा गलत है बल्कि शुभ इच्छा के साथ फल की आशा किए बिना निरंतर कार्य करते रहना चाहिए :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥
(पन्ना १३८१)

-- *बुरे करनि बुरिआईआं भलिआई भलिआ।*
अवगुण कीते गुण करनि जगि साध विरलिआ।
(भाई गुरदास जी, वार ९:२१)

३. शुभ इच्छा के साथ परोपकार की भावना : अपने जीवन के लिए हर एक व्यक्ति उत्साहित होता है। दूसरों के लिए कोई-कोई मनुष्य ही सोचता है। गुरबाणी में अनेक उदाहरणें ऐसी मिलती हैं कि दूसरों का भला मांगना ही नहीं बल्कि करना भी चाहिए, किसी का बुरा नहीं सोचना चाहिए :

पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३८६)

इस बात का प्रमाण हमें सिक्ख इतिहास में भाई घनईया जी के जीवन से मिलता है, जब वे युद्ध-क्षेत्र में सिक्खों के साथ-साथ दुश्मनों को भी पानी पिलाते हैं। इसकी शिकायत सिक्खों ने

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास की तो गुरु जी ने भाई घनईया जी को बुलाया और इसका कारण पूछा। भाई जी ने उत्तर दिया, सच्चे पातशाह! युद्ध-क्षेत्र में मुझे पता ही नहीं चलता कि कौन दुश्मन है और कौन मित्र। मैं तो सभी को जरूरतमंद समझकर उन्हें पानी पिलाता हूं। गुरु जी ने भाई घनईया जी के शुभ विचार देखकर जल की सेवा के साथ-साथ उसे मरहम-पट्टी की सेवा भी सौंप दी।

४. शुभ इच्छा के अंतर्गत किया कार्य समाज में स्वीकृत होता है : शुभ विचार मानवीय आत्मा और परमात्मा की अभेदता में साधन का काम करते हैं। पहले हमारे मन में अच्छे या बुरे ख़्याल आते हैं। वे ख़्याल जब व्यवहारिक जीवन में किसी काम को अंजाम देते हैं तो इनका स्वरूप प्रकट होता है। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के मन में किसी वस्तु को चोरी करने का ख़्याल पैदा हुआ और जब तक वह उस वस्तु को चुरा नहीं लेता तब तक उसके मन में चल रहे विचार का पता नहीं लगता। उच्च विचारों से मनुष्य की कथनी और करनी में फर्क नहीं रहता :

मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से सभे फल पावहे ॥ (पन्ना २४८)

जब मनुष्य शुद्ध मन के साथ कोई कार्य करता है तो परमात्मा उस पर कृपा-दृष्टि रखता है। उसको सत्य, संतुष्टता, विचार और बंदगी की आशीष मिलती है। इसको हम आदर्श मार्ग का आरंभ कह सकते हैं, क्योंकि ऊंचे और निर्मल ख़्यालों से दूसरों के साथ हमदर्दी, प्यार, औरों की भलाई करने का विचार दिल में आता है। परमात्मा की कृपा से चंचल मत त्यागनी पड़ती है :

गुर साखी अंतरि जागी ॥
ता चंचल मति तिआगी ॥
गुर साखी का उजीआरा ॥
ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥ (पन्ना ५९९)

जितनी देर मनुष्य परमात्मा को पाने के लिए मन में से अंधकार मिटाकर ज्ञान-प्रकाश नहीं करता उतनी देर तक वह आदर्श मार्ग के रास्ते से भटकता रहता है :

भांडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥
रसना नामु जपहु तब मथीऐ इन बिधि अम्रितु पावहु ॥ (पन्ना ७२८)

अच्छे विचार या शुभ विचार ही आदर्श मार्ग की बख़्शिश करते हैं :

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥
हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥ (पन्ना ११८५)

जब तक मन में शंके हैं उतनी देर मनुष्य एक-दूसरे की विरोधता का शिकार होता रहेगा। यह विरोधता आदर्श मार्ग के रास्ते में बड़ी रुकावट है :

-- *मंदा किस नो आखीऐ सबदि वेखहु लिव लाइ ॥*
बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि ॥
गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाइ ॥
(पन्ना ७५७)

-- *मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥*
(पन्ना ९३७)

आज हमारे समाज ने हर क्षेत्र में बहु-मूल्य उन्नति की है। इस उन्नति के बावजूद भी मानसिक तनाव पनप रहा है और भ्रातृ-भाव में दूरियां बढ़ रही हैं। इन दूरियों को आदर्शकता के मार्ग पर चलकर ही दूर किया जा सकता है। इस बात की गवाही गुरबाणी देती है :

-- *मनसा मारि मनै महि राखै सतिगुर सबदि वीचारी ॥*

सिंङी सुरति अनाहदि वाजै घटि घटि जोति तुमारी ॥ *(पन्ना ९०७)*
-- मन बच करम अराधे करता तिसु नाही कदे सजाई हे ॥ *(पन्ना १०७१)*

गुरबाणी स्व-अधीन और मानव-कल्याणकारी समाज का समर्थन करती हुई आज़ाद एवं मुक्त मानव की सभ्याचारी विधान की स्थापना का संदेश पूरे विश्व को देती है। वर्तमान समाज में मनुष्य की सारी दौड़ पदार्थक वस्तुओं को एकत्रित करने और उपभोगता की तरफ लगी हुई है। मनुष्य में से मानवता गायब होती जा रही है। माया (धन) की दौड़ के कारण मनुष्य का लक्ष्य केवल माया तक सीमित हो गया है। आचार, सदाचार, नेकी, रहमदिली और हमदर्दी भरी भावना मनुष्य में से खारिज हो रही है। व्यवहारिक जीवन केवल वस्तु-विहार तक ही सीमित रह गया है। मनुष्य के उद्धार हेतु गुरबाणी नेकी, रहमदिली, सहनशीलता, भ्रातृ-भाव जैसे सद्गुणों को धारण करने का उपदेश देती है, ताकि मनुष्य में से इंसानियत खारिज न हो जाए और वह इंसान बनकर रहे :

-- बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥ *(पन्ना ७२७)*
-- बंदउ होइ बंदगी गहै ॥
बंदक होइ बंध सुधि लहै ॥ *(पन्ना ३४१)*

शुभ विचारों की आमद से यह समझ आ जाएगी कि कोई भी मनुष्य बुरा नहीं है, सभी अच्छे हैं, क्योंकि सभी परमात्मा के पैदा किए हुए हैं :

-- एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ *(पन्ना ६११)*
-- जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥
मंदा किस नो आखीऐ जे दूजा होई ॥
(पन्ना ४२५)
-- मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥
(पन्ना १२३८)
-- मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥ *(पन्ना १३८१)*

अंत में हर एक ने ख़ाली हाथ ही जाना है। फिर ये वाद-विवाद किसलिए हैं? इनसे छुटकारा पाने के लिए गुरबाणी संदेश देती है :

-- मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु ॥ *(पन्ना ८२५)*

हम सभी इकट्ठा होकर, आदर्श मनुष्यता के मार्ग को समझते हुए, आपसी वाद-विवाद को खत्म करके ज़िंदगी को अच्छे ढंग से जीने के लिए प्रयत्नशील हों :

वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥
अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥
जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥
हरिहां दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥
(पन्ना १३६३)

पाद-टिप्पणियां :

१. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरशब्द रतनाकर महान कोश, नेशनल बुक शॉप, चांदनी चौक, दिल्ली, २०११

2. National Seminar on Guru Nanak's Travels and Interfaith Dialogue (Seminar Proceedings), GNDU, Sri Amritsar, November, 2012, P.142.

3. Shalinder Singh And Amar Kumar, Fundamentals of Philosophy & Ethics (Western & Indian), Krishna Brothers, Jalandhar, 2009, P.B-68.

4. Kwame Gyekye, http://plato.stanford.edu/entries/african-ethics

५. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरमति मारतंड, भाग दूसरा, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, पृष्ठ ७४६

गुरबाणी चिंतनधारा : ६८

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

कई कोटि पाताल के वासी ॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥
कई कोटि कीए धनवंत ॥
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥
जह जह भाणा तह तह राखे ॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥(पन्ना २७६)

दसवीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने जीवों के विविध रूपों तथा अवस्थाओं का वर्णन करते हुए इस बात को दृढ़ करवाया है कि सम्पूर्ण रचना की बागडोर केवल और केवल उस परवरदिगार के हाथों में है, अत: वही सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि करोड़ों जीवन पाताल में निवास करते हैं और करोड़ों ही जीवन नरक एवं स्वर्ग में निवास करते हैं अर्थात् अपने किए कर्मों के अनुसार दुख-सुख भोगते हैं। करोड़ों जीव जन्म लेते हैं, जीवन बिताते हैं और फिर मर जाते हैं। करोड़ों ही जीव योनियों (जन्म-मरण) में भटकते रहते हैं। करोड़ों ही जीव बैठे-बिठाए खाते हैं अर्थात् ऐशो-इशरत की ज़िंदगी गुज़ारते हैं। करोड़ों ही जीव दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं और थक-टूट जाते हैं अर्थात् दो वक्त की रोटी के जुगाड़ के लिए निरंतर पसीना बहाते हैं तथा थक कर चकनाचूर हो जाते हैं। उसकी रची दुनिया में करोड़ों ही जीव धनवान हैं और करोड़ों ही ऐसे हैं जिन्हें धन-दौलत कमाने की फिक्र लगी रहती है। परमेश्वर को जिस किसी के लिए जो स्थान, स्थिति अच्छी लगती है, उन्हें वहीं-वहीं रखता है। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि उस परवरदिगार को जो कुछ भाता है वो वही कुछ करता है, सब कुछ की बागडोर उसी के हाथ में है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरुदेव ने कर्म-फ़िलासफी सिद्धांत को समझाया है कि जीव के अपने कर्मों के लेखानुसार उसे दुख-सुख भोगने पड़ते हैं। यहां यह स्पष्ट कर देना जरूरी प्रतीत होता है कि गुरबाणी चिंतकों के चिंतनानुसार कर्म तीन प्रकार के होते हैं :

१. कायिक : ऐसे कर्म जो जीव शरीर द्वारा करता है।
२. वाचिक : जो बाणी द्वारा बोलकर किए या करवाए जाते हैं।
३. मानसिक : जो मन द्वारा किए जाते हैं।

यह भी स्पष्ट किया गया है कि जो भी कर्म जीव हृदय एवं बुद्धि से पूरी तरह सोच-समझकर करता है उस प्रत्येक कर्म का संस्कार बनता है, जिसे जीव अपने साथ अंकित कर ले जाता है। बेशक, संसार की कोई वस्तु या अपना शरीर भी साथ नहीं जाता लेकिन कर्मों का लेखा-जोखा साथ जाता है और इसके फल को भोगना ही पड़ता है।

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

गुरबाणी आशयानुसार यहां यह स्पष्ट करना भी अनिवार्य है कि जीव श्रेष्ठ कर्मों द्वारा स्वर्ग और निकृष्ट (पाप) कर्मों की वजह से नरक भोगता है, लेकिन दोनों ही तरह के कर्मों के भोग के उपरांत पुनः उसे मातलोक में आना पड़ता है और उसका आवागमन का चक्कर समाप्त नहीं होता। गुरबाणी तो हमें इन बंधनों एवं चौरासी के चक्कर से मुक्त होने का उपदेश करती है। यह तो केवल श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करने से ही मुमकिन है। गुरबाणी प्रमाण है :

हरि का जापु जपहु जपु जपने ॥
जीति आवहु वसहु घरि अपने ॥
लख चउरासीह नरक न देखहु रसकि रसकि गुण गाई हे ॥ (पन्ना १०७२)

हकीकत में प्रभु जिस पर रहमत करता है वही उसकी आराधना करता हुआ मुक्तावस्था प्राप्त कर उसी में विलीन हो जाता है, यथा :

जिस नो क्रिपा करे प्रभु अपनी सो जनु तिसहि धिआई हे ॥ . . .
सिमरि सिमरि जीवहि जन तेरे एकंकारि समाई हे ॥ (पन्ना १०७२)

जीव के जीवन का असली मनोरथ प्रभु की कृपा से सिमरन करते हुए उसी (अपने मूल) में एकाकार हो जाना है।

कई कोटि भए बैरागी ॥
राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि इस दृश्यमान संसार में करोड़ों ही लोग उपराम (विरक्त) हो गए हैं। वे कहते हैं कि उनका ध्यान प्रभु-नाम में लग गया है। करोड़ों ही जीव उस पारब्रह्म परमेश्वर को खोज रहे हैं। ऐसे खोजियों को प्रभु उनके अंदर बसता प्रतीत हो जाता है अर्थात् वे प्रभु को अपने अंदर बसा महसूस कर लेते हैं। करोड़ों जीवों को प्रभु-दर्शन की प्यास है। उन्हें अविनाशी प्रभु अंदर ही मिल जाता है। करोड़ों लोग सतसंग-प्राप्ति की तमन्ना रखते हैं। उन्हें परमेश्वर से सच्ची प्रीति हो गई होती है। वे उसके रंग में रंग जाते हैं। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में फरमान करते हैं कि ऐसे मनुष्य सदैव भाग्यशाली हैं, जिन पर प्रभु स्वयं प्रसन्न होता है।

परमेश्वर की विलक्षण रचना में अनेक वैरागी प्रवृत्ति के मनुष्य हैं, जिन्होंने संसार में मोह-माया का त्याग कर दिया है। वस्तुतः जिसकी प्रीति प्रभु-चरणों में लग जाती है उन्हें सहज-भाव से वैराग्य हो जाता है। जैसा कि भक्त नामदेव जी ने अपनी अवस्था का वर्णन किया है कि जैसे भूखा अन्न से, प्यासा जल से, मूर्ख व्यक्ति कुटुंब के धंधों से लगाव रखता है, ऐसी ही प्रीति उन्हें (भक्त नामदेव जी को) प्रभु के साथ लग गई है और वे स्वाभाविक रूप से वैरागी हो गए हैं, यथा :

नामे प्रीति नाराइण लागी ॥
सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥ (पन्ना ११६४)

वैसे भी नाम-रत्न को प्राप्त करने वाले सांसारिक पदार्थों को तुच्छ और निस्सार मानते हैं। ऐसे भक्त-जन राज्य, धन-दौलत, ऐश्वर्य, स्वर्ग और यहां तक कि मुक्ति की भी कामना नहीं करते अपितु प्रभु-चरणों की प्रीति ही उनके लिए सर्वोत्तम सुख है, यथा गुरबाणी-प्रमाण है :

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ . . .
कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥ (पन्ना ५३४)

परमेश्वर की अद्भुत रचना में ऐसी परमावस्था प्राप्त रूहों की भी गिनती नहीं, इसलिए श्री गुरु अरजन देव जी ने कई कोटि (करोड़ों) शब्द का कितना सार्थक उपयोग किया है। वस्तुतः वह परमात्मा अनंत और उसकी रचना भी अनंत है। इस पावन बाणी के सृजनहार गुरुदेव की महिमा भी अनंत है।

कई कोटि खाणी अरु खंड ॥
कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥
कई कोटि होए अवतार ॥
कई जुगति कीनो बिसथार ॥
कई बार पसरिओ पासार ॥
सदा सदा इकु एकंकार ॥
कई कोटि कीने बहु भाति ॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥
ता का अंतु न जानै कोइ ॥
आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥

सातवीं पउड़ी में गुरु पातशाह ने उस परमेश्वर की प्राकृतिक रचना को बेअंत वर्णन करते हुए उसे असीम बताया है। इस अनंत प्रसार में भी प्रभु स्वयं एक रस व्यापक है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि धरती पर कई करोड़ खाणियां हैं, कई करोड़ खंड हैं, कई करोड़ आकाश और ब्रह्मांड हैं, जिसमें करोड़ों ही जीव हैं। कई जीव देव (अवतार) रूप में प्रकट हो रहे हैं अर्थात् करोड़ों ही अवतारी पुरुष हुए हैं। अनेकों रंगों (किस्म) से प्रभु ने संसार की रचना की है। कई बार परमेश्वर ने इस जगत को विस्तारित रूप दिया है अर्थात् अनेक युक्तियों से रचना का विस्तार किया है। उसने अनेक बार जगत की रचना की, लेकिन रचयिता (सृजनहार) स्वयं प्रभु ही रहा है। प्रभु ने अनगिनत किस्मों के अनगिनत जीव उत्पन्न किए हैं। प्रभु से उत्पन्न हुए ये जीव पुनः प्रभु में ही लीन हो जाते हैं अर्थात् उसी में समा जाते हैं। गुरुदेव फरमाते हैं कि उस परमेश्वर का अंत कोई नहीं पा सकता। यह भेद कोई नहीं जानता, जो कुछ है वह प्रभु आप ही है।

वस्तुतः वह प्रभु अनेक तरह से अनंत रचना रचता है, कई तरह से एक से अनेक हो जाता है, लेकिन उन सब में समाया हुआ भी वो निर्लेप-भाव से विद्यमान है। यह उसके निर्गुण स्वरूप का अद्भुत एवं भव्य सगुण प्रसार है। उसका कोई पार नहीं पा सकता और वह अपने जैसा आप ही है। गुरबाणी में उसे अनंत, अथाह वर्णन किया गया है। भला उसका अंत यह तुच्छ जीव कैसे पा सकता है! पंचम पातशाह ने गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव से विनती की है उस परवरदिगार के चरणों में :

तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम ॥
तूं सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम ॥
सार न जाणा तू वड दाणा करि मिहरंमति सांई ॥
किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई ॥ (पन्ना ७७९)

गुरबाणी आशयानुसार वही जीव भाग्यशाली हैं जो उससे केवल उसके नाम की ही याचना करते हैं, क्योंकि इसी में जीव के जीवन की सार्थकता है :

-- *तू अथाहु अति बडो सुआमी क्रिपा सिंधु पूरन रतनागी ॥*
नानकु जाचकु हरि हरि नामु मांगै मसतकु आनि धरिओ प्रभ पागी ॥ (पन्ना १३०१)
-- *तूं निरगुन तूं सरगुनी ॥*

ईहा ऊहा तुम रखे ॥
गुर किरपा ते को लखे ॥ *(पन्ना २११)*

यह भेद भी गुरु-कृपा से कोई विरला ही पाने में समर्थ हो सकता है। वाहिगुरु रहमत करे तो पूर्ण गुरु की कृपा-दृष्टि से सब कुछ संभव हो सकता है।

कई कोटि पारब्रहम के दास ॥
तिन होवत आतम परगास ॥
कई कोटि तत के बेते ॥
सदा निहारहि एको नेत्रे ॥
कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥
अमर भए सद सद ही जीवहि ॥
कई कोटि नाम गुन गावहि ॥
आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥
अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥
नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥
(पन्ना २७६)

दसवीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में भी गुरु पातशाह ने उस पारब्रह्म की आलौकिक रचना को अनंत-बेअंत बयान किया है कि किस प्रकार करोड़ों ही परमेश्वर के प्यारे हर पल प्रभु-नाम का पान करते हुए उसी में एकाकार हो गए हैं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि इस जगत रचना में करोड़ों ही जीव उस पारब्रह्म परमेश्वर के अनन्य भक्त हैं, जिनकी आत्मा परमेश्वर के नूर से नूरी है।

करोड़ों ही जीव तत्ववेत्ता हैं अर्थात् प्रभु रूपी परम-तत्व के ज्ञाता हैं, जो कि अपने (ज्ञान रूपी) नेत्रों से सर्वत्र उस परमेश्वर को ही देखते हैं अर्थात् अपनी आंखों से हर क्षण उसी का दीदार करते हैं। करोड़ों ही मनुष्य प्रभु-नाम का आनंद अनुभव करते हैं। ऐसे भक्त नाम-अमृत पीकर, आवागमन से मुक्त होकर अमर हो जाते हैं। करोड़ों जीव प्रभु का गुणगान करते हैं, ईश्वर-भक्ति में लीन रहते हैं, जिसकी बदौलत उन्हें अडोल अवस्था की प्राप्ति हो जाती है और वे सहज सुख में समा जाते हैं। परमेश्वर अपने प्यारे भक्तों की हर पल श्वास-श्वास सार-संभाल करता है। गुरु पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में यही तथ्य उजागर करते हैं कि परमेश्वर जिनकी हर दम संभाल करता है वही जन उसके अत्यंत प्यारे हैं।

सम्पूर्ण असटपदी में गुरु साहिब ने उस परमेश्वर द्वारा सृजित रचना तथा उसकी विविध अवस्थाओं का वर्णन विस्तार से किया है। अंतिम पउड़ी में परम तत्व-वेत्ता, नाम अमृत पीकर सदा अडोल अवस्था में निवास करने वाले श्रेष्ठ भक्त-जनों का वर्णन किया गया है। ऐसे भक्तों की हर पल वह सार-संभाल करता है, क्योंकि ऐसे सेवक उसे बहुत प्यारे हैं, जिन्होंने सर्वत्र में उस मालिक के दीदार कर अविनाशी सुख प्राप्त कर लिया है।

तीसरे पातशाह ने भी श्वास-श्वास परमेश्वर का सिमरन करने वालों का ज़िक्र किया है कि वे श्वास-श्वास नाम-सिमरन करके अमर पद पा लेते हैं। प्रभु यह उच्चावस्था उसी को प्रदान करता है जिस पर वो अपनी कृपा करता है :

दमि दमि सदा सम्हालदा दंमु न बिरथा जाइ ॥
जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥
नानक इहु मरतबा तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ *(पन्ना ५५६)*

वस्तुत: सब कुछ उसकी कृपा और रज़ा (आदेश) में समाहित है। वही सब कुछ करने और करवाने में समर्थ है, दया का सागर है, रहमतों का भंडार है। उसका पारावार कोई नहीं पा सकता।

गुर सिखी बारीक है . . . २४

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

परमात्मा से प्रेम किस तरह करना है, कैसे परमात्मा-प्रेम को जीवन का आधार बनाकर आगे बढ़ना है, इसका अद्वितीय और सर्वोत्कृष्ट उदाहरण श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने संसार के सामने रखकर, गुरमति की धारा को एकदम स्पष्ट और मुखर कर दिया और श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी पर आसीन करके गुरमति सोच को स्थापित्व प्रदान कर दिया ताकि गुरसिक्ख सारे भ्रमों और संशयों से सदा के लिए मुक्त एवं विरत हो जाए। परमात्मा से प्रेम एक गुरसिक्ख कैसे करे, इसका सटीक व सारगर्भित वर्णन भाई गुरदास जी ने किया है :

पिरम पिआला साधसंग सबद सुरति अनहद लिव लाई।
धिआनी चंद चकोर गति अंम्रित द्रिसटि स्रिसिटि वरसाई।
घनहर चात्रिक मोर जिउ अनहद धुनि सुणि पाइल पाई।
चरण कवल मकरंद रसि सुख संपुट हुइ भवरु समाई।
सुख सागर विचि मीन होइ गुरमुखि चालि न खोज खुजाई।
अपिओपीअणु निझर झरण अजरु जरण न अलखु लखाई।
वीह इकीह उलंघि कै गुरसिख गुरमुखि सुख फलु पाई।
वाहिगुरू वडी वडिआई ॥ (वार ११:८)

परमात्मा में अभेद होकर जीवन का उद्देश्य पाने के लिए एक गुरसिक्ख अपनी सोच और चेतना को परमात्मा में इस प्रेममयी ढंग से जोड़ लेता है जैसे चकोर पक्षी चंद्रमा का ध्यान करता है। इस प्रेममयी ढंग से वह पूरी सृष्टि से स्वयं को जोड़ता है अर्थात् जैसे परमात्मा के प्रति उसके मन में प्यार प्रकट होता है वैसा ही प्रेम वह संसार के अन्य जीव-जंतुओं, वनस्पतियों आदि से करता है। इस प्रेम में ही उसे अनंत सुख प्राप्त होता है जिसके कारण वह विलक्षण हो जाता है, उसकी सामर्थ्य अथाह हो जाती है।

बाल अवस्था से ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सामने विकट परिस्थितियां आती गयीं, जिन्हें उन्होंने इतने धैर्य और साहस से निपटा जिससे एक अनमोल इतिहास रचा गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि परमात्मा को अन्य किसी भी विधि, युक्ति से नहीं, बस, प्रेम से ही पाया जा सकता है। उन्होंने उन तमाम प्रयासों का भरपूर खंडन किया जिनके माध्यम से परमात्मा तक पहुंचने और मुक्ति पाने का दावा किया जाता था और जो परंपराएं लंबे समय से चली आ रही थीं :

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै
बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि
लोक गयो परलोक गवाइओ ॥
बास कीओ बिखिआन सो बैठ कै
ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ॥

**E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३*

साचु कहों सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥
काहू लै पाहन पूज धरओ सिर
काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ॥
काहू लखिओ हरि अवाची दिसा माहि
काहू पछाह को सीसु निवाइओ ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु
कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ ॥
कूर क्रिआ उरझिओ सभही जग
स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥

(त्वप्रसादि सवैये)

सामान्य समझ वालों को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की ये पंक्तियां हैरान कर देती हैं जो उन्हें एक योद्धा, बलिदानी, खालसा का रूप देने वाले सिक्खों को 'सिंघ' बनाने वाले महापुरुष से आगे नहीं देख पाते। आंखें मूंदकर बगुले की तरह ध्यान लगाये रहने, तीर्थ-स्थानों का भ्रमण-स्नान करने, घर-परिवार त्यागकर वन में धूनी रमा लेने, पत्थरों को भगवान मानकर पूजा करने, हठ करने, दिशाओं का भ्रम पालने, वैराग्य धारण करने, मढ़ी-मसानों में पूजा करने आदि को उन्होंने व्यर्थ की क्रियाएं कहा। उन्होंने कहा कि संसार भर में लोग ऐसी क्रियाओं में लगे हुए हैं, किंतु ईश्वर का भेद नहीं जान पाये। जिन्होंने ईश्वर से प्रेम किया, बस, उन्हें ही ईश्वर मिल सका है। प्रेम के बिना ईश्वर की बात ही नहीं की जा सकती।

तुमरी क्रिआ कहा कोऊ कहै ॥
समझत बात उरझि मति रहै ॥
सूछम रूप न बरना जाई ॥
बिरध सरूपहि कहों बनाई ॥
तुमरी प्रेम भगति जब गहिहो ॥
छोरि कथा सभ ही तब कहि हो ॥

(बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि परमात्मा की महिमा का वर्णन किया ही नहीं जा सकता, बुद्धि उलझ जाती है। परमात्मा को जानने के लिए सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता है। परमात्मा के प्रेम में लीन होकर ही उसकी सूक्ष्मताओं को जाना जा सकता है। इस तरह गुरसिक्खों के लिए गुरु साहिब ने बड़ी ही स्पष्ट राह दिखाई कि अन्य किसी भी उपाय और भ्रम का त्याग कर परमात्मा से प्रेम करो और इस प्रेम से ही उसे जानो। सच्चा गुरसिक्ख वही है जिसने सतिगुरु की इस बात को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया है।

सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥
सदा पिरु निहचलु पाईऐ ना ओहु मरै न जाइ ॥
सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥

(पन्ना ६६)

गुरसिक्ख वही है जो सतिगुरु की आज्ञा में चलता है। सतिगुरु ने कहा कि प्रेम से ही परमात्मा को पाया जा सकता है। जो परमात्मा से प्रेम को आतुर रहता है, उसे विश्वास हो जाता है कि इससे जो फल (सुख) मिलने वाला है वह सद्‌जीवी है और परमात्मा के साथ सदा-सदा के लिए सम्बंध कायम रखने वाला है। इसे मानदंड बनाकर हर गुरसिक्ख को स्वयं तय करना चाहिए कि वह कितना सच्चा गुरसिक्ख है। गुरुद्वारा साहिब आकर माथा टेकने, शबद-कीर्तन सुनने, करने मात्र से ही 'पिरु निहचलु' नहीं मिल सकता। 'पिरु निहचलु' को पाने के लिए उससे प्रेम करना होगा, उसके प्रेम के योग्य बनना होगा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को परमात्मा ने दुर्बुद्धि के नाश और धर्म के प्रकाश के लिए आदेश देकर पृथ्वी-लोक पर भेजा था :

जाहि तहां तै धरमु चलाइ ॥

कबुधि करन ते लोक हटाइ ॥२९॥

(बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन काल में जितने भी कार्य किए वे इन्हीं दो श्रेणियों में रखे जा सकते हैं। अपने समस्त वंश का बलिदान, खालसा की साजना, महान ग्रंथों का सृजन, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी पर आसीन करना, ये सब धर्म चलाने के महान कार्यों की बानगी भर हैं। दूसरी ओर रण-क्षेत्र में पराक्रम लोगों को कुबुद्धि से हटाने का कर्म था जो अंतत: धर्म को चलाने में सहायक भी था। उनके शौर्य और पराक्रम ने ही धर्मांधता को मुंहतोड़ उत्तर देकर समय की धारा को मोड़ दिया और धर्म पर आसन्न एक बड़ा संकट टल गया। जिस प्रेम की राह पर लोगों को चलाने के लिए गुरु साहिब ने पृथ्वी-लोक पर जन्म लिया वह तभी संभव था जब राह की बाधाएं हटें। बाधाएं हटाने के लिए युद्ध ही एकमात्र विकल्प था। वास्तव में *"धरमु चलाइ"* और *"कबुधि करन ते लोक हटाइ"* एक समूचा समाधान था संसार के कल्याण का और एक परिपूर्ण धर्म-दर्शन का आधार था, जिस पर गुरु नानक साहिब से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक सभी गुरु साहिबान ने अमल करते हुए लोगों को परमात्मा की सच्ची राह दिखाई।

तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि ॥
सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रखी सारै संसारि ॥ *(पन्ना ८२१)*

कुबुद्धि का ताप सबसे विकट ताप होता है। इसे उतारने का महान कार्य गुरु साहिबान ने किया और एक निर्मल, शुद्ध, सहज पंथ दिया। इसने सदियों से स्थापित कूड़ मान्यताओं को धराशायी करते हुए उनके खोखलेपन को उजागर किया और बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी विशेष युक्ति के, मात्र प्रेम से परमात्मा को पाने का मार्ग सभी के लिए खोल दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह सिद्ध करके दिखाया कि परमात्मा का सम्बंध बहुत सुदृढ़ होता है, जिस पर विश्वास रखकर हर परिस्थिति को चुनौती दी जा सकती है। गुरु साहिब ने यह भी सिद्ध किया कि किस तरह सारे वंश को गंवाकर, सारे साथियों से विहीन होकर भी परमात्मा पर विश्वास को अडोल व अटल रखा जा सकता है। उन्होंने जफ़रनामा में परमात्मा की स्तुति निम्न शब्दों में की :

कमालि करामात कायम करीम
रजा बख़शो राजिक रहाको रहीम ॥१॥
अमां बख़श बख़शिंदह ओ दसतगीर
रज़ा बख़श रोज़ी दिहो दिल-पज़ीर ॥२॥

(जफ़रनामा)

गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा अथाह और बेमिसाल शक्तियों का स्वामी तथा सदा दयालु है जो सभी का पालनहार और सुख देने वाला है। वह मनमोहक है जो सभी का जीवन चलाता है, सभी को आश्रय देता है और सभी की भूलें भी क्षमा करता है।

सांसारिक रिश्तों से प्रेम और परमात्मा से प्रेम में यही अंतर है। विकट परिस्थितियों में परमात्मा से प्रेम यदि सच्चा है तो वह अडोल रहता है। उस प्रेम की चमक कभी धीमी नहीं पड़ती :

नउतन प्रीति सदा ठाकुर सिउ अनदिनु भगति सुहावी ॥
मुकति भए गुरि दरसु दिखाइआ जुगि जुगि भगति सुभावी ॥ *(पन्ना १२५५)*

परमात्मा से प्रेम की शोभा सदा के लिए होती है, इसीलिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा है कि परमात्मा से बड़ा सहायक कोई नहीं है।

चिह दुशमन कुनद मिहरबान असत दोसत
कि बखशिंदगी कारि बख़शिंदह ओसत ॥९८॥
(जफ़रमाना)

गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा का तो काम ही कृपा करना है। कोई उसका कुछ भी अहित नहीं कर सकता। हम परमात्मा से जितना प्रेम करते हैं परमात्मा उससे अधिक प्रेम हमसे करता है और सदैव हमारे प्रेम की लाज रखता है। इस विश्वास के साथ ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पंजाब से चलकर दक्षिण में नांदेड़ साहिब आये और बाबा बंदा सिंघ बहादर को एक बड़े मिशन के लिए तैयार करके पंजाब भेजा, ताकि *"कबुधि करन ते लोक हटाइ"* के काम को सम्पूर्णता प्रदान कर सकें। इसी के साथ ही उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी पर स्थापित करके *"धरमु चलाइ"* के लक्ष्य को भी सम्पन्न किया और सिक्ख कौम को भविष्य के लिए तैयार किया। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने जहां सिक्खों को पुन: एकजुट करके नये विश्वास का संचार किया वहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में कौम को एक चिरस्थायी मार्गदर्शक मिल गया, ताकि सिक्ख जब कभी भी भटकने की कगार पर हों तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में जाकर संशयों से उबर सकें और सच की राह पर दृढ़ रह सकें।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परमात्मा के आदेश का पालन करने हेतु जन्म लिया था। गुरसिक्ख यदि स्वयं को वास्तव में गुरसिक्ख समझता है, तो उसका जन्म गुरु साहिब के *"धरमु चलाइ"* और *"कबुधि करन ते लोक हटाइ"* के विचार का अनुसरण करने के लिए हुआ है। सच्चा गुरसिक्ख वह है जो धर्म पर चलता है, परमात्मा को प्रेम से पाने हेतु संकल्प रखता है। इसके साथ ही वह अपनी मति को स्थिर अर्थात् गुरु के अनुसार रखता है और उन क्रियाओं में नहीं उलझता जिन्हें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने *'कूर क्रिआ'* अर्थात् निरर्थक कर्म कहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में ज्ञान का अथाह और अमूल्य सागर उसे प्रभु-कृपा से प्राप्त है। गुर-सिक्ख जितना गुरबाणी से जुड़ेगा उतना ही धर्म के मर्म तक पहुंचने में सफल होगा।

आठ पहर निकटि करि जानै ॥
प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥
एकु नामु संतन आधारु ॥
होइ रहे सभ की पग छारु ॥ (पन्ना ३९२)

परमात्मा से प्रेम कैसे किया जाये और किसका प्रेम उसे स्वीकार है इसका सारगर्भित उत्तर उपरोक्त वचन में सहज ही मिल जाता है। गुरसिक्ख वो है जिसके मन में विनम्रता हो और वह अहंकार सहित समस्त विकारों से दूर हो जाये। गुरसिक्ख वह है जो प्रत्येक स्थिति को सहजता से स्वीकार करे और मन में कभी भी रोष न करे। ऐसा गुरसिक्ख जब परमात्मा को अपने जीवन का आधार बनाकर परमात्मा की शरण में जाता है तो परमात्मा उस पर कृपा करता है। नित्तनेमी बनना सतिगुरु के निकट रहना है। दीन-हीन होकर परमात्मा के दास की तरह जीवन जीना परमात्मा के प्रेम को पाने का प्रयास है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : ८

स. प्रताप सिंघ शंकर

*-स. रूप सिंघ**

भारत सरकार के भूतपूर्व विदेश मंत्री स. सवरन सिंघ के माननीय पिता स. प्रताप सिंघ शंकर विद्या-प्रेमी, निष्काम पंथ-सेवक, शीतल स्वभाव के मालिक, अनुशासनप्रिय व सफल प्रबंधक थे। आप जी का जन्म स. गंडा सिंघ के घर गांव शंकर, ज़िला जलंधर में हुआ। इनके दो भाई-- स. हरनाम सिंघ एवं स. रूप सिंघ थे। दसवीं की शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत ये देश-सेवा हेतु सेना में भर्ती हो गए। सर्वप्रथम इन्होंने बर्मा में फौजी सेवा की और फिर लेंसर्ज़ आर्मी कोर में सेवा की। इनका विवाह बीबी बसंत कौर के साथ पुआदड़ी गांव में हुआ। इनके तीन बच्चे-- बीबी करतार कौर, स. नरिंदर सिंघ तथा स. सवरन सिंघ थे। १९२१ ई. में बतौर जमांदार इन्होंने खुद सेवा-निवृत्ति प्राप्त की, ताकि अपने परिवार का पालन-पोषण एवं विद्या का प्रबंध अच्छे तरीके से कर सकें। आप जी के सेवा-निवृत्ति लेने के समय पंजाब में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर पूरे यौवन पर चल रही थी। फौजी सेवा छोड़कर अकाल के पुजारी स. प्रताप सिंघ शंकर अकाली दल में निष्काम सेवक भर्ती हो गए। अकाली दल द्वारा ही स. प्रताप सिंघ शंकर पहली बार १९२४ ई. में एम. एल. सी. बने।

दूसरी बार एम. एल. सी. आप १९२७ ई. में चुने गए, किंतु १९२७ ई. में ही अकाली दल का हुक्म मानकर पार्टी के सभी सदस्यों ने त्याग-पत्र दे दिए। अपने समय के समाज-सुधारक व विद्या-प्रेमी होने के कारण इनका बहुत मान-सम्मान था। सरदार बहादुर स. नरिंदर सिंघ जी के साथ मिलकर इन्होंने गांव में पहला स्कूल प्रारंभ किया।

२६ अप्रैल, १९३० ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के नये चुनाव के उपरांत जनरल एकत्रता मास्टर तारा सिंघ जी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें १४ सदस्य वोटों द्वारा नामज़द किए गए, जिनमें से स. प्रताप सिंघ शंकर का नाम भी शामिल था। इस तरह स. प्रताप सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य बन गए। ९ जून, १९३० ई. को ओहदेदारों के चुनाव के समय स. प्रताप सिंघ कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए।

२७ अप्रैल, १९३३ ई. को बाबा खड़क सिंघ जी ने कुछ कारणों से अध्यक्ष-पद से त्याग-पत्र दे दिया। काफी बहस-मुबाहसा के बाद प्रवान होने पर उनकी जगह पर स. प्रताप सिंघ अध्यक्ष चुने गए।

१७ जून, १९३३ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की जनरल एकत्रता के समय स. गोपाल सिंघ कौमी अध्यक्ष चुने गए। १८ जून, १९३३ ई. को स. गोपाल सिंघ कौमी की अध्यक्षता में दोबारा मीटिंग हुई, जिसमें उन्होंने अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया। कौमी जी की जगह स. प्रताप सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी चुने गए। जनरल एकत्रता की शेष कार्यवाही स. प्रताप सिघ ने चलायी। इस समय प्रस्ताव पारित किया गया कि ऐसा कोई भी संविधान, जो सांप्रदायिकता पर आधारित हो, सिक्ख कौम प्रवान नहीं करेगी तथा पंथ ऐसी राज्य-प्रणाली, जो सांप्रदायिकता के आधार पर

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

हो, के आगे सर नहीं झुकाएगा। दूसरे महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव में कूकों द्वारा छापे गए एक ट्रेक्ट को ज़ब्त करने का फैसला हुआ।

स. प्रताप सिंघ की अध्यक्षता में दूसरा समारोह २९ अक्तूबर, १९३३ ई को हुआ, जिसमें ११८ सदस्य हाज़िर थे। उत्तर प्रदेश में सिक्खी-प्रचार करने के बारे में विचारें हुईं तथा कश्मीर में हुए फसाद की विरोधता भी की गयी। इसी दिन कार्यकारिणी का चुनाव किया गया और स. गोपाल सिंघ कौमी को कार्यकारिणी सदस्य चुना गया। इस मीटिंग के समय ही ज़िला-क्रम अनुसार कमेटियां एवं गुरुद्वारा पड़तालिया कमीशन बनाने का फैसला हुआ।

स. प्रताप सिंघ शंकर की अध्यक्षता में ही सिक्ख रहित मर्यादा निर्धारित करने के लिए विशेष जनरल समारोह ३० दिसंबर, १९३३ ई को हुआ, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के ९१ सदस्यों के अलावा अलग-अलग गुरुद्वारा कमेटियों, सिंघ-सभाओं, अकाली जत्थों के सदस्य, प्रचारक, अख़बारों के संपादक एवं सिक्ख रहु-रीति कमेटी के सदस्यों को मिलाकर १७० सदस्य हाज़िर हुए। इसमें सिक्ख रहित मर्यादा का मसौदा प्रो. तेजा सिंघ कनवीनर ने पेश किया, जिस पर दो दिन विचार-चर्चा होती रही।

इनके अध्यक्षता-काल में शिरोमणि अकाली दल की भूमिका भी प्रशंसनीय रही। स. प्रताप सिंघ १८ जून, १९३३ ई से निरंतर १३ जून, १९३६ ई तक अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सम्मानजनक पद पर विराजमान रहे। १३ जून, १९३६ ई से ९ मार्च, १९४६ ई तक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के उपाध्यक्ष के रूप में सेवा निभाई। ९ मार्च, १९४६ ई को स. मोहन सिंघ की अध्यक्षता में हुई मीटिंग के समय स. प्रताप सिंघ ने उपाध्यक्ष के पद से त्याग-पत्र दे दिया तथा इनकी जगह गांव कुकड़ के स. बसंत सिंघ उपाध्यक्ष चुने गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर में स. प्रताप सिंघ शंकर की अध्यक्षता एवं उपाध्यक्षता के समय बहुत महत्त्वपूर्ण फैसले व कार्य हुए; उत्तर प्रदेश में सिक्ख धर्म के प्रचार, प्रसार व सिक्ख रहित मर्यादा के मसौदे पर विचार करने के लिए विशेष जनरल इजलास, कोई व्यक्ति विशेष पंथ में तानाशाह नहीं हो सकता, विद्यार्थियों को वज़ीफे देने सम्बंधी, सरकार बंबई पर कृपाण की पाबंदी के बारे में रोष, स. सेवा सिंघ ठीकरीवाला के अकाल चलाना पर अफ़सोस, मास्टर तारा सिंघ जी का सियासत से रखे एकांतवास से वापसी पर स्वागती-प्रस्ताव, तख़्त श्री हज़ूर साहिब के प्रबंधकों को विनती, अध्यक्ष साहिब को पूरे अधिकार, श्री अकाल तख़्त साहिब को सिंघ सभा अफ्रीका की जायदाद, स. तेजा सिंघ समुंदरी की याद में समुंदरी हॉल बनाने, गुरबाणी की शुद्ध छपाई, धर्म-प्रचारक रखने, नये स्कूल-कॉलेज खोलने, सिक्ख राजा पतित नहीं हो सकता, आर्थिक, भाईचारक तथा शैक्षणिक उन्नति के बारे में और भाई रणधीर सिंघ के बारे में प्रस्ताव पारित किया गया तथा मास्टर तारा सिंघ जी की सेवाओं की प्रशंसा की गयी आदि सैद्धांतिक, ऐतिहासिक महत्ता, मर्यादा व परंपरा से सम्बंधित फैसले हुए।

२८ अक्तूबर, १९३९ ई. को जनरल एकत्रता के समय स. प्रताप सिंघ शंकर को सदस्य नामज़द किया गया। ५ मार्च, १९४४ ई. को हुई जनरल एकत्रता की अध्यक्षता स. प्रताप सिंघ शंकर ने की। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अप्रैल, १९४४ ई. में हुए जनरल इजलास की अध्यक्षता उन्होंने बतौर उपाध्यक्ष की, जिसमें मास्टर तारा सिंघ जी को दोबारा पंथक सेवा संभालने की प्रेरणा का प्रस्ताव पारित किया गया।

कहा जाता है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष की सेवा के समय स. प्रताप सिंघ शंकर अपना परशादा (भोजन) भी घर से ही लेकर आते थे। स. सवरन सिंघ की चार बेटियां ही थीं, जिनमें से डॉ. परमजीत कौर गुड़गांव में सेवा कर रही हैं। सरदार साहिब की याद में शंकर गांव में अस्पताल चल रहा है। केंद्रीय सिक्ख अजायबघर (संग्रहालय), श्री अमृतसर में इनकी तसवीर सुशोभित है।

कविताएं

इंसान उसी को कहते हैं

*-सुश्री नीलम ज्योति**

जो खुदगर्जी से ऊपर उठ जाए, इंसान उसी को कहते हैं।
पराया दर्द जो अपना पाए, इंसान उसी को कहते हैं।
कोई तन से दुखी जग में, कोई मन से परेशां है।
किसी के पास न रोटी, कोई ज्यादा से परेशां है।
समता जीवन में अपनाए, महान उसी को कहते हैं।
जो खुदगर्जी से ऊपर उठ जाए, इंसान उसी को कहते हैं।
कभी सम्राट है मानव, कभी मानव निर्धन है।
कभी सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।
दुखों से जो न घबराए, बलवान उसी को कहते हैं।
जो खुदगर्जी से ऊपर उठ जाए, इंसान उसी को कहते हैं।
उलझन है इक सारी दुनिया, कहीं धोखा, कहीं ठोकर।
कोई हंसकर जीता है, कोई जीता है रो-रोकर।
जो कष्टों में भी मुस्काए, मुसकान उसी को कहते हैं।
जो खुदगर्जी से ऊपर उठ जाए, इंसान उसी को कहते हैं।
किसी की मंज़िल दुष्कर्मों में, किसी की काम-कांचन में।
यूं श्वासों की पूंजी चुक जाती, मुक्ति न मिलती जीवन में।
नश्वर में ही जो खो जाए, शैतान उसी को कहते हैं।
जो खुदगर्जी से ऊपर उठ जाए, इंसान उसी को कहते हैं।

*१५४, पत्ता महल्ला, बागपत गेट, मेरठ सिटी-२५०००२; मो. ९९१७०-५३२११

अवर्णनीय सुखद क्षण

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

प्राण प्यास से व्याकुल हों और जल होठों को पार करे।
दम घुटने पर नासापुट में, शुद्ध हवा संचार करे।
पौष मास की ठिठुरन हो और सूरज का ताप मिले।
जेठ की लू में तपते तन पर, शीतल झोंका आन लगे।
बेहद टूटन हो शरीर में और बदन अंगड़ाई ले।
लज्जा-बाधा तोड़ के मुख, लम्बी-चौड़ी जमहाई ले।
ढूंढ-ढूंढ कर हार चुके, भटके राही को राह दिखे।
तेज धूप से पस्त पथिक को, पेड़ की ठंडी छांव मिले।
सूखे से हों खेत सूखते, काले बदरा आन दिखें।
श्रम से सींचे खेतों में, फसल की बाली फूट पड़े।
हों परदेस में बेगाने और कोई जिगरी यार मिले।
जिसकी यादें बहुत सतायें, वही गले से आन लगे।
जंग जब्र से जारी हो और कोई मदद का हाथ उठे।
भूख से मरते प्राणी को, कोई भोजन का दान करे।
इन सबमें जो छिपे हुए सुख, वर्णन उनका शब्दातीत।
वाणी कैसे गा सकती है, भावजगत के अनुभव-गीत?

*४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो. : ०९४११६०७६७२

ख़बरनामा

श्री अकाल तख़्त साहिब की वेबसाइट जारी

श्री अमृतसर : १ अप्रैल : देश-विदेश में बैठी सिक्ख संगत की सुविधा के लिए भक्ति व शक्ति के प्रतीक श्री अकाल तख़्त साहिब के इतिहास तथा अन्य जानकारी के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब की वेबसाइट **www.akaltakhatsahib.com** श्री अकाल तख़्त साहिब के सचिवालय से सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने जारी की।

श्री अकाल तख़्त साहिब सचिवालय में पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि देश-विदेश में बैठी सिक्ख संगत की मांग को मुख्य रखते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के सचिवालय को इंटरनेट के साथ जोड़ दिया गया है। वेबसाइट के मुख्य पन्ने पर श्री हरिमंदर साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब के अलावा तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब (बिहार), तख़्त श्री केसगढ़ साहिब (श्री अनंदपुर साहिब), तख़्त श्री हजूर अबिचल नगर साहिब (नांदेड़, महाराष्ट्र) एवं तख़्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो (बठिंडा) की तसवीरें और संक्षिप्त जानकारी मिलेगी। इसके अतिरिक्त श्री अकाल तख़्त साहिब के स्थापना-काल से लेकर अब तक के श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार साहिबान का विवरण, श्री अकाल तख़्त साहिब से जारी हुए हुकमनामे, आदेश, संदेश तथा जारी सम्मान के बारे में संपूर्ण जानकारी उपलब्ध होगी। उन्होंने इस शुभ कार्य के लिए सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ तथा समूची सिक्ख कौम को मुबारकबाद दी।

सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि स. गुरजीत सिंघ ए. एन. जी, आई. टी. सल्ऊशन, श्री अमृतसर द्वारा काफी मेहनत करके वेबसाइट तैयार की गई है। उन्होंने कहा कि अगर किसी गुरसिक्ख ने कोई जानकारी प्राप्त करनी हो, कोई शिकायत करनी हो, फीड-बैक (सुझाव) फार्म के जरिए अपनी ई-मेल आई डी. भरकर भी प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा नानकशाही केलंडर भी इस वेबसाइट पर उपलब्ध होगा, जिससे गुरुपर्वों, ऐतिहासिक दिवसों तथा अन्य त्योहारों के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमुख सिंघ, मुख्य ग्रंथी, श्री अकाल तख़्त साहिब, स. भुपिंदर सिंघ असंध, सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, सचिव स. रूप सिंघ, स. परमजीत सिंघ उप सचिव, स. प्रताप सिंघ, मैनेजर, श्री दरबार साहिब के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

भाई गुरमेज सिंघ ने किया श्री गुरु ग्रंथ साहिब का ब्रेल लिप्यंतरण

श्री अमृतसर : ४ अप्रैल : श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के भूतपूर्व हजूरी रागी भाई गुरमेज सिंघ ने कड़ी मेहनत करके दृष्टिविहीन प्राणियों के लिए गुरबाणी का पाठ करने के लिए

ब्रेल लिपि में लिप्यंतरण १८ पोथियों में किया है। इस सम्बंधी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गुरुद्वारा मंजी साहिब, दीवान हाल में शुक्राना समागम किया गया, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार से सिफारिश की है कि वे भाई गुरमेज सिंघ को कौमी सम्मान देकर सम्मानित करें।

इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने संगत के विशाल इकट्‌ठ को संबोधित करते हुए कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के कल्याणकारी संदेश का विश्व भर में प्रचार-प्रसार करने हेतु गुरबाणी के अनुवाद, टीके, शब्दार्थ आदि अलग-अलग लिपियों में किए गए थे, किंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी दृष्टिविहीन लोग नहीं पढ़ सकते थे। उनकी सुविधा के लिए भाई गुरमेज सिंघ, भूतपूर्व हजूरी रागी, श्री हरिमंदर साहिब ने सख़्त मेहनत तथा सब्र-संतोष से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समूची बाणी को ब्रेल लिपि में लिप्यतंरण करने का ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक कार्य किया है। उन्होंने कहा कि जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिफारिश की है कि भाई गुरमेज सिंघ को 'कौमी सम्मान' से सम्मानित किया जाए। उन्होंने कहा कि पांच सिंघ साहिबान की मीटिंग में विचार करके भाई गुरमेज सिंघ को श्री अकाल तख़्त साहिब से सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि श्री अकाल तख़्त साहिब के पीछे स्थित गुरुद्वारा शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ जी के पास १३ नंबर कमरे में इस पोथियों को सुशोभित किया जा रहा है। गुरबाणी को प्यार करने वाला कोई भी यहां आकर पाठ कर सकता है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने संगत को संबोधित करते हुए कहा कि भाई गुरमेज सिंघ ने दृष्टिविहीन प्राणियों के लिए विशेष यत्न करके जो कार्य किया है, वो ऐतिहासिक है। इस ऐतिहासिक कार्य के बदले मैं भाई गुरमेज सिंघ तथा समूचे सिक्ख जगत को मुबारकबाद देता हूं। उन्होंने कहा कि इनके इस उद्यम से दृष्टिविहीन लोग भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी पढ़ सकते हैं। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी भाई गुरमेज सिंघ का हर पक्ष से सहयोग करेगी। उन्होंने भाई गुरमेज सिंघ से कहा कि वे सिक्ख संगत की भावनायों के अनुसार श्री हरिमंदर साहिब में कीर्तन की सेवा अवश्य किया करें।

सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ, मुख्य ग्रंथी, श्री हरिमंदर साहिब तथा भाई साहिब भाई पिंदरपाल सिंघ ने भी संगत के सामने अपने विचार पेश किए। भाई गुरमेज सिंघ ने ब्रेल लिपि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ तथा जत्थेदार अवतार सिंघ ने भाई गुरमेज सिंघ को सिरोपाउ बख़्शिश किया। इसके उपरांत अलग-अलग सभा-सोसायटियों एवं दृष्टिविहीन लोगों से संबंधित संस्थाओं ने भी भाई गुरमेज सिंघ को सिरोपाउ भेंट किए। सारे समागम में मंच की सेवा स. रूप सिंघ सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा निभाई गई। इस शुक्राना समागम में भारी संख्या में संगत उपस्थित थी।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालिय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०५-२०१३